निस्संदेह! जो मुसल्मान लोगों में से विश्वासी है, या यहूदि, या अग्नि आराधक, या ईसाई - चाहे (मानव से) जो भी हो; वह अल्लाह और अंतिम दिन पर विश्वास करता है और कुरआन का भाव को अनुगत करता है, तो उसको भय हाने या उन के बारे में दुखी हाने का मौका नहीं आयेगा।

मानव...! क्या तू ने खुद को पहचाना है।

(कुरआन की आत्मा नामक ग्रन्थ का भूमिका है यह।)

लेखक :
मुहयद्दीन मुहम्मद इरुम्बुळि

मुद्रक :
प्रवासि प्रिन्टस, मलप्पुरम, केरल
0483-2735696

प्रकाशक :
Straight path Qur'an Education
P.B. No: 58, Manjeri - 676 121, Malappuram, Kerala, India
Website: www.straightpathonline.com, Email: mail@straightpathonline.com

COPYRIGHT NOT RESERVED

अंग्रेजी में लिखा हुआ कुरआन का व्याख्या ग्रन्थ, **'सोल ओफ कुरआन'** (SOUL OF THE QUR'AN); अरबी ग्रन्थ **'अद्दिकर'** (ADHIKR); मलयालम ग्रन्थ, **'कुरआन की आत्मा'** आदी के लिए इस पते पर संपर्क कीजिए:

T. Abdul shukoor, Inthizar Home, Panayi - Muttippalam Road, P.O.Anakkayam, Malappuram, Kerala. 676509 (PIN) Phone :0483-2848064, 09388227348

Straightpath Quran Education

PB.NO: 58, Manjeri - 676 121; Malappuram, Kerala-India.
Email: mail@straightpathonline.com **Website: www.straightpathonline.com**

प्रिय भाई,

वेद मिठाने से दुनिया मिठेगी। जैसे सब मानवों का आत्मा एक है, वैसे ग्रन्थों का आत्मा भी एक है। आत्मा की भोजन, कपडे और दृष्टी है वह। स्वर्ग से समय समय पर मानवों का जरूरी नियम निर्देशनवाला एक ही वेद प्रस्तुत किया गया है। उसका शरीर विभिन्न भाषाएँ मैं हो तो आत्मा (भाव) एक ही है। यानी कि भगवत् गीता का शरीर संस्कृत; और तौरात का शरीर हीब्रू; और इंजील का शरीर अरमाई; और दावीद के संकीर्तन सबूर का शरीर ग्रीक; और कुरआन का शरीर अरबी में हो तो, सबका आत्मा (अद्दिक्र) एक ही है। सारे वेद ग्रन्थ बार बार पारयण (वाचन) करने केलिए है, इसलिए वे सब कुरआन ही है।

बदकिस्मती से, दुनिया भर के सारे विभाग वेद की आत्मा की बिलकुल परवाह न करके केवल उसके शरीर की परवाह करनेवाले बन गये है। वे ज़िन्दगी को विभिन्न आचार अनुष्ठानों में बाँधकर अपने अपने अनुष्ठानों में गर्व करते है और दुसरों पर वे लाद देने की कोशिश करते है, जो आज संसार में होनेवाले सारे संघर्षों और आतंकवादों के कारण के रूप में देख सकते है।

पूरे दुनियावालों को आज के ज़माने में अवश्यक निर्दोशों मिले हुए कुरआन का भाव, जाति-धर्म भेद के बिना सबको परिचय कराने की उद्देश्य से चलते हुए एक संरंभ है **'स्टैट पात कुरआन एडुकेषन'**। इसके लिए रचयित किया गया व्याख्या ग्रन्द है कुरआन की आत्मा नामक कुरआन का भाव। वह श्रद्दापूर्वक पढके आज दुनिया में होनेवाले रक्तपात, आतंगवाद आदि उन्मूलन करके मानव एकता बनने के लीए और प्रपंच संतुलन में रखने के लिए उपयोग करने को अपेक्षा करता है। कुरआन की आत्मा, सब लोगों को **नाथ के चिट्ठी** है। इसकी मूल ग्रन्थ, मलयालम भाषा में तीन भागों में लभ्य है। यह संदेश पूरे लोगों तक पहूंचाने के लिए, अन्य भाषा में अनुवाद करने के लिए और पत्रिकायें मुद्रण करने के लिए इस दुनिया में जाति-धर्म भेद के बिना किसी को भी अवकाश है। ऐसा करके आप को भी इस संरंभ में भागीदार हो सकते है। **यह ग्रन्थ, रचना-स्वत्व से सुरक्षित नहीं (Copyright NOT reserved)।** यह बात खास याद कराता है। यह संदेश पूरे लोगों तक पहूंचाने के लिए खुदा हमें आशिर्वाद दें, मदद करें।

परम करुणामय और करुणा सागर अल्लाह के नाम से

मानव...! क्या तू ने खुद को पहचाना है?

'मैं', 'तू' आदी, दिखनेवाला इस शरीर को नही कहते, बल्कि आत्मा (नफ्ज़) को है। उसका चलने का वाहन है शरीर। माता और पिता के इन्द्रियों की बूँदों के अंशों को मिला जुलाकर, सर्व सृष्टिकर्ता से विकसित करके बनाया मिट्टी का घडा है वह। मानवों के आदिम (आदम) की सृष्टि करते वक्त, स्रष्टा ने एक ही आत्मा से अंतिम दिन तक के सारे के सारे मानवों का (आत्माओं की) सृष्टि स्वर्ग में की। अन-निसाअ:1 व्याख्या देखिए। अअराफः 172-173- में कहे अनुसार, आदम की सन्तानों की रीढ़ की हड्डियों से, अंतिम दिन तक के उसकी सारी परंपराओं को बाहर निकालकर उनमें हर एक से स्रष्टा ने पूछाः "मैं हूँ ना तुम्हारे हकदार नाथ"? वे सब बोलेः "हाँ नाथ, हम इसके साक्षी है"। यानी कि मनुष्यों के लिए सब नियम देनेवाले एकमात्र हकदार उनके नाथ, स्रष्टा ही है। यहि इस करार को सभी मानवों ने मान लिया। इस करार के बाद सबको मरवा दिया और आदम की रीढ़ में फिर से लौटा दिया।

अश-शंसः 1-6 सूक्तों में छह बातों को (सूरज और उसका उज्वल प्रकाश है, उसका पीछा करनेवाला चाँद और सुन्दर (शीतल) शोभायुक्त प्रकाश है, दिन का प्रकाशपूर्ण प्रत्यक्षीकरण है, रात का अंधरा छा जाना, छत जैसे अलंकृत आकाश है, उष्ट्रपक्षी के अण्डों जैसे आकार से रूपायित धरती है) कसम से 7-10 सूक्तों में अल्लाह बताते हैः आत्मा को उन्होंने संतुलित करके प्रत्येक आत्मा को अपने दुर्मार्ग और सन्मार्ग प्रदान किया है, तो जिसने अपनी को शुद्द किया है (पहचाना है) वह कामयाब निकला और जिसने उसको मलिन किया (नहीं पहचाना) वह पराजित भी हुआ। अर्थात् जिसको 'मैं' कहते है, वह आत्मा है। वह स्रष्टा की रूह का अंश होने की पहचान करके, 'मैं' नही, सिर्फ 'वही' है, इस बोध में जो रहता है वह विजयी हुआ। केवल वे ही स्रष्टा से किया गया करार का पालन करके जीनेवाले।

अर-रहमानः 1-4 सूक्तों में 'परम दयावान ने मानव को कुरआन सिखाया, मानव को बनाया, उसे उसका बयान भी सिखाया'- ऐसा वताया है। यहाँ पर 'कुरआन सिखाया'-जो पहले कहा गया उसका मकसद, 'स्वर्ग में सभी मानवों को दुर्मार्ग और सन्मार्ग क्या है' यह अर्थवाले कुरआन की आत्मा सिखायी है। फिर ही मनुष्य शरीर की सृष्टि धरती पर होती है।

बाद में उसे कुरआन की व्याख्या भी सिखायी। 'नमक हलाल' या 'नमक हराम' - इन में किसी एक राह को चुनकर जीने की आज़ादी मनुष्य को दी गयी है। यह इनसानः 3, बलद 10 आदि सूक्तों में बताया गया है।

शरीरः

हिजरः 26, अर-रहमानः 14 आदि सूक्तों में कहे अनुसार, मिलने पर आवाज़ होनेवाली, चिपकनेवाली, बदबूवाली काली मिटी से कुम्हार बर्तन बनाने की तरह स्रष्टा ने आदम का शरीर स्वर्ग में बनाया है। फिर उसे रूप दिया। हिजर 29, स्वाद 72 आदि सूक्तों में कहे अनुसार स्रष्टा ने रूह को (जान + आत्मा) उसमें प्रवेशित कर दिया। अन-निसाअः1 में, 'उससे उसका जोडी बना दी' कहने के बदले 'उससे उसकी जोडी बनायी' कहने से यह समझ सकते है कि आदम की आत्मा से उसकी जोडी हव्वा की सृष्टि की । पुरुष और स्त्री की आत्मा को और स्त्री के शरीर को स्त्रीलिंग में, तथा पुरुष का शरीर को पुल्लिंग में कुरआन शरीफ में प्रयुक्त किया है। ईसा के जैसे हव्वा के भी शरीर एक ही वचन 'हा`जा' है। बिन पिता और माता के अल्लाह की सृष्टि के लिए उदाहरण है आदम व हव्वा। बिना पिता की स्रृष्टि का उदाहरण है ईसा। ईसा ने माता मरयम के प्रसव द्वारा जनम हुआ तो, हव्वा बिना माता-पिता जनम हुई। पिता और माता के आलिंगन से सृष्टि होने के मिसाल है हम सब।

हिजरः27 में कहे अनुसार इन्सानों की सृष्टि के पहले, अग्नि ज्वालाओं से शरीर बने 'जिन्न' (असुर) ही भूमि में अल्लाह के प्रतिनिधि रहे। वे अपने प्रातिनिधित्व का पालन ठीक से न कर धरती पर सर्वनाश बोते बदमाश निकले तो इबलीस के नेतृत्व में देवदूतों ने उनको पूरी तरह से नष्ट कर दिया। जिन्न के वर्ग का इबलीस उस समय निषेधी नही बने थे। बाद में ही धरती पर मान प्रतिनिधि के रूप में मानवों की सृष्टि स्वर्ग में होती है। सर्व स्रष्टा का सारी की चीज़ें मानव के अधीन कर दी गयी - यों जासियाः 13 सूक्त में कहा गया है, उसका मकसद यह है कि निष्पक्षवान सर्व स्रष्टा का शासन रीति त्रिकाल ज्ञान रूपी कुरआन शरीफ का भाव मानव को दिया है। प्रपंच का सोफ्ट वेयर सिखाने के द्वारा प्रपंच की सारी चीजों का अधीशत्व अन्य सृष्टियों को न देकर भूमि में उसके प्रतिनिधि निश्चित किये हुए विवेक गुण वाले मानव को दिया गया है - यही अर्थ है। प्रपंच उसके सन्तुलन बनाये रखने का तराजू और अमानत रूपी कुरआन शरीफ का भाव - प्रपंच का सोफ्टवेयर - सिखाये जाने के कारण मानव अन्य सृष्टियों से श्रेष्ठ बन पडे है।

स्रष्टा की रूह से मानव में आवाहन करते वक्त 'जिन्न' वर्ग के ईबलीस आदी देवदूतों

की सभा में आदम को सुजूद (साष्टांग प्रणाम) करने को अल्लाह ने आदेश दिया। प्रपंच अपने सन्तुलन बनाये रखने का तराजू और अमानत रूपी कुरआन शरीफ का भाव वहन करने के कारण देवदूत, जिन्न और सब के सब सृष्टि मनुष्य की मदद करके उसके अधीन में रहना है और यह है उनके सामने सुजूद करने केलिए आदेश देने का मकसद। इबलीस को छोडकर बाकी सब ने सुजूद किया। अग्नि से जन्मा मैं, मिट्टी से जन्मे आदम के सामने को सुजूद क्यों करूँ? ऐसा घमण्ड किया वह। अभिशप्त, करुणा से रहित वह स्वर्ग से निकाल दिया गया। उसी समय से जिन्न वर्ग का इबलीस 'पिशाच' बन गया। सब का नियंत्रण तेरे हाथों में होने से तेरे उद्देश्य से ही मैं ने सुजूद नही किया - यों पूछकर वह अल्लाह के मार्ग रूपी कुरआन शरीक के भाव से मानव को गुमराह करने का अवसर उसे देने की अल्लाह से मांग की। स्वादः 78-81 के अनुसार निश्चित एक दिन तक अल्लाह ने उसे अवसर दिया और सारी शक्तियाँ भी दी। अन-निसाअः 116-121 व्याख्या देखिए। पिशाच ने कहा तब तू ने किसके मामले में मुझे दुर्मार्गियों के बीच डाला, मैं उन्ही के लिए तेरे सही रास्ते पर चलता ही रहूँगा । फिर मैं उनके आगे पीछे, दाये बायें बगल से आ जाया करुँगा। उनमें ज्यादातर लोग नमकहलाल के रूप में तू नही ढूँढ़ पायेंगा।

अल्लाह ने बतायाः ऐं आदम। तू और अपनी संगिनी तो इस स्वर्ग में ठहर जाओ। तुम दोनों अपनी इच्छानुसार स्वर्ग के फल काफी खा जाओ। मगर यह जो पेड है, इस के पास न जाना । ऐसा करने पर तुम दोनों अत्यचारियों के बीच पड जाओगे। तब पिशाच ने उन्हें ठगा दिया और कहाः तुम दोनों को देवदूत न बनने या नित्य जीवन प्राप्त न करने को छोडकर तुम्हारे नाथ ने इस पेड को छूने से तुम्हें नही रोका। उन दोनों से उन्होंने कसम खाकर कहाः निश्चय मैं तुम्हारे शुभचिंतकों में हूँ। अअराफः 19-21 व्याख्या देखिए। इस प्रकार मोहित करके उन दोनों को उसने अपने वश में कर दिया। उस पेड के फल को रूचते ही उन्हें अपने अगोचर गुप्त स्थान नज़र आने लगे। वे स्वर्ग के पेड के पत्तों से गुप्त स्थानों को ढकने लगे। स्वर्ग में निरोधित वह फल यौन आस्वादन समझना चाहिए। तब उन दोनों को नाथ ने पुकारके पूछाः 'क्या मैं ने तुम दोनों को इस पेड से रोका नहीं था अैर तुमसे कहा नहीं था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है'। अअराफः 22 व्याख्या देखिए। बखराः 37 के अनुसार मन में अफसोस किये आदम को पछतावा करके लौटने के लफ़्ज़ दिये गये। उने दोनों ने दुआ की - 'हमारे नाथ, हमने अपने आप से अत्याचार किया। हमें माफ नहीं कर देते तो, आपकी करुणा की वर्षा हम पर नही करते तो हम खोये हुओं में मिल जायेंगे'।

अअराफः 23 व्याख्या देखिए। उनका पछतावा अल्लाह ने स्वीकारा, वे अवश्य पछतावा स्वीकारनेवाले और करुणा सागर है।

धरती में नियुक्त होने को सृजन किये गये मानवों को धरती पर जीवन और पिशाच के धोखेबाजी की उपमा के प्रतीक बना कर दिखा के उनको धरती में भेज दिया। अल्लाह बोले- एक वर्ग दूसरे वर्ग का दुशमन बनके तुम सब यहाँ से उतर जाओ। तुम्हे निश्चित समय तक धरती पर आराम की जगह (घर) और जीवनोपयोगी चीज़ें हैं। अअराफः 24 व्याख्या देखिए। कपट विश्वास विश्वासी लोगों के दुश्मन बन जाते है - यों मुनाफिखुनः 4 में, और मनुष्यों और जिन्नों में से शैतानों को पैगम्बरों और विश्वासियों का दुश्मन बना दिया है -यों अनआमः 112 में भी बताया गया है। बखरा 38 के अनुसार अल्लाह ने कहाः तुम सब यहाँ से (स्वर्ग से) निकल जाओ। अब तुम्हें मुझ से मार्ग निर्देशन मिल जायेंगे, तब कौन मेरे मार्ग का अनुगत करता है उसको भय होने या उनपर दुखी होने का मौका नहीं आयेगा। आदम और हव्वा को शरीर के साथ आदम संततियों को सब आदम की पीठ पर रखकर हवा के ताल-लय से धरती पर उतार दिये। आदम भारत के अंश 'सिलोण' का आदम पहाड में और हव्वा अरेबिया में उतारके, मक्का के 'अरफा' में आपस में मिल गये। बखराः 164 व्याख्या देखिए।

मनुष्य शरीर की सृष्टिः

इनसानः1 में अल्लाह पूछते हैः मानव में वह याद न करनेवाला एक असमय काल नहीं बीत गया हो; यानी कि आदम की सृष्टि के वक्त ही सृजन किये गये अंतिम दिन तक के मानवों को, किस समय, किस देश में, किस गोत्र में, किस वंश में, किस माता-पिता में, किस लिंग में लाना है-यह स्रष्टा ही तय करते है। आदिम पिता और माता ने मिट्टी से-मिट्टी के अंश भरे-खादय पदार्थो को खाया, उसमें से खून निकला, उसके सार से स्रष्टा ने इन्द्रियों को रूप दिया। अअराफः 189 में कहे अनुसार पिता और माता के आलिंगन में, पिता की पीठ में से और माता की कमर से बिखरते पानी से मानव की सृष्टि की गयी है, यों अत्वारिखः 5-7 में कहा गया है। अवश्य ही, मनुष्य को हम ने पुरुष और नारी के मिश्रण नुत्फा (बीज से) सृष्टि की है - यों इन्सानः 2 में कहा गया है। माता के गर्भ पात्र में नुत्फा (भ्रूण) बनकर 40 दिन, 'अलखा' (रक्त का पिंड) बनकर 40 दिन, 'मुलगा' (मांसपिंड) बनकर 40 दिन बढते बच्चे में चौथे महीने में, एक देवदूत द्वारा पिता की पीठ में रही आत्मा का आवाहन कर जाता है। हज्जः 5, सजदाः 7-9, फात्विरः 11 आदी सूक्तों जोड़कर पढिये। पहले से ही जान मिले बच्चे को आत्मा मिलते ही रूह (जान + आत्मा) प्राप्त होती है। एक

जूत के सवाल के जवाब के रूप में नबी ने सिखाया कि पिता के बीज से हड्डियाँ और नाडियाँ रूपायित होती है, तो माता को बीज से खून और मांस रूपायित होता है। मनुष्य की उपमा एक कम्प्टूर से की जाय तो शरीर हार्ड वेयर, जान बिजली, तथा आत्मा सोफ्ट वेयर के रूप में कल्पना कर सकते है।

मानव की सात अवस्थाएँ

स्वर्ग में बनाये गये मानव की सात अवस्थाएँ होती है। नूहः 14 में अवश्य, उसने तुम्हें विभिन्न अवस्थाओं में सृजन किया है। आदिम मानव आदम की सृष्टि होते वक्त ही अंतिम दिन तक के सारे मनुष्यों की सृष्टि करके अल्लाह ने उन सब से करार लिया है। यही मानव की पहली अवस्था है। अअराफः 172-173 व्याख्या देखिए। बाद में सब को निर्जीव कर दिया। आदम की पीठ में डालकर धरती में उतार दिया। फिर आदम की सन्तानों की परंपराओं की पीठों से हर एक के पिता के पीठ पर पहूँच जाने तक के असमय काल ही दूसरी अवस्था है। इनसानः 1 व्याख्या देखिए। पिता की पीठ पर आत्मा को देवदूत द्वारा लेकर चौथे महीने माता की कोख में वढनेवाले शिशु के अन्दर आवाहन करते है। सजदाः 7-9 व्याख्या देखिए। उससे लेकर पन्द्रह साल तक की है तीसरी अवस्था। पन्द्रह साल के पहले मरनेवाले कोई भी बच्चा स्वर्ग में लौट जाता है। पन्द्रह साल से मृत्यु तक के धरती पर जो जीवन काल है, वह है चौदवी अवस्था। नींद के विपरीत, सिर्फ जान और आत्मावाली जो अवस्था में विश्वासी स्वर्ग के बगीचें में और काफीर नरक के गर्त मे ही बितायेंगे। मुअमिनूनः 100 व्याख्या देखिए। मृत्यु के बाद पुनर्जन्म तक के काल है (बरसख) पाँचवी अवस्था।

50 हज़ार साल की अवधि वाला विधि निर्णय के दिन है छठी अवस्था। मआरिजः 4 व्याख्या देखिए। वेद जिन्हे मिला वे उसका इस्तेमाल कर चौथी अवस्था में स्वर्ग बनाये तो स्वर्ग, वरना नरक मिले - यही सातवी अवस्था है। सुमरः 24 अत-तूरः 19 व्याख्या देखिए। वेद न मिलनेवालो को सातवी अवस्था में स्वर्ग या नरक न होकर किसी अन्य लोक में निष्पक्षवान सर्वलोक के अधीश ने भेज देंगे। सृष्टि के बाद आत्मा कई अवस्थाऐं पार कर लेती है पर वह कभी मरती नही - यह खासकर स्मरणीय है। हुजुरातः 13, इनशिखाखः 19 व्याख्या देखिए।

इतिहास (चरित्र)

आदिम मानव 'आदम' स्वर्ग से सिखाये सन्मार्ग का इस्तेमाल करके धरती पर जीता

आया। लेकिन आदम की सन्तानों ने धीरे से पिशाच की प्रेरणा से गुमराह होकर जीवन लक्ष्य खो दिया। बखराः 213 व्याख्या देखिए। उनमें अधिकतर लोग अत्याचारी और बद्तमीज़ बने तो अल्लाह ने विश्वासियों को खुशखबरी देनेवाले और निषेधियों को ताकीद देनेवाले नबियों को नियुक्त किया। आदम से नूह तक की दस पीढियाँ स्वर्ग से सिखाये वेद के भावानुसार जीने को आदेशित थी। कालांतर में समाज के विकास के अनुसार, मानव पिशाच के जाल में फँस गये और अल्लाह का प्रतिनिधित्व करके जीनेवाले खतम हुए तो अल्लाह ने मनु, नोहा आदि नाम से पुकारे जानेवाले नूह नबि को पहला पैगम्बर नियुक्त किया और वेदग्रंथ धरती पर पेश भी किया। उनको ही पहली बार सशरीर ग्रंथ का प्रकाशन किया गया। हदीदः 25 व्याख्या देखिए। उनके प्रबोधन के फल स्वरूप, केवल कुछ लोगों ने विश्वास किया। विश्वास करने कोई बाकी नही रहा तो त्रिकाल ज्ञानी अल्लाह ने नूह से विश्वासियों और निषेधियों के बीच फैसला करने का आदेश के लिए प्रार्थना करने की आज्ञा दी। फलतः मानव बसनेवाले सभी प्रदेशों में व्याप्त बाढ के द्वारा अल्लाह ने उनको तमाम कर दिया और नूह और विश्वासियों को जहाज़ में बचाया। उस ज़हाज में बचे लोगों के अनुगामी है आज इस संसार के सारे के सारे लोग। इसराअ-3 यासीनः 41 व्याख्या देखिए।

जो बच गये, उनमें एक संध इराख में बसने लगे। वे फिर बुरे बने, मूर्ति पूजक और अत्याचारी बने तो 1400 साल के बाद अल्लाह ने इब्राहीम को पैगम्बर बना दिया। एकेश्वरत्व को बुलाये उन्हें, लोग (पिता भी उनमें शामिल थे) अग्नि कुण्ड में फेंककर मारने को उद्यत हुए। लेकिन अम्बियाअः 69 के अनुसार अजेय और तंत्रज्ञ अल्लाह ने उन्हे उससे बचाया (गाय चराने की जगह ढूँढकर आखिर भारत पहूँचे 'आर्यों' के पूर्वजों ने इराख से आये हुए थे। हज्ज का वस्त्र धारण, कअबा प्रदक्षिण आदि इब्राहीम की चर्या की आराधना रीतियों और ब्राह्मणों की रीतियों में जो समानता इसी कारण हो सकती है)। इराख छोडकर फलस्तीन को निकले इब्राहीम को, मिश्र के सम्राट के द्वारा दिये हाजरा नामक पत्नी में इब्राहीम के प्रथम बच्चे का जन्म हुआ। अल्लाह के आदेशानुसार हाजरा और उस बच्चे को विजन मरु प्रदेश में - जहाँ पानी तक नहीं मिलता - 'कअबा' के करीब ले जाकर बसाने के बाद इब्राहिम फलस्तीन लौटे। हाथ में जो पानी था, जब वह खतम हुआ तो बच्चे के लिए हाजरा पानी की खोज में 'सफा' 'मारवा' पहाडों के बीच सात बार भागती रही और आखिर बच्चे के पाँव के नीचे से ही 'समसम' जलधार प्रवाहीत हुआ। इसमाइल की उम्र जब चौदह हुई तो इब्राहिम का सर्वस्व बेटे को काटने की आज्ञा आयी। इब्राहीम और इस्माईल, दोनों उसके केलिए जब तैयार हुए तो अल्लाह का आदेश हुआ कि बदले में एक बकरे की बली काफी है । इन सारी परीक्षाओं

में उत्तीर्ण इब्राहिम को एकेश्वर आराधना करने केलिए धरती पर निर्मित और नूह के समय की बाढ में नष्ट हुए प्रथम देवालय कअबा की नींव अल्लाह ने दिखला दिया और इब्राहिम और इसमाइल दोनों ने मिलकर उसे बनवाया। बखरा: 126-127, आलि इमरान 96-97 जोडकर पढिए। इब्राहिम 35-36 के अनुसार इब्राहिम नबी, खुद को और सन्तानों को मूर्ति पूजकों में न पडने की प्रार्थना करने पर भी धीरे से इस्माइल की सन्तानों बुरी निकली और एकेश्वर आराधना केलिए निमिर्त कअबा में 360 मूर्तियों की प्रतिष्ठा भी की थी।

इब्राहिम नबी की पत्नी सारा से जन्मे 'इस्हाख' नबी के बेटे 'यअखूब' नबी का बेटा 'यूसुफ' नबी अपने ही भाईयों द्वारा कुऐं में डाला गया। राही व्यापारी संघ से वह ढूँढ निकाला गया और मिश्र में बेचा भी गया। धीरे धीरे मिश्र के शासक बने यूसुफ नबी, फलस्तीन से यअखूब नबी और परिवारवालों को मिश्र में ले जाकर बसा दिया। ऐसे ही इसराईल सन्तान मिश्र में पहुँची। धीरे यूसुफ नबी के अध्यापन इसराइल सन्तानों वाली वह जनता भूल गयी और गाय पूजा में तथा अन्य अधार्मिक कामों में लग गयी। बाद में 'खिब्तीं' वंश के 'फरोवा' शासक के रूप में आये और इसराईल सन्तानों को दबा दिया और गुलाम बना दिया। तब उन्हें मुक्त करने केलिए अल्लाह ने मूसा नबी को मिश्र में नियुक्त कर दिया।

मूसा और हारून ने कई साल तक मिश्र में प्रबोधन किया लेकिन फिरौन प्रभृतियों में सिर्फ एक ही व्यक्ति विश्वासी बन गया। आखिर मूसा और इसराइल सन्तानों को अल्लाह ने सागर अलगकर फलस्तीन को बचा कर भेज दिया। उन्हें कई अनुग्रह प्रदान किये और अन्य लोकवासियों से भी श्रेष्ठ बना दिया। कुरआन शरीफ में नामोल्लेख किये गये पच्चीस पैगम्बरों में आधे से अधिक और 'उलूल अस्म' के मूसा, ईसा नामक दो पैगम्बर उनमें ही आये। दुनिया के अन्य किसी को भी न दिया गया असर, प्रौढता और शासन दिये गये सुलैमान नबी (सम्राट सोलमन) और दावूद नबी; बाप बेटे पैगम्बर बने तीन जोडे उनमे ही आये हैं। मुहम्मद नबी नियुक्त होने से पहले दुनिया का नेतृत्व इसराइल सन्तानों के हाथों में था। लेकिन कालंतर में वे बदतमीज़ बने और अन्होंने ग्रंथ को नष्ट कर दिया, कुछ पैगम्बरों को मार डाला तथा ईसा को मारने की कोशिश की।

अल्लाह के ग्रंथ तौरात को पूरा ढककर, चूने से पोथे गये मजारों की तरह आत्महीन जीवित जूत पुरोहितों के खिलाफ होकर; लोगों को उनके शोषण से मुक्त करने केलिए ईसा नबी ने जरूसलम में प्रबोधन करने पर भी इसराइल सन्तानों ने विश्वास करने को तैयार नहीं हुई। (अधिक विवरण के लिए मात्यु के लिखे सुविशेष (सुभाषित) 2: 136 देखिए)। उनमें हवारिय्य

केवल तेरह व्यक्ति ही उनका अनुगत करने तैयार हुए थे। बदतमीज जूत पुरोहितों ने ईसा नबी को क्रूस पर ठोककर मार डालने को रोमा सम्राट के गवर्रणर (Governer) पर प्रभाव डाला। आखिर उन्होंने ईसा नबी को पकडकर क्रूसारोपण करने का फैसला किया। लेकिन अल्लाह ने शरीर सहित ईसा को सीधे स्वर्ग तक पहूँचा दिया।

अन-निसाअः 157-158 की व्याख्या के अनुसार अल्लाह ने ईसा को तूफान द्वारा शरीर सहित आस्मान तक उठा दिया और हवारियों के 'सरजास' को ईसा की शकल दी। रोम के सैनिक सरजास को पकड ले गये और क्रूशित कर दिया। यह सब देख स्तब्ध बाकी बारह हवारिय्य जन का अविश्वास, जूतों का मज़ाक, षड़यंत, उनके इशारे पर चले रोम साम्रज्य का आधिपत्य आदि परिस्थितियों के दबाव से ईसा नबी को ऊँचा कर देने की बात तक लोगों को न समझा बुझा सके। फिर संगठित काम न कर सके और विभिन्न प्रदेशों में जाकर वे सन्देश प्रचार कामों में मग्न हुए। जूत 'पौलोस' - जो ईसा को दुश्मन था, वह स्वयं हवारिय्य बनकर आया और जूतों और शासकों की आड में ईसा द्वारा लाये तत्वों और भावों का प्रचार करने लगा। यो कालांतर में वे विभिन्न संधों में विभक्त हो गये। आलि इमरान 52-55 व्याख्या देखिए।

ईसा नबी के बाद सारी दुनिया काली होकर नष्ट कर देने का वक्त आया तो छठी शताब्दी में 'कल्की' सत्य की आत्मा, निरीक्षक आदि नाम से पूर्व वेदों में चर्चित मुहम्मद को अल्लाह अंतिम पैगम्बर और नबी बनकर करते है। गलत राह पर ईसाइल सन्तानों की अधार्मिक जीवन-शैली कअबा का प्रदक्षिण नारी और पुरुष नंगे होकर करने तक काली हो गयी थी। बाह्य जगत से बंधित होकर न जी सकने की हालत बनी तो 'हीरा' गुफा में मुहम्मद अकेला होकर बसने लगे। तभी 'जिबरील' नामक देवदूत कुरआन रूपी प्रकाश (दिव्य सन्देश) लेकर आ पहुँचता है। अन-नज्मः1-17 अत्तक्वीर 19-27 जोडकर पढिए। सूरा अलख के पहले पाँच सूक्तों को मुहम्मद को पढकर सुनाने के बाद उनसे पढने को बोला। मैं पढनेवाला नही 'मुहम्मद का जवाब आया तो जिबरील ने मुहम्मद का गले से लगाया और आत्मा को स्वर्ग से बंधित कर दिया। फिर स्वर्ग से सिखाये कुरआन शरीफ वे पारायण करने लगे। बाद में विभिन्न प्रसंगों में एक एक करके तेईस सालों में ही कुरआन शरीफ का अवतरण की पूर्ति हुई है।

सर्वधर्म सत्यवाद मूर्खताः

वेद ग्रंथों के आधार पर आदि से अन्त तक के मानवों की एकत्रित जीवन शैली ही स्रष्टा

को पसन्द है। सर्वस्व स्रष्टा को समर्पित प्रकृति धर्म प्रस्तुत जीवन साहिता को इस्लाम कहते है। आली-इमरानः 19-85 व्याख्या देखिए। स्रष्टा के संन्देश रुपी वेद प्रामाणिक जीवन में जी करके दिखाने केलिए मानवों के बीच के दूतो के द्वारा ही समय समय पर प्रस्तुत करते थे। लोगों का ध्यान अल्लाह के संदेश की और कर देने उन्हें डराने केलिए आदिम समय में अकाल, यातना, भयानक युद्ध आदि प्रयोग देकर पैगम्बरों द्वारा कुछ दिव्य चमत्कार दिखा भी दिये गये। शक्तिशाली निषेधों के बीच में भी एक छोटा संघ अल्लाह के इस जीवन संहिता पर विश्वास कर गया और धीरे उनका दीन यहाँ प्रचलित भी हुआ।

कालांतर में प्रभुओं और पुरोहितों के कपट विश्वासियों ने (मनुष्य पिशाच) दिव्यचमत्कार पैगम्बरों की सामर्थ के रूप में प्रस्तुत कर अपने स्वाथों की पूर्ति केलिए ग्रंथ को विकल बना दिया। परलोक को भूलकर इहलोक को प्रमुखता देते हुए एक नयी जीवन शैली का प्रचार करने की कोशिश भी की। कुछ पैगम्बरों को ईश्वर के अवतार, दैवपुत्र बना दिया। ईश्वर अधिकारों में शामिल किया और धीरे वह मूर्ति पूजा में जा पहूँचा। आदि काल में वेद मूँह बोली के रूप में ही पीढियों को सौपा जाता था। बाद में कपट विश्वासी पूरे वेद को न अपनाकर कुछ भागों को विकल रूप में व्याख्या कर असत्यों को मिला जुलाकर ग्रंथ की रचना करने लगे। वेदों का भाव सीखेन की कोशिश कर उसका शरीर खाकर (अधर व्यायाम कर के) पुण्य पाने की बात सिखायी और वेद के बदले अपने ही हाथों से निर्मित ग्रंथ (कर्म शास्त्र ग्रथ, उपनिषत, सुभाषित, पुराण आदि) जीवन के आधार ग्रंथ बना दिये। जल्दबाज़ और सुखलोलुप मानव इनके बनाते गहरीचाल का अनुगत कर गये। फिर अनेक प्रकार की चिन्तन धाराणा निकल पडी वे कक्षित्व में जा पहुँची और आधार रहित आचार अनुष्ठानों का एक समुच्चय बन जाते ही अल्लाह द्वारा प्रस्तुत दीन केवल एक धर्म रह गया। तब अल्लाह मानव को सन्मार्ग दिखाने केलिए अपने वेद को दूसरी भाषा में दूसरे दूत के द्वारा जनता के बीच प्रस्तुत करते है। पूरी तरह से दूषित पहले पैगम्बर कै जन होने का अभिमान करनेवाले लोग ही इस वेद और दूत के खिलाफ आवाज़ उठानेवालों के आगे रहेंगे।

मुसल्मान लोगों के संप्रादायिक धर्म को मिलाकर आज प्रचलित कोई भी धर्म, अल्लाह को पसन्द अपनी जीवन रीति नही। अल्लाह या यहोवा या जगदीश्वर को जीवन समर्पित करके पुकारकर प्रार्थना करने वाले विश्वासी; और मुहम्मद नबी, बदर युद्ध में शहीद वीर, देवदूत, मुहयुद्दीन शैख, क्रैस्ट (ईसा), पुण्यवान मूसा, उसैर, राम, कृष्ण, बुद्ध आदि उनकी सृष्टियों को पुकारकर प्रार्थना और आराधना करके यशोगान कर मन्नतें माँगनेवाले शिर्क करनेवाले

है - चाहे वे किसी भी जाति, धर्म, वेश, देशवाले हो। मुहम्मद (कल्की) नबी के बाद लोकावसान तक के समय में जीनेवाले सभी मनुष्यों का वाद केवल कुरआन शरीफ ही है। हिन्दु, जूत, ईसाई, मुस्लिम और नास्तिक की सृष्टि करके, उनका नियत्रंण करके , उन केलिए, वायु, जल, प्रकाश, मिट्टी आदि तैयार करनेवाले सर्व स्रष्टा की जो बोली है, वही कुरआन पूर्व वेद ग्रथों की परिसमाप्ति रूप और पूर्व ग्रथों को सत्य बतानेवाला तथा सुरक्षित कर रखनेवाला है। समय समय पर विद्यालयों में किताबें परिष्कृत करने की तरह मौलिक तत्वों में फरक लाये बिना ही बेद ग्रथों में परिष्कार लाया गया है। उल्टे हिन्दु, ईसाई और मुस्लिम को अलग अलग ग्रंथ की जो गलत फहमी आज के मनुष्यों में है, ऐसा नही।

आज समाज में, मुसल्मान लोगों में से ज्यादा प्रकृति धर्म (इस्लाम) हिन्दुओं, ईसाइयों, और नास्तिकों में प्रतिबित है। यह कुरआन शरीफ के प्रकाश में समझ सकते है। मुहम्मद नबी अंतिम पैगम्बर होने से; और कुरआन का प्रस्तुतीकरण जिस भाषा और रूप में हुआ उसी तरह कायम रहने से अब एक नये पैगम्बर और ग्रंथ की आवश्यकता नहीं पडती। मुसल्मान लोगें ने कुरआन के भाव को खुद इस्तेमाल नहीं करते है और दूसरों को इस्तेमाल करने केलिए नहीं देते है। कुरआन से विचलित होकर उनका जीवन पुरी तरह से काली जाहिलिय (अज्ञान) में पहुँचते है तो लोकावसान घटित होगा।

अल-किताबः

आकाश और धरती तथा उनके बीच का सर्वस्व अभाव (शून्यता) से छः दिनों में सृष्टि करनेवाला सर्वस्रष्टा त्रिकाल ज्ञानी है। उनके वचन रूपी कुरआन त्रिकालज्ञान भी है। उसके तीन भागों में एक भाग सूक्त बीते हुए, एक भाग सूक्त प्रचलित और एक माग सूक्त आनेवाली घटनाओं की चेतावनी है। प्रंपच रूपायित होने से पहले ही उसका शासन चक्र और उसकी चर्या वाला ग्रंथ-कुरआन शरीफ, सुरक्षित फलक में अंकित कर रखा। उसे अल किताब कहते है। अल वाखिअः 77-78, अल बुरूजः 21-22 व्याख्या देखिए।

स्वर्ग से समय समय पर मानवों का जरूरी नियम निर्देशनवाला एक ही वेद प्रस्तुत किया गया है, जो कुरआन ही है-एसा हिजर 90-91 में बताया गया है। उसका शरीर विभिन्न भाषाएँ में हो तो आत्मा (भाव) एक ही है। यानी कि भगवत् गीता का शरीर संस्कृत, तौरात का शरीर हीब्रू इंजील का शरीर अरमाई, दावीद के संकीर्तन सबूर का शरीर ग्रीक, कुरआन का शरीर अरबी हो तो सबका आत्मा एक ही है। उस आत्मा को अद्दिकर कहते है। कुरआन शब्द का अर्थ ही 'बार बार पारायण (वाचन) करने का' है। सारे वेदग्रंथ बार बार पारयण

करने केलिए है इसलिए वे सब कुरआन ही है। हिजरः 87 में कहे आवर्तित सात सूक्तों का उद्देश्य 'उम्मुल किताब - फातिहा' ही है, नबी ने सिखाया है। उम्मुल किताब अल्लाह के पास है अर-रअदः 39, सुगरुफः 4 आदि सूक्तों में बताया गया है। सारे पैगम्बरों को कुरआन ही प्रस्तुत किया गया है तो अंतिम पैगम्बर मुहम्मद नबी को कुरआन और उम्मुल किताबवाली 'अल किताब' प्रस्तुत की गयी है। बखराः 2 व्याख्या देखिए

रूहः

मनुष्य की आत्मा और जान का मिश्रणवाली रूह, शरीर से अलग होने की प्रक्रिया को ही मृत्यु कहते है। निद्रा एक छोटी सी मृत्यु है। पर निद्रा में सिर्फ आत्मा ही जाती है, जान नही। अनआमः 60, सुमरः 42, व्याख्या देखिए। अन-निसाअः 171, सजदाः 9 आदि सूक्तों में कहा गया है कि स्रृष्टा की रूह से ही ईसा नबी आदि सभी मानवों को रूह दी गयी है। नहलः 102, अश-शुअराः 193, नबअः 38 सूक्तों में जिबरील को रूह बताया गया है। नहलः 2, अश-शूराः 52 सूक्तों में कुरआन को रूह बताया है। कुरआन का भाव उसकी आत्मा और अर्थ उसकी जान हो तो रुह आत्मा और जान का मिश्रणवाल कलिमात है। कहने लिखने पर भी वह समाप्त नही होताः यो कहफः 109 लुखमानः 27 सूक्तों में कहा है। वे तुम से रूह के बारे में पूछे तो, 'वह मेरे रब्ब के आदेश में एक है, तुम्हें ज्ञान में से थोडा से बडकर कुछ नही दिया हैं' - यह बताने के लिए ही इसरा 85 में मुहम्मद नबी को आदेश दिया गया है। लेकिन एकत्रित कुरआन में सभी बातों की व्याख्या हो जाने के कारण कोई भी अज्ञात कार्य कुरआन के भाव जाननेवालों से पूछने को नहलः 43, अम्बियाअः 7 आदि सूक्तों में आज्ञापित है। त्रिकाल ज्ञानी अल्लाह के बारे में त्रिकाल ज्ञान कुरआन के भाव जाननेवाले त्रिकाल ज्ञानी से पूछने को फुरखानः 99 में नबी से कहा गया है।

कुरआन के भाव से अल्लाह का स्मरण स्थायी रखने पर ही किसी को आत्मा मिलेगी। जिसे वह जो नहीं मिलता तो वह निद्रा में है। उन्हें सिर्फ जान है। कुरआन का भाव जानकर ढक देनेवाले कपट विश्वासी मारे जाने है - यों बताने का कारण भी यही है। मुनाफिखूनः 4, अबसाः17 देखिए।

क्या है कुरआन?

यासीनः 69 में कुरआन के बारे में अल्लाह कहते है। वह तो दिकर (अनुस्मृति) और स्पष्ट कुरआन के सिवा कुछ नहीं। यहाँ बताये 'दिकर ' कुरआन की आत्मा अरबी का टेक्स्ट उसका शरीर है। मानव की तरह आत्मा और शरीर से मिला हुआ है ग्रंथ। कुरआन की माता (उम्मुल

कुरआन-फातिहा) द्वारा गुलाम मालिक से मिलकर 'हमें तू सही रास्ते पर चलने का मार्ग निर्देशन करन' को पूछने पर उसके जवाब के रूप में ही सन्मार्ग और सबसे सही रास्ता 'सूरा बखरा से सूरा अन-नास तक के सूक्तों वाले कुरआन' देते है। कुरआन में 114 सूक्त है। किसी एक सूक्त में कोई एक खास विषय पूर्ण रूपेण न बयान करने के कारण उसे अध्याय नहीं कह सकते। 6236 सूक्तोंवाले कुरआन के हर एक वाक्य तत्व भरे और स्वतंत्र होने के कारण उसे 'आयत' अथवा सूक्त कहते है। आयत माने दृष्टान्त, दिव्य चमत्कार सबूत आदि कई अर्थ है। अथवा कुरआन का हर एक सूक्त एक दृष्टान्त है।

एकत्रितः

जिब्रील आकर नबी के दिल में कुरआन बारी बारी से डाल दिया। अनपढ नबी ने पढे-लिखे अनुयायियों से यह अमुक सूरत में लिख रखने को कहा। उसके अनुसार उन्होंने ऐसा लिख रखा। हर साल के 'रमदान' महीने में (उस महीने में कुरआन अवतरित हुआ), जिब्रील मुहम्मद नबी से कुरआन का पारायण करवाके सुनता था। नबी के आखिरी दिनों में 'मुसैलिमतुल कद्दाब' के नेतुत्व में धर्म निषेधियों उद्भूत हुआ और प्रथम खलीफा 'अबूबक्कर' के समय में उनसे लडाई भी हुई। इस लडाई में कुरआन हृदिस्त करनेवाले बहुत से लोग शहीद हुए। ग्रंथ रुप में सुरक्षित न करे तो उसके नष्ट होने को भय से 'उमर' की प्रेरणा से अबूबक्कर के समय में ही कुरआन ग्रंथ रूप में एकत्रित हुआ। लेखक 'सैदुबिन थाबित' के नेतृत्व में कुरआन हृदिस्त करनेवालों को एकत्रित करके खालों पतों और हाड्डियों पर लिखें रखे लेखों की तुलना करके ही आज उपलब्ध कुरआन की पहली प्रति अरबी में प्रकाशित हुई। वह प्रति नबी की पत्नी 'हफ्सा' के हाथों में सुरक्षित रखा और दूसरों से लिखित कुरआन, इस प्रति से तुलना कर तृप्त हुए। जब इस्लाम विभिन्न देशों में प्रचार हुआ तब कुरआन की अधिक प्रतियाँ आवश्यक पड गयी। ऐसे तीसरे खलीफा 'उस्मान' के समय में आठ प्रतियाँ विभिन्न देशों में पहुँचा दी। नये देशों की भाषाएँ बदलते वक्त कुरआन का पारायण में बदलाव आकर भाव नष्ट न होने केलिए पारायण करने की विधियाँ भी बनायी। कुरआन एकत्रित और संचित करनेवाला त्रिकालज्ञानी अल्लाह ही है। खियामा 16-19 सूक्तों में अल्लाह कहते है-यह कुरआन समझने केलिए जबान लडाने की ज़रूरत नही। हमारा दायित्व है उसका एकत्रित करना और वह बोलकर सुनाना। तब हमने तुम्हे जिबरील द्वारा पारायण करके दिया, तुझे उसीका अनुगत करना है। फिर उसकी व्याख्या करना हमारा दायित्व है। त्वाहाः 114 में अल्लाह कहते हैः तुम्हारे लिए दिव्य सन्देश पूरा होने से पहले यह कुरआन समझने के काम में तू जल्दबाज़ी न कर। और तू प्रार्थना क 'मेरे नाथ, मुझे तू मेरे ज्ञान की अभिवृद्धि प्रदान

कर दे'। कुरआन का पारायण, उसका भाव सीखना और सिखाना सब उसके एकत्रित होने के अनुसार सूरा बखरा से नीचे तक ही है। इसके विरुद्ध कुरआन के आखिरी भाग 'अम्म जुसअ' से लेकर सीखने-सिखाने से ही मसल्मान लेग कुरआन को समझ नहीं पाते। उनका खाना निर्द्धिष्ट और संशुद्ध न होने के कारण ही परिशुद्द कुरआन की आत्मा उनको अनुगत कर नहीं सकते। नहल:114 व्याख्या देखिए। हिजर-9 में बताय है कि निश्चय, दिकर (कुरआन की आत्मा) हम ने ही उतारी है, हमें ही उसका रक्षक है।

नीचे दिये नामों में कुरआन का भावों को अल्लाह ने परिचय दिया है। वे सारे नाम सार्थक होने लायक काम में लाने वाले कुरआन के अनुकूल तर्क करेंगे सिफारिश करेंगे और साक्षी बनेंगे।

अद्दिकर (कुरआन की आत्मा)

सृष्टियों के हृदय की भाषा वाले बेद ग्रंथ के भाव को ही अद्दिकर कहते है। अअराफः 26 में कहे अनुसार आत्मा का भोजन, वस्त्र और दृष्टि रूपी अद्दिकर ने ही स्वर्ग में सभी मानवों को सिखाया है। आदि से अन्त तक के दुनियावालों को सिर्फ वहीं प्रस्तुत किया गया है यों नहलः 44, अम्बियाअः 24, फुस्विलतः 43, आदि सूक्तों में बताया गया है। कुरआन में 100 स्थानों में 'दिकर' शब्द आया है। उन सब में अल्लाह का स्मरण स्थायी रखने का एकमात्र उपकरण हृदय की भाषावाले कुरआन के भाव का उद्देश्य है। कुरआन की शरीर को सदा के लिए स्थायी रखने की बात अल्लाह ने नहीं कहा है। बल्कि आत्मा रुपी अद्दिकर स्थायी रखने की बात ही हिजर 9 में बताया है। हमारे बीच में क्या उनके लिए ही यह दिकर प्रस्तुत किया है? नहीं, वे (काफिर लेग) दिकर के विषय में काफी शंकालु है, यों निषंधियों के बारे में स्वादः 8 में बताया है। दिकर को नैन ढके हुए और न सुननेवाले काफिरों के करीब नरक कुंठ को लगा देंगे - यह कहफ 100-101 में बताया है। कुरआन का भाव स्थायी रखने केलिए नमाज कायम रखने को ही त्वाहाः 14 में बताया गया है। ऐश्वर्यपूण कुरआन के भाव की उपेक्षा करनेवाले को इस संसार में संकरे जीवन का अनुभव होगा और परलोक में अंधे के रूप में पुर्नजीवित किया जायेगा यों त्वाहा 124 में बताया है।

सन्मार्गी कुरआन का भाव सारे संसारवालों केलिए एक दिकर (स्मरण दिलाना) न होकर कुछ और नही - यों अनआम 90 में, और यह विश्वासियों के लिए अनुस्मरण है - यों अअराफः 2, हूदः 120 सूक्तों में कहा है। विश्वसियों को ही दिकर काम आयेगा - यों अद्दारियातः 55 में, और भयंकर अग्नि में पक जानेवाले बदकिस्मतवाले उसे ज़रूर छोड देंगे

- यों अअलाः 9-12 में कहा गया है। नरक कुंठ लाये जानेवाले दिनों में मानव को बोध होगा कि 'अगर वे दिकर इस्तेमाल किये तो कितना अच्छा होता था' - यों फजर 23 में कहा गया है। अल्लाह का स्मरण करा देनेवाला कुरआन का भाव ही सबसे बडा है - ऐसा अनकबूत 45 में बताया है। अपनी संतान या दौलत कुरआन के भाव से आपको न रोके, अगर रोके तो वे ही जीवन हीन है - यों मुनाफिखून 9 में बताया है। जमुअः खुतुबा (भाषण) कुरआन की भाव की व्याख्या होना चाहिए। विश्वसियों को बुलाकर उसकेलिए जल्दी जाने को जमुआ 9 द्वारा बताया है। केवल कुरआन के भावों का अनुगत करनेवालों को ही तू जगायेगा - यों यासीन 11 में बताया है। कुरआन का भाव तुझे और तेरी जनता केलिए एक दिकर है। तू और तेरी जनता उसके बारे में सवाल किया जायेगा - यों 'सुगरुफ' 44 में भी बताया है। कुरआन में बारी बारी से या एक एक करके कोइ भी बात नहीं बतायी गयी है और इसलिए कुरआन के पूरे भाव की जानकारी ज़रूरी है।

तद्किरा (टिकट)

अपने नाथ तक पहूँच जाने को चाहनेवालों केलिए कुरआन का भाव अवश्य एक टिकट ही है - यों मुसम्मिल 19, इनसान 29 आदि सूक्तों में बताया है। लेकिन कुरआन का अनुगत करनेवाले मुत्तखी लोग ही वह टिकट के रूप में इस्तेमाल करेगा - यों अल-हाखा 48 में बताया है। जिसे सत्य -कुरआन- आ मिले और जिसने उसे सत्य बना रखा है, वे ही मुत्तखी है - यों सुमरः 33 में बताया है। शेर का गर्जन सुनकर भयभीत होकर भागनेवाले जंगली गधे की तरह, निषेधी लोग कुरआन का भाव -तदकिरा- से दूर हो जानेवाले है - यों मुद्दसिर 49-51 सूक्तों में कहा है। अवश्य ही पिशाच कुरआन का भाव सुनने से दूर किये गये है - यों अश-शुअरा 212 में बताया है।

हुदा (मार्ग दर्शन)

बखरा 38 में, स्वर्ग से सभी मनुष्यों को भूमि में नियुक्त कर भेजते वक्त अल्लाह ने कहा- मुझसे जो हुदा (मार्ग दर्शन) तुम्हे मिला, जो उसका अनुगत करते हो, उसे डरने या उसके बारे में दुःखी होने का अवसर नही होगा। हर सदा अल्लाह से आये एक ग्रंथ का भाव है हुदा। कुरआन का भाव सारे मानवों के लिए मार्ग दर्शन है - यों बखरा 185 में बताया गया है। 'हुदा पा जाना' यह उपाधि होने के कारण जिस जनता को कुरआन न मिला हो, उसे अल्लाह सजा नहीं देंगें। हम एक पैगम्वर को नियुक्त करते तक दण्ड देने वाले नही होंगे - यों इसराअः 15 में बताया है।

फुरखान (सत्यासत्य विवेचना का माप-दण्ड)

बखराः 185, फुरखानः 1 सूक्तों में ऐसा कहा है कि सारे संसारवालों को मार्ग दर्शन, सत्यासत्य की विवेचना का माप-दण्ड बनाकर कुरआन की प्रस्तुति हुई है। अथवा सत्य, असत्य, धर्म, अधर्म, नीति, अनीति, स्वर्ग के लिए एकमात्र रास्ता, नरक केलिए विभिन्न मार्ग और जीवन के सारे क्षेत्रों में पहचानने की कसौटी है कुरआन का पूरा भाव फुरखान। विश्वासी और निषेधी को पहचानने का माप-दण्ड भी यही है।

मीसान (तराजू)

प्रंपच उसके सन्तुलन बनाये रखने का तराजू है कुरआन का भाव - ऐसा अश-शूराः17, अर-रहमानः 7-9, हदीदः 25 आदि सूक्तों में बताया है। निष्पक्षवान अल्लाह अपने प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किये मानवों का दायित्व है कुरआन का भाव तराजू के रूप में इस्तेमाल करके प्रंपच को उसका सन्तुलन बनाये रखना। अल्लाह का प्रतिनिधित्व करनेवाले विश्वासी लोग ही वह उत्तरदायित्व निभाहेंगे और दूसरों को निभाहने की प्रेरणा देंगे। विचारणा के बिना स्वर्ग जानेवाला एक भी विश्वासी संसार में कहीं न दिखने की अवस्था में ही लोकावसान के दस निशानियाँ प्रत्यक्ष होंगी। अनआमः 158 की व्याख्या देखिए। कोई भी काम कुरआन रूपी तराजू से तौल कर मूल्यांकन करने और सारे कामों में तराजू कुरआन की नीति पालन करने केलिए विश्वासियाँ को आज्ञा दी गई है। तराजू रूपी कुरआन से वैयक्तिक जीवन, पारिवारिक जीवन और सामाजिक जीवन में जो आज्ञानुवर्त्ती न हो; वे ही काफिर, अत्याचारी और बदमाश होते है - यह क्रमश माइदाः 44, 45, 47 सूक्तों में बताया है।

हख (सत्य), स्विद्ख (सत्य)

यूनुसः 108 में ऐसा बोालने केलिए नबी को आज्ञा दी है कि 'हे मानव, तुम्हारे मालिक नाथ से हख (सत्य) अवश्य तुम्हे आ चुका है। तो कौन उसका इस्तेमाल करके सन्मार्ग स्वीकार करते हो, वह उसे सन्मार्ग में रख दिया। किसने अपने आपको दुर्मार्गी बनाया, अवश्य ही उस दुर्मार्ग का दोष भी उस आत्मा के लिए है। मैं तुम्हारी वकालत करनेवाला वकील नहीं'। कियामत के दिन हख और तराज् रूपी कुरआन ही अधिक वजनी है - यों अअराफः 8-9 सूक्तों में बताया है। परलोक में न्यायविधि, हख रूपी कुरआन से है - यों सुमरः 69-75 सूक्तों में; और ऐहिक लोक में मनुष्य जिस विषयों में भिन्न कर रहे है, उसमें फैसला लेने के सिवा तुम्हे कुरआन प्रस्तुत नहीं किया गया - यों नहल 64 में बताया गया है। विश्वासी लोग ही किसी भी विषय में इहलोक में कुरआन से फैसला लेंगे। लेकिन अल्लाह को

निष्पक्षवान न माननेवाले कपट विश्वासी एसा सोचेगा कि 'मनुष्य जिन विषयों में भिन्न है, कियामत के दिन अल्लाह फैसला सुनायेंगे' और इस नीति से कोई भी विषय परलोक तक ले जायेंगे। विचारणा के बिना नरक में जाने वाले वे कुरआन को हख और तराजू के रूप में इस्तेमाल न करनेवाले है। अनकबूतः 68, सुमरः 41 व्याख्या देखिए।

स्विद्ख रूपी कुरआन का भाव मिलने के बाद उसे ढकने और झूठ बनानेवाला अत्याचारी और काफीर है - यों सुमर 32 में, और जो स्विद्क मिल के उसे सत्य के रूप ही सत्य बनाकर रख लेते है वे ही मुत्तखी लोग (अल्लाह को मन में रखनेवाल) है - यों 33 में बताया है। मुत्तखी स्वर्ग में अपने नाथ के पास स्विद्क रूपी आसन पर आसीन होंगे - यों खमरः 54-55 में बताया गया है।

खिस्त (नीति)

माइदाः 8 में विश्वासियों को बुलाकर कहा है कि 'तुम अल्लाह के लिए डटकर रहनेवाले और नीति से साधी होनेवाले बनो'। ऐसा कहने का मकसद यह है कि 'तुम कुरआन से साक्षात्कार करो' है। अन-निसाअः 135, हदीद 25 आदि सूक्तों में कहे खिस्त से मतलब कुरआन का भाव ही है। माइदाः42, हुजुरातः 9, मुंमतहिनाः 8 आदि सूक्त 'अल्लाह कुरआन से नीति पालन करनेवालों को पसंद करनेवाला है' भाव पर ही खतम होता है।

इसराअः 35, अश-शुअराअः 182 आदि सक्तों में 'तुम खिस्तवासुल मुसतखीम से नापना' कहने का अर्थ 'नीति का तराजूवाला कुरआन के भाव से नाँपना' ही है। अथवा कुरआन सूक्तों के अनुसार अपने आप को और दूसरों की तुलना करके ही, वे सत्य में है, या असत्य मैं है, यह मालूम करना चाहिए।

अमानत (उत्तरदायित्व)

प्रपंच अपने सन्तुलन बनाये रखने का तराजू और अमानता वाला कुरआन का भाव ले लेने के लिए आकाश, धरती, पर्वत आदि ने इनकार किया और फिर उस विषय में वे दुःखी भी हुए। लेकिन मानव ने उसे स्वीकारा किया, वे अविवेकी और अत्याचारी ही थे - ऐसा अहसाबः 72-73 में बताया गया है। अमानत स्वीकार करके उसे संसारवालों को न पहूँचा देनेवाले है अविवेकी और अत्याचारी। प्रंपच नाश का पाप भार उन्हीं को वहन करना पडेगा। त्वाहाः 100-101 व्याख्या देखिए। मुअमिनूनः 8, मआरिजः 32 आदि सूक्तों में यों कहा है कि विजयी होनेवाले विश्वासी, उनकी अमानत और करार सुरक्षित रखनेवाले है ।

बस्वाइर (अन्तर्नयन दायक)

अनआमः 104, अअराफः 203, जासियाः 20 सूक्तों में ऐसा कहा है कि कुरआन का भाव सारे मनुष्यों को अन्तर्नयन प्रदान करनेवाले है और अगर कोई उसका इस्तेमाल करता तो उसी को उसका फायदा होगा। कोई उसके प्रति नज़र अंदाज़ करे तो उसका दोष भी उसी आत्मा को ही है। हर एक आत्मा को उसकी कल का आसन स्वर्ग में है या नरक मे, यह दिखानेवाला है बस्वाइर। कुरआन का भाव इस्तेमाल कर के, नरक के कठोर दण्ड, स्वर्ग की अनुग्रहा भूतियाँ समझकर हर एक को यहाँ स्वर्ग बनवाना है। इस बस्वाइर के विषय में अंधे होनेवाले नरक भर दिया जायेगा - ऐसा अअराफः 179 में बताया है। कहफ 100-101 व्याख्या देखिए।

बुरहान (सबूत, खुला प्रमाण)

'कुरआन सारे मनुष्यों के लिए सबूत और स्पष्ट प्रकाश है' - यों अन-निसाअ 174-175 में बताया है। प्रत्येक विषय के लिए कुरआन का कमसे कम एक शब्द ही सही सबूत के रूप में उल्लेख कर सकनेवाले को ही विचारणा के दिन कुरआन अनुकूल बोलेगा और साक्षी बनेगा। अम्बियाअः 24 में, कुरआन का भाव को बुरहान, हख और दिकर आदि तीनों नाम में बताया गया है। बखराः 111 व्याख्या देखिए।

अन्नूर (प्रकाश)

मनुष्यों को अंधकारों से प्रकाश की ओर ले जाने के लिए प्रस्तुत किया गया ग्रंथ है कुरआन - यों इब्राहीम 1 में बताया गया है। अअराफः 157 अत-तगाबुनः 8 सूक्तों में 'जो मुहम्मद नबी पर विश्वास करते है, उन्हें मजबूत बनाते और मदद करते है, उन्हीं के साथ उतारे प्रकाश का अनुगत करते हैं, वे लोग ही विजयी होंगे' - ऐसा कहा गया। अल्लाह और कुरआन, दोनों प्रकाश होने के कारण से अल्लाह तक पहूँचने के लिए कुरआन रूपी प्रकाश की पूर्ति अनिवार्य है। अन-नूरः 35, अश-शूराः 52 देखिए। कुरआन रूपी प्रकाश से अहंकार, ईर्ष्या, स्वार्थ आदि पैशाचिक भावनाओं को जलाकर स्वर्ग तक (अल्लाह तक) वापस जाना ही जीवन का लक्ष्य है।

शाहिद (साक्षी)

अनआम- 19 में 'अल्लाह और कुरआन ही सबसे बडे साक्षी है'- यों कहा गया है। '*कुरआन, अनुकूल और प्रतिकूल साक्षी होता है*' यों नबी ने सिखाया है। जो कुरआन का पारायण करके उसके विरुद्ध जीवन बिताता है, उसके प्रतिकूल; तथा जो कुरआन को साक्षी मानकर जीवन बिताता है, उनके अनुकूल कूरआन तर्क करेगा और साक्षी बनेगा। साक्षी

रूपी कुरआन का भाव मिल जाने पर उसे छुपा देनेवाला कोई भी हो, उसे नरक ही मिलेगा - यों हूद 17 में बताया है। मुहम्मद नबी का जीवन कुरआन ही था। इसलिए विश्वासियों ने कुरआन का भाव से मुहम्मद नबी को देखकर, वह जीवन लोगों को साक्षी बना दे - ऐसा बखराः 143, हज्जः 78 सूक्तों में बताया है। बखराः 121 व्याख्या देखिए।

हिक्मत (तत्वज्ञान)

नहलः 125 में, 'हिक्मत और सबसे अच्छे उपदेश से तू अपने नाथ के रास्ते की ओर लोगें को बुला दे' कहने की हिकमत कुरआन के तत्व भरे सूक्त है। कुरआन सूक्त क्रम में जोडकर समझने की सामर्थ्य को हिकमत कहते हैं। बखरा 269 में, जिसको हिक्मत मिली है, उन्हें बडा फायदा हुआ - ऐसा कहा है। प्रपंच में होनेवाले सभी विषयों की असलियत ग्रहण कर वे ही समझ सकते है।

मौइलत (सदुपदेश)

मौइलत का मतलब, स्पष्ट भाव और तत्व भरे कुरआन सूक्तों के समान आज्ञाएँ और विरोध है। कुरआन का भाव सारे मनुष्यों केलिए सदुपदेश और जिसके मन में संदेह है उनका समाधान; तथा विश्वासियों केलिए सन्मार्ग और करुणा है - यों यूनुस 57 में बताया है। मौइलत को सदुपदेश, चेतावनी, ताकीद आदि कई अर्थ होते है। बखराः 66, आलि-इमरानः 138 व्याख्या देखिए।

शिफाहः (रोगशमन)

इसराअ 82 में 'कुरआन में विश्वासियों को रोगशमन और करुणा है, पर वह अत्याचारियों का नुकसान के अलावा कुछ भी नहीं बढ़ायेगा' - यों कहा है। कुरआन विश्वासियों को उनका विश्वास बढाने देगों - यों तौबा 124 में; और कपट विश्वासियों का मालिनता पर मलिनता के सिवा कुछ नहीं बढायेगा - यों 125 में कहा है। अनफाल 2-4, फुस्विलत 44 व्याख्या देखिए। सारे मानसिक और शारीरिक रोगों का शमन कुरआन का भाव है; तो आत्मा को न पहचानने वाले कपट विश्वासी ने रोग शमन के लिए कुरआन का शरीर सस्ते दानों में बिक रहे है। उसके जरिए वे और उनका अनुगत करनेवाले फुज्जार अपने पेटों में आग के सिवा कुछ नही भरते है - यों बखरा 174 में बताया है। अन-निसाअः 50-52 व्याख्या देखिए।

रह्मत (करुणा) फलल (उदारता)

बखराः 105, अलि इमरानः 74, अन-निसाअः 113 आदि सूक्तों मे बताये करुणा तथा उदारता का मतलब कुरआन का भाव ही है। यूनुसः 58 में नबी से कहने का आदेश देते है।

'अल्लाह की उदारता और उनकी करुणा से तुम गर्व करो, वही तुम बटोरते अन्य किसी भी चीज़ से उत्तम होता है'। *'कुरआन ही ऐश्वर्य, उसके बाद गरीबी नही, उसके सिवा ऐश्वर्य नहीं'* यों नबी ने भी सिखाया है। लेकिन विश्वासियों को ही कुरआन का भाव करुणा, ऐश्वर्य, और अनुग्रह के रूप में इस्तेमल करेंगे। आलि-इमरानः 79, अन-निसाअः 82 व्याख्या देखिए। अवश्य ही, इस कुरआन का भाव ढके कपट विश्वासियों के लिए वही दुःख का कारण है - यों अलहाखः 50 में बताया है। अअराफः 96 व्याख्या देखिए।

इमाम (आगे रहनेवाला)

तौरात और कुरआन, दोनों इमाम एवं करुणा है - यों हूदः 17, अलहाखाः 12 आदि सूक्तों में बताया है। इसराअः 13-14 सूक्तों में ऐसा कहता है कि हर एक मानव अपने अपने खुशकिस्मत-बदकिस्मत (कर्म रेखा) अपनी गर्दन पर वहन करता है। कियामत के दिन, हम उसे एक खुला और प्रकाशपूर्ण ग्रंथ पिरोकर देंगे और कहेंगाः 'तू अपना कर्मग्रंथ पढ लेना, इस दिन तेरी विचारणा करने केलिए तू ही काफी है'। कहफ:49, यासीनः 12, सुमर- 69, जासिया 28-29 सूक्तों में बताये इमाम रूपी ग्रंथ है वह। जो अपने पूरे जीवन में कुरआन का भाव ज्यादा सुनता, पढता और चिंन्तन करता है, दूसरों से बातजीत करता है, उसकी कर्म रेखा पढने लायक और तराजू पर वजन मिलनेवाला है। इसराअ 71 में कियामत के दिन सबको अपने इमाम को लेकर विचारणा केलिए बुलायेगा। तब किसको अपने दाये हाथ में ग्रंथ मिला वह अपना ग्रंथ पढ लेगा उनके प्रति ज़रा भी अन्याय नहीं दिखायेगा और 72 में जिसने इस संसार में अपने इमाम के प्रति नज़र अंदाज़ किया, वह पूरा अंधा और सन्मार्ग से विचलित ही होगा - यों कहा है। बखराः 6-7 व्याख्या देखिए।

नबी ने सिखाया कि *'तुम कुरआन को आगे चला दो, वह अल्लाह से उद्भूत और उनके ओर लौट जानेवाला है। तुम उसका पीछा छोडोंगे तो तुम्हें वह नरक में ढकेल देगा'*। वही है अनकबूत 45 में, 'कुरआन का भाव ही सर्वप्रमुख' बताने का मकसद। फुरखान 74 के अनुसार 'हमे तू कुरआन के भाव का अनुगत करनेवालों को इमाम बना दे' यों प्रार्थना करनेवाले विश्वासी ने अल्लाह से मारे गये कपटविश्वासी के पीछे नमाज नहीं पडेगी और उनको अंधे होकर अनुगत करनेवाला फुरखान 18 में बताये बुरे लोगों को इमाम होकर भी नमाज नहीं पडेगी।

मुहैमिन (सुरक्षित रखने वाला)

मुहैमिन का मतलब है सुरक्षित रखना, निरीक्षण करना, पालन करना, साथ देना आदि।

'अवश्य ही कुरआन की आत्मा को हमने ही उतारा है, हम उसे सुरक्षित रख लेंगे' - यों हिजर 9 में कहा है। इसलिए कुरआन की भाव में सृष्टियों में किसी को भी कोई परिवर्तन नही कर सकता। (कुरआन का जीवन रूपी अर्थ में, या शरीर रूपी मूल अरबी में परिर्तन नहीं ला सकेगा-ऐसा अल्लाह ने कहीं भी नहीं कहा है)। प्रचलित पूर्व वेदों में अल्लाह के सूक्त और मानव वचन मिले हुए है तो कुरआन के साक्ष्य द्वारा वे उन्हें अलग से समझ पायेंगे। अथवा कुरआन के शिक्षण के अनुसार दिखनेवाले अल्लाह के वचन है और कुरआन के अध्यापन के विरुद्ध कार्य सब मनुष्य निर्मित है। कुरआन के आगमन के बाद पूर्व ग्रथों में बदलाव नमुमंकिन बराबर कुरआन उन्हें सुरक्षित रखेगा। इसलिए कुरआन के भाव को मुहैमिन कहता है। कुरआन के भाव को विश्वासी सभी प्रकार की आफतें और दुर्घटनाओं से और नरक के नजदीकवाली ढ़ाल मुहैंमिन के रूप में इस्तेमाल करेगा। हशर 23 में चर्चित मुहैमिन अल्लाह हो तो माइदः 48 के मुहैमिन कुरआन का भाव है। आलि इमरानः 101-103 व्याख्या देखिए।

हदीस (बात)

अल्लाह के बोल -कुरआन ही-अच्छी बात है। लेकिन अल्लाह से मारे गये कपट विश्वासी को वह समझ नही पायेंगे - यों अन-निसाअः 78 में बताया है। अल्लाह की बात से सच्ची बात और किसकी है - यों अन-निसाअ 87 में और अल्लाह से बढकर सच बोलनेवाला और कौन है - यों 122 में पूछते है। अअराफः 18, मुरसलात 50 आदि सूक्त 'तब वे इस बात के बाद और किस बात पर विश्वास करता है' पूछकर समाप्त होते है। जासियाः 6 ऐसा समाप्त होता है 'तो अल्लाह और उनके सूक्तों के बाद और किस बात पर विश्वास करता है?'

सबसे अच्छी बात अल्लाह का ग्रंथ ही है और सबसे अच्छा हद्या मुहम्मद का है - यों नबी ने सिखाया है। कारण संबंध से बढकर मिलनेवाला कुरआन की व्याख्या है 'हद्या' या नबी वचन। लेकिन आज आत्मा को न पहचाननेवाले कपट विश्वासियों ने नबी वचनों को हदीस नाम से पुकारकर कुरआन और नबी वचनों को झूठ बनाते हुए दीख पडते है। या कुरआन को समझने के लिए कुरआन काफी है। मगर नबी वचन हद्या, कुरआन की व्याख्या समझने केलिए है। उदाहरण केलिए आत्मा से किये जानेवाले नमाज़ के बारे में कुरआन में बताया है। लेकिन शरीर को भी शामिल करते हुए किये जानेवाले नमाज़ उसकी व्याख्या रूपी नबी वचनों में ही है। कुरआन का भाव कायम रखने के लिए नमाज़ स्थायी रखना है - यों त्वाहा 14 द्वारा अल्लाह का आदेश है। स्रष्टा के पूरी सृष्टि का मुखपत्र कुरआन का भाव पढे बिना सृष्टियों के मुखपत्र (दैनिक, संगठन के प्रकाशन, कर्मशास्त्र ग्रंथ, साहित्य ग्रंथ, भौतिक शिक्षा

संबंधी ग्रंथ आदि) पढनेवाले नमक हराम और निषेधी होते है।

बयान (व्याख्या)

कुरआन का भाव सारे मनुष्यों केलिए स्पष्ट बयान - ऐलान - और मुत्तखियों को सन्मार्ग और सदुपेद्श है - यों आली-इमरानः 138 में बताया है। उसने (मुहम्मद नबी ने) शरीर की इच्छा के अनुसार प्रकाशित नहीं करेगा। यह उसे दिव्य बोध के रूप में मिलनेवाला दिव्य सन्देश के सिवा और कुछ नहीं-यों अन-नजम 3-4 में बताया है। कुरआन की व्याख्या रूपी नबी का जीवन और वचन अल्लाह की ओर से आये हुए है। इससे यह समझना चाहिए कि ग्रंथ में कुछ भी व्याख्या किये बिना नहीं छोडा है यों अनआम-38 में और कुरआन के भाव में सभी बातों की व्याख्या की गयी है - यों नहल 89 में बताया है। तौबा 51, यूनुस 61, हूद 6, सबअ 3, फात्विर 11, हदीद 22, तगाबुन 11 आदि सूक्तों मे आकाश, धरती और आप में कोई बात जो ग्रंथ में स्पष्ट रूप से अंकित किये बिना घटित नहीं होती यों कहा है। प्रस्तुत ग्रंथ त्रिकालज्ञान रूपी कुरआन का भाव ही है। बय्यिनात (ईश्वराज्ञा) से ही सारे रसूलों को भेजा गया है ऐसा बखरा 253, मुअमिन 50, हदीद 25 आदि सूक्तों में और पवित्र ग्रंथ की व्याख्या करनेवाला पैगम्बर है बय्यिनः (सबूत), यों बय्यिना 1-2 में बताया है। बय्यिनात रूपी कुरआन का भाव ढक देनेवाले अभिशप्त है - ऐसा बखरा 159 में और उन्हें शाप और पीडादायक दण्ड मिलेगा - यों आलि-इमरान 105 में बताया है।

सुन्नत (चर्या)

त्रिकालज्ञानी अल्लाह की चर्या या प्रर्वतन, त्रिकालज्ञान कुरआन का भाव ही है। तुम्हारे पहले चले गये समुदायों और पैगम्बरों में प्रचलित हमारा कार्यक्रम ही है यह, उसमें कोई भी परिवर्तन तू देख नहीं पायेगा यों इसराअः 77, अहसाबः 62, फतहः 23 सूक्तों में बताया है। सदा निषेधी लोग धरती पर घमण्डी रहे, सत्य को परास्त करने केलिए षडयंत्र रचे। लेकिन दूषित बडयंत्र उसके आदमी को ही प्रभावित करेगा। तब पूर्वजों में प्रचलित प्रसारित अल्लाह की चर्या के सिवा वे और किसका इंतजार करते हैं? अल्लाह की चर्या को बदलते हुए तू देख नहीं पायेगा। अल्लाह की चर्या को स्थगित करते हुए भी तू देख नहीं पायेगा यों फात्विर-43 में बताया है।

खलम 4 में अवश्य ही तू (मुहम्मद नबी) महत्वपूर्ण स्वभाव में है-यों कहने में महत्वपूर्ण स्वभाव का उद्देश्य कुरआन का स्वभाव है। मुहम्मद नबी के स्वभाव के बारे में पूछनेवालों से पत्नी आइशा बोली-'*उनका स्वभाव कुरआन है*। यानी नबी चर्या कुरआन ही है-यही

मतलब है'। अल वाखिअ-82 में कहे अनुसार कुरआन के भाव की उपेक्षा करना अपने खाना बनाये कपट विश्वासी और उनका अनुगत करनेवालों ने सृष्टि द्वारा लिखित कर्मशास्त्र ग्रंथ और मदहबों का (दीन से दूर गये) अनुगत करते है। सबसे बडा अनुग्रह रूपी कुरआन का भाव, निषेधी बदल डालने के कारण बातूनीयों का घर नरक कुण्ड ही उनको है यों इब्राहीमः 28-30 में वादा दिया गया है। आज का मुसलमान लोग, कुरआन का भाव ढक लेगे तो उसे न ढकनेवाली दूसरी जनता को वह सौंप दिया जायेगा-यों अनआम 89 में बताया है। अन-निसाअः 133 व्याख्या देखिए।

रिसालत (सन्देश)

अल्लाह का सन्देश (खत) रूपी कुरआन का भाव सारे लोगों तक न पहूँचाकर ढक देनेवाली जनता को अवश्य ही अल्लाह सन्मार्ग पर ले चलेंगे नही यों माइदाः 67 में बताया है। अन-नहलः 107 व्याख्या देखिए। नूह, हूद, स्वालिह, शुऐब आदि नबी सब अपनी अपनी जनता को अल्लाह का सन्देश (खत) भेज देकर उन्हें उपदेश करने की बात क्रमशः 62, 68, 78, 79, 93 अराफ सूक्तों में बताया है।

स्वर्ग से सर्वस्रष्टा की सारी सृष्टियों के लिए सन्देश है कुरआन का भाव। जिन्हें वह प्राप्त हुआ, वे उसे पढकर-समझकर जीवन से जवाब नहीं देते तो पिशाच के साथ नरक में जायेंगे। मौलिक जीवन में एक लाभदायक खत (वीज़ा, नौकरी का नियुक्त पत्र आदि) किसी भी भाषा में हो, वह ढूँढकर समझकर उसके अनुसार काम करने के लिए मनुष्य सावधान है। लेकिन स्रष्टा का खत पाकर उसे स्वयं इस्नेमाल नही करनेवाला तथा दूसरों के इस्तेमाल करने के लिए नहीं देनेवाला नमकहराम और खोया हुआ आदमी होगा।

इल्म (ज्ञान)

अवश्य हमारी पूरी जानकारी से व्याख्या किये गये ग्रंथ हम, उनके लिए लाये हैं-यों अअराफः 52 में, और अल्लाह के गुलामों में कुरआन का भाव जिनको है, वही उनसे डरेगा यो फात्विरः 28 में बताया है। कुरआन का भाव रूपी ज्ञान के बिना अल्लाह के विषय में झगडनेवाले लोगों में है। वे सन्देह पैदा करनेवाला पिशाच का पीछा करते हैं यों हज्जः 3, 8 लुखमान 20 सूक्तों में बताया है। स्रष्टा से असली ज्ञानवाला कुरान का भाव हो तो ही अन्य कोइ भी ज्ञान सही दिशा में फलदायक ज्ञान होगा। मनुष्यों में सिर्फ कुरआन का भाव जाननेवाले ज्ञानी ही साक्ष्य करेगा कि अजेय और युक्तिवान अल्लाह के अलावा और कोई इलाह नहीं यों अलि इमरान 18 में बताया है। अथवा उनका साक्ष्य ही साक्षी रूपी कुरआन

साक्ष्य करेगा यहीं मतलब है। ज्ञानी और आज्ञानी बराबर कैसे होंगे यों सुमर 9 में पूछते हैं। लेकिन लोगों में अधिकांश कुरआन के भाव से बेखबर है इस भाव से ही खसस 57, सबअ 28, 36, मुअमिन 57 आदि सूक्तें समाप्त होते हैं।

इदन (अनुमति-पत्र)

अल्लाह का अनुमति-पत्र कुरआन के भाव से ही कोई विश्वासी बन पायेगा यों यूनुस 100 में, और अपने अपने नाथ के अनुमति पत्र के बिना कोई सन्मार्ग में नही रहेगा यों इब्राहिम 1 में बताया है। अल्लाह का अनुमति पत्र से अनुगत करने के अलावा हमने किसी पैगम्बर को नही भेजा है यों अन-निसाअः 64 में भी बताया है। अल्लाह का अनुमति पत्र का उद्देश्य कुरान का भाव है। तो अल्लाह का अनुमति पत्र और वचन रूपी कुरआन का एक भी पद से समर्थन न देनेवाला कोई भी नबी वचन स्वीकारने योग्य नही। क्यों कि वह मनुष्य पिशाच नबी के ऊपर लाद दिया हुआ होगा। अल्लाह का अनुमति पत्र कुरआन का भाव से न होकर कोई भी पैगम्बर दिव्य चमत्मार नही दिखा पायेगा यों रअद-38, इब्राहीम-11, मुअमिन 78 आदि सूक्तों में देख सकते हैं। ईस नबी ने जो मुर्दों को जिन्दा कर दिया तो अल्लाह का अनुमति पत्र कुरआन के भाव से था। स्वंय सिफारिश करने और करवानेवाला कुरान के भाव से न हो कर अल्लाह के पास सिफारिश करने के लिए और कौन है? यों बखरा 225 में पूछते है। स्रृष्टियों का आपसी सबंध, स्रृष्टा का अनुमति पत्र कुरआन की छँव में होना चाहिए। नही तो वे परलोक में परस्पर विरोधी बनेंगे। नबी ने सिखाया कि *जब तक तुम्हारी इच्छा, मै जो लाया हूँ उनका अनुगत करते, तब तक तुम में से कोई भी विश्वासी नहीं होगा।* अल्लाह का अनुमति पत्र कुरआन के भाव से न होकर आकाश भूमि पर नहीं गिरता यों हज्ज 65 में बताया है।

अम्र (आदेश)

एक अनुगृहीत रात में तत्व भरे आदेशों से युक्त कुरआन का भाव, हमारी तरफ की आज्ञा के रूप में प्रस्तुत किया है-यों दुखान 1-5 में बताया गया है। आकाश और धरती उनकी आज्ञा रूपी कुरआन के भाव से ही स्थायी रहता है यों अर-रूम 25 में, और तुम्हे रात, दिन सूर्य, चन्द्र, तारे सब उनकी आज्ञा से अधीनस्थ बना दिये-यों नहल 12 में बताया है। देवों को अल्लाह की आज्ञा की तरफ से रूह को लेकर उनके गुलामों में से उनके आग्रह करनेवालों पर रख देते है यों नहल-2 में, और अश-शूरा 52 में तुम्हें उनकी आज्ञा से आयी एक रूह को दिव्य सन्देश के रुप में दिया है- बताया है।

हुसना (सबसे अच्छा)

सबसे अच्छा कुरआन का भाव सत्य करनेवाले को उसके सारे काम आसान कर देंगे-यों अल्लैल 6-7 में और सबसे अच्छा कुरआन का भाव झूठ बनाकर उपेक्षा करनेवाले को उसके सारे कामों को हम मुशिकल बना देंगे-यों अल्लैल 9-10 में बताया है। सब से अच्छा कुरआन के भाव से अल्लाह की ओर बुलाए - यों फुस्सिलत:33 में, और सबसे भला कुरान के भाव से बुराई रोक देना यों हूद 114 में, और सबसे भला कुरआन के भाव के अलावा और किसी से वेदान्तियों से संवाद नही करना यों अनकबूत: 46 में कहा है। कुरआन के भाव पर चलने वाले को ही मुहसिन (हमेशा अल्लाह को देखकर जीनेवाला) कहते है। कौन है, जो अपने मालिक की पुरान का सबसे भला कुरआन को भाव से जवाब देता है, उनमें भलाई है यो अर-रअद 18 में, और कुरआन के भाव पर जो जीता है, उनमें सबसे अधिक भलाई है, और भी भलाई की वृद्धि भी होगी। उनके चेहरो पर न तो कलौस छाएगी और न जिल्लत। वही स्वर्गवासी है। वे उसमें नित्यवास करेंगे यो यूनुस 26 में, और कुरआन के भाव में जो घुसे, वे नरक से दूर ले जायेगों यो आम्बियाअ 101 में कहा है।

उर्वतुल वुस्खा (मज़बूत रस्सी)

कौन, वह जो अल्लाह को सर्वस्व समर्पित कर उनके दर्शन कर चलता है, वह मज़बूत रस्सी को कसकर पकडनेवाला है-यों लुखमान -22 में, और, कौन, वह जिसने पैशचिक शक्तियों को इनकारकर अल्लाह पर विश्वास किया उसने अटूट और मजबूत एक ररसी को ही कसकर पकडा है यों बखरा: 256 में कहा है। तुम्हें अल्लाह को ध्यान से कसकर पकड लो यों हज्ज 48 में, और, कौन है, वह जिसने अल्लाह को कसकर पकडा है, वह सन्मार्ग पर आ गया यों आली इमरान 101 में बताने का मतलब आली इमरान 103 में बताये अल्लाह की रस्सी रूपी कुरआन का भाव कसकर पकडकर एकसंध बनना ही है।

तफसीर (व्याख्या)

कुरान सूक्तों के अलग अलग काल की परिस्थितियों में हुई व्याख्या है तफसीर। वे तुम्हारे पास कोई भी प्रश्न (उपमा) लेकर नहीं आते। उसका सही जवाब अंतिम दिन तक के लोग ऐसा कोई प्रश्न न करे, उस प्रकार की सबसे अच्छी तफसीर (व्याख्या) तुम्हे दिये बिना यों फुरखान-33 में बताया है। सूक्तों में बताये असली जवाब का मतलब नहल-125 में बतायें 'तत्व ज्ञान', और सबसे अच्छी व्याख्या उद्देश्य नहल-125 में बताये 'माउलत्तुल हसनत' है। वह फुस्सिलत- 41- 42 में बताये 'मिथ्या रहित, अजेय' अद्दिकर (कुरआन की आत्मा) ही है।

अन-निसाअः 105 में अवश्य तुम पर हमने यह ग्रंथ निकाला, अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक लोगों के बीच विधिनिर्णय करने के लिए है-यों बताया है। कुरआन की व्याख्या; कुरआन सूक्तों और नबी वचनों से ही करना है। कुरआन की व्याख्या, अल्लाह अपनी सृष्टियों से बतलाता है, अपनी सृष्टियों से प्रचार करवाता है तो फिर व्याख्याकार को कभी ऐसा नहीं कहना चाहिए कि 'यह मेरी राय है'। उल्टे, त्वाहा 114 के आज्ञा समझकर 'मेरे नाथ, मेरा ज्ञान बढा दीजिए' - यों प्रार्थना करके निष्पक्षवान होकर, केवल अल्लाह केलिए कुरआन की व्याख्या करनी चाहिए।

कुरआन किसलिए?

कुरआन के सारे भाव से नरक में जानेवाले विभाग जैसे काफिर, अत्याचारी, पागल, बदमाश, नाशकारी, लक्ष्यबोध खोये हुए लोग और बिना होशवाले लोगों को जानकर उनकी आदत और कर्मों से अलग रहके कुरआन की रोशनी में विश्वास को रूप देकर, इधर स्वर्ग बनाके, मरने के बाद उस स्वर्ग में वापस जाने का उपकरण ही कुरान का भाव।

प्रार्थनाओं का उतर मिलने केलिए और कर्मों को अपनाने केलिए दो उपाय बताये है। (1) कुरआन का भाव सही तरीके से अपनाना। (2) कुरआन का भाव सर्मार्पित अल्लाह पर ठीक तरीके से विश्वास करना। 6236 सूकतों के भाव समर्पण किये अल्लाह को जानकर विश्वास करने के बाद ही पढ लिखा आदमी विश्वासी बनता है। उनकी प्रार्थनाओं के उत्तर मिलते है। नमाज, रोजा, जक्कात और हज्ज आदि कोई भी कर्म उन्हीं से स्वीकार किया गया है। हज्ज मनुष्यों से आज्ञापित है, इसलिए विश्वासी न होकर भी हज्ज कर सकता है। मगर विश्वासी बनकर किया गया हज्ज ही स्वीकारा जाता है। काफिरों की प्रार्थना असायता को ही वढायेगी ऐसा अर-रअद 14 और मुआमिन 50 में बताया है। एसा काफिर लोग नमाज करके रोजा लेके जुर्माने के रूप में नरक कुण्ड पानेवाले है। अल्लाह का अनुमति पत्र कुरआन के भाव के बिना कोई विश्वासी नही बनता, ऐसा कहा है-युनुस 100 में। किसी के भी, कोई भी काम स्वीकार करने केलिए कुरआन के किसी भी एक सूक्त भाग होना अनिवार्य है। अन-निसाअः 174-175 जोडकर पढिए।

अल्लाह पर विश्वास

आरंभ और अवसान के बिना, उपमा और उदाहरण रहित, एकाधिप, स्वेच्छाधिप, सर्वाधिप अल्लाह किसी का आश्रय न चाहनेवाला और सभी का आश्रय बननेवाला है। बिन

जोडी या साथी उस अकेले को बेटा नही। वह किसी का बेटा भी नही। वह उसको समझनेवाले और न समझनेवालों पर दया करनेवाला परमकारुणिक और माननेवालों पर विशेष रुप से करुणा करनेवाला करुणा सागर है। उसकी ओर, यानी स्वगी की ओर का एक रास्ता; और शैतान की ओर, यानी नरक की ओर के विभिन्न रास्तों को अलग करनेवाले कुरआन के भाव स्वर्ग से ही पढाकर मनुष्य को स्वंतत्र बनाके भूमि में उसने ही नियुक्त किया है। आत्मा के भोजन, वस्त्र और दृष्टि रूपी कुरआन के भाव का इस्तेमाल करके खुद को पहचानकर, जीवन के लक्ष्य को पहचानकर, 'विश्वासी बने अल्लाह' का प्रतिनिधित्व यहाँ करनेवालों को ही उनके इह-पर जीवन की जीत प्राप्त होती है। अच्छे और बुरे को अलग करनेवाला कुरआन का भाव मिलकर, उसे न इस्तेमाल करके और दुसरों को इस्तेमाल करने को न देके छुपादेने वाले, 'काफिर बने शैतान' के प्रतिनिधित्व यहां करनेवाले है और पर लोक जीवन में हारे हुए है। निष्पक्षवान अल्लाह ने दो रास्ते में से एक रास्ता ढूँढ निकालने की स्वतंत्रता मनुष्य को दी है। उसे रहमान, निष्पक्षवान माननेवाले विश्वासी लोग दुनिया को उसका संतुलन बनाये रखने का तराजु और अमानत रूपी कुरआन का भाव लोगों की ओर ले आनेवाले कर्मों में मनसा-वाचा-कर्मणा रहके अल्लाह की मदद करते रहेंगे। 'मनुष्य-पिशाच' बने कपट विश्वासी लोग, और उनका अंधानुकरण करके अल्लाह के अधिकार में भाग लेनेवाले कुफ्फार; दोनों अल्लाह के प्रकाश को छिपाकर शैतान की ही मदद करते है। स्वफ़फ 8-14 व्याख्या देखिए।

संक्षेप में, 6236 सूक्तों का समर्पण करनेवाला अल्लाह को दिल से देखते ही उनपर विश्वास रूप लेता है। अल्लाह को ढूँढ निकालने का जीवन लक्ष्य साकार करने में, चलने, बैंठने और लेटने मे हमेशा कहीं भी अल्लाह का स्मरण जारी रखने केलिए कुरआन के भाव से ही संभव सकता है। केवल वही अल्लाह के प्रतिनिधी बनके गलती न करके जीवन बिता सकते है। आलि इमरान 190-191 देखिए। चाहे कोई पुरुष हो या नारी, जो सत्कर्म करता है, वह विश्वासी भी है तो हम उनको यहाँ एक पवित्र जीवन बिताने देगे; और परलोक में उनसे किसे गये कर्मों से सबसे अच्छे काम के बारे में उपहार भी दिया जायेगा-ऐसा अन-नहल 97 में कहा है। अन-निसाअ 123-124 व्याख्या देखिए।

कुरआन में 99 सूक्तों में चर्चित शैतान को पहचानकर, उसके मार्ग को छोडकर, जीवन केवल अल्लाह के लिए बनाना के लिए ही कुरआन का भाव है। अद-दारियात 55 में यों कहा है कि, मनुष्यों और जिन्नों का सृजन मै ने मेरा इबादत करने केलिए किया है। 'इबादत'

का मतलब है सारा जीवन ही व्रत रखना, अनुसरण, सेवा इत्यादी। जब अल्लाह के स्मरण हो तो इबादत अल्लाह की ओर है। अल्लाह का स्मरण के बिना जीवन शैतान केलिए हो जाता है। अल्लाह को मालिक मानकर सारा जीवन उसको न समर्पण करनेवाले उसकी उपसना करने से कोई प्रयोजन ही नही बल्की शाप का नरक कुंड जुर्माना के रूप में मिल जायेगा। शैतान की सेवा करके, अल्लाह के सूक्तों से बहस करनेवाले इस तरह की सब 'मुजाइद' ही सबसे बडा मुशरिक है। इबादत का मतलब 'आराधना' नही। आराधना की सूचना करनेवाले शब्द है-मनासिक, नुसुक आदि। बखरा-128, अनआम-162 व्याख्या देखिए।

देवदुतों पर विश्वास

रोशनी से बनाये विशेष प्रकार की सृष्टि ही देवद्त। वे 'बिना किसी निषेध के' सर्वस्रष्टा अल्लाह की आज्ञा का पालन करनेवाले सैनिक है वह। प्रपंच का शासन वे इन देवदूतों से कर रहे है। पैगम्बरों को देवदुतों द्वारा ही कुरआन ले जाते है। (अर-रअद-13, अन-नहल - 2, कइफ- 82, मरियम - 64 व्याख्या देखिए) कुरआन में 99 सूक्तों में देवदूतों के बारे मे कहा गया है। मनुष्यों से देवदूतों का सबंध क्या है, उनका फर्ज क्या है, रक्षा करनेवाले देवदूतों की आदत क्या है, सज़ा देनेवाले-की आदत क्या है, किसके लिए वह अल्लाह के पास माँफी माँगेंगे, किस पर उसका शाप उँडेल जायेंगे, जिन्न और उनमें क्या फरक है, आदि बातों कुरआन के भाव से समझने के बाद ही देवदूतों पर विश्वास होगा।

देवदूतों से विभिन्न होकर 'अग्नि की ज्वाला' से बनाये गये है 'जिन्न'। उनको मनुष्यों की तरह, विरोध करने या मान लेने की स्वतंत्रता है। मनुष्यों में रूह का साथी बनके शैतान की एक औलाद की नियुक्ति हुई है। हर किसी में रहनेवाले इस जिन्न साथी को कुरआन के भाव से विश्वासी बनाके ही कोई विश्वासी बनके जीवन बिताने और स्वर्ग में वापस जा सकता है। अन-नास 4-6 में कहे, रहस्य बनके दुरबोधन करके पीछा हटनेवाले जिन्न साथी को विश्वासी न बनाता तो वह मिथ्या वचनों को सच जैसे और सत्य कुरआन के भावों को मिथ्या जैसे प्रतीत करायेगा। उसी तरह उसको नरक की ओर का हजार में 999 रास्ते अलंकार बनाके दिखायेगा। मनुष्यों को एक कंप्यूटर से उपमा की जाये तो, जिन्न साथी को वैरस से, और कुरआन के भाव को आन्टी वैरस प्रोग्राम से तुलना करके बात को ज्यादा समझ सकेंगें है। खाफ 27-30 देखिए।

ग्रन्थों पर विश्वास

कुरआन का पूरा भाव समझकर ही ग्रंथों का विश्वास रुप लेता है। अल्लाह से भूमी की

ओर विभिन्न काल में प्रस्तुत हुए वेद अगर उस समय की विधी की मनाहियों से भरी है, तो उनको सत्य बनाके देखभाल करनेवाला कुरआन का भाव सारे मनुष्यों को अंतिम दिन तक सारी बातों की व्याख्या करण किया गया, अजेय, अतुल्य और न बदला सकनेवाला ग्रन्थ है। ग्रन्थ पढाये जानेवाले होने से ही मनुष्य बाकि सृष्टियों से उतकृष्ट बने है। ग्रन्थ से प्रोढ और अभिमान होके आत्म निर्भर बनके, भूमि में सब कहीं किसी से न डरके, सिर उठाके जीवन बिताना है। यह है आली-इमरान 79 में, 'जैसे तुम ग्रन्थ से पढाये जाते है, वैसे तुम अपने बच्चों को और दूसरों को पढाते रबवाले होने चाहिए'- कहने का मतलब। भूमि को नष्ट करनेवाले सारे पैशाचीक कार्यों से मनुष्य को रोकने का उपकरण रूपी कुरआन का भाव को छिपाकर जो जीता है, उनको इह में निन्दा और पर में कठोंर दण्ड ही वादा किया गया है। वे कल अंधे, बहरे और गुँगे बनके अपने चेहरे पर में नरक की ओर खींच जायेगे और चेहरो पर सबसे बुरी हालत में रहनेवाले है-ऐसा इसराअ 97-98, फुरखान 34 आदि सूक्तों में कहा है।

निश्चय, तुम्हारे लिए हमने एक ग्रन्थ अवतरित कर दी है, उसमे तुम्हारे ही अनुस्मरण किये है, तो क्या तुम सोचनेवाला नहीं होते? ऐसा अम्बियाअ 10 में अल्लाह ने पुछा है। *जिसने अपनापन को पहचाना, उसने अपने नाथ को पहचाना* - यों नबी ने सिखाया है। कुरआन के भाव से ही खुद और मालिक को पहचान सकता है। नबी ने ऐसा कहा है कि '*तुम में से सबसे उत्तम व्यक्ति, कुरआन का भाव पढने और पढानेवाला है*; और '*कुरआन जिसका विरोध किया है, वह करने वाला कुरआन पर विश्वास नही करता'*। कुरआन के विरोधों का वर्जन करने केलिए उसका भाव समझना अनिवार्य है। नबि ने सिखाया कि *आखिरी समय पर कुरआन का भाव बुलन्द किया जायेगा। कुरआन से विराम चिह्न, बिन्दी को छोडकर कुछ नही रहेगा, इस्लाम में उसका नाम ही रहेगा। उनके मस्जिद बडे मकान और लोगों से भरे रहेंगे। लेकिन उधर सन्मार्गी कुरआन का भाव नही रहेगा। उनके पंडित लोग आसमान के नीचे सबसे बडे निकृष्ट प्राणी बन जायेंगे*। 'हुदैफतुल यमानी' के सवाल का उतर देके अंतिम दिन तक के मनुष्यों को मुहम्मद नबि ने पढाया कि 'विश्वासी का इमाम और संध के अभाव में, अनपढ़ विश्वासी लोगों ने जंगल में जाके किसी पेड के मूल को दांत से काटते हुए मौत तक रहना चाहिए'। 'मगर पढे-लिखे विश्वासी लोगों ने कुरआन का भाव चर्वण दाँतों से दबाकर काटते रहने के लिए' भी नबी ने सिखाया है। बखरा 285, अन-निसाअ- 136 व्याख्या देखिए।

पैगम्बरों पर विश्वास

सभी पैगंबर मनुष्यों में से है। वह सब स्रष्टा को तृप्त जीवन रीति यहां बिताकर दिखाने के लिए उससे नियुक्त किया गया है, और सब एक ही जीवन व्यवस्था बने इस्लाम में आये है। बखरा -136, अलि इमरान-19, 85 व्याख्या देखिये। 1,24, 000 से ज्यादा नबीयां आये मगर उसमें सिर्फ 313 नबियां ही पैगंबर है। नूह नबि पहला और मुहम्मद नबि आखिरी पैगबंर है। नबियों में और पैगम्बरों में सिर्फ 25 के बारे में कुरआन में नामोल्लेख हुआ है। हदीद 25 में कहा है कि, सारे पगम्बरों को ग्रन्थ दिया गया है। मगर नबियों ने पैगम्बरों को दिया गया ग्रन्थ 'जी करके दिखाया' है। नबियों में कुछ मारे गये, मगर पैगम्बरों में कोई भी मारा नहीं गया था। कुरआन का पूरा भाव से उनके जीवन को पहचानकर अनुगत करके उसको सत्य बनाने से ही पैगम्बरों पर विश्वास रूप लेता है।

सारे ग्रन्थों का भाव कुरआन में होने से सारे नबियों और पैगम्बरों का जीवनचर्या आखिरी पैगम्बर मुहब्बद नबि में सम्मिलित है। अहसाब-40, बय्यिना-3 जोडके पढना है। अअ्राफ-158, अम्बियाअ -107, सबअ 28 आदि सूक्तों में कहा गया है कि नियुक्ति से लेकर आखिरी दिन तक के सारे मनुष्यों की ओर मुहम्मत नबी को भेजा गया है। बखरा-146, अनआम 20 आदि सूक्तों में कहा गया है कि जिनको कुरआन मिला है वे मुहम्मद नबी को अपने बच्चों से ज्यादा जानते है। बखरा-143, हज्ज-78, आदि सूक्तों में मसल्मान लोगों ने को नबी का जीवन कुरआन के भाव से समझकर लोगों में साक्षी बनाके जीवन बिताने का आदेश दिया गया है। मगर कुरआन का भाव छुपाकर, पैगम्बरों के नाम रखकर, बेष धारण कर, दूसरे जन विभागों के सामने पैगम्बरों को बुरी तरह प्रस्तुत करके, उनको बेरहमी से मार रहे है आज मुहम्मद नबी के लोग। ऐसे वह तीसवाँ झूठेवादी मसीहुद्दज्जाल को ले आनेवाले हो गये है। फुरखान 18 में कहे गये इस 'बुरे लोगों' के खिलाफ फुरखान 30 के अनुसार परलोक में मुहम्मद नबी कुरआन ले आकर अर्जी हासिल करेगा। जब मनुष्यों में, कुरआन के भाव से 'मुहम्मद नबी के जीवन' को समझकर, उसका साक्षी बनाके जीनेवाला एक भी विशवासी कहीं न हो, तब लोकावसान हो जाऐगा । अनफाल 33 व्याख्या देखिए।

परलोक पर विश्वास

कुरआन के 6236 सूक्तों की तीनों में एक सूक्तें, यह व्यक्त करता है कि मनुष्यों के जीवन के पाने खोने का मोल करने केलिए एक दिन निश्चित किया गया है। उस दिन, जीवन की चौथी अवस्था (पंद्रह साल की उम्र से मौत तक जीवन) का हर पल के बारे में आदमी और औरत को अलग अलग होकर मालिक के सामने जवाब देना पडेगा। उस बोध में जो यहाँ

गुजरता वही परलोक पर विश्वास करनेवाला है। इसराअ 36, यासीन 65, फुस्सिलत 19-24, सलसला 4-5 आदि सुक्तों में कहा हे कि इस बोध के बिना जीवन बिताने से अपनों का कान, नजर और त्वचा सारे उनके खिलाफ कल गवाह बन जायेंगे। बखरा 4 में कहा है कि जीतनेवाले मुतखी पर लोक पर उत्तमविश्वास वाले है। परलोक पर न विश्वास करनेवाले पागल आदमी कल अपने नाथ के सामने खडे होके, 'हमारे नाथ, हम ने दिल से देखा है, (नरक देखा, अत्तकासरु 6-7) हम ने नरक का गर्जन सुना है, हमें सतकर्म करने केलिए एक बार फिर इह लोक में वापस भेजिए, निश्चय हमें उत्तमविश्वास हुआ' ऐसे रोने का द्दश्य सजदा 12 में चेतावनी दी है। फातिहः 3 व्याख्या देखिए।

कुरआन के भाव से विधि का आदेश न करने से ऐहिक लोक में किसी भी विषय में सौ प्रतिशत न्याय असंभव है। इसलिए सौ प्रतिशत न्याय संभव बनाने का एक विधी दिवस मनुष्य की छठी अवस्था के रूप में निश्चित की गयी है। सुमर 69-75 में कहा है कि उस दिन कुरआन के भाव से विधि का आदेश दिया जायेगा। न्याय का तराजु स्थापित करनेवाले उस विधि के दिन में बदलना नामुमकिन है। यह समझकर 'कभी गलत हो जाये' ऐसी शक रहके एक बात से मनसा वाचा कर्मणा हटके रहनेवाले है सतर्कता बरतनेवाले। वह लोग न्याय का तराजु कुरआन के भाव का इस्तेमाल करके, उनके कामों को इधर ही तुलना कर जाता है। नहल 64, हशर 18 व्याख्या देखिए। मगर अल्लाह को निष्पक्षवान न माननेवाले कपट विश्वासी एसा कहेगा कि 'जिस बातों में लोग विभेद कर रहे है, उस में अल्लाह का फैसला हो जायेगा'। ऐसे वह, उनकी विचारणा परलोक की ओर बढाती है।

भलाई और बुराई अल्लाह से है-ऐसा विश्वास

सारी आत्माओं को भलाई और बुराई दी गयी है। भलाई अल्लाह से और बुराई शैतान से है। अल्लाह की याद होने से भलाई आती है। अल्लाह को भूलते समय मनुष्य अपने जिन्न साथी शैतान की पकड में आ जाते है, तब बुराई लग जाती है। हशर 23 में बताये 'विश्वासी बने अल्लाह' को, कुरआन के भाव से दिल में जो रखता है, उसे शैतान से बुराई या आफत न आयेगी। अनफाल 24 के अनुसार विश्वासियों के दिल में अल्लाह रहते है। लेकिन जिन्न साथी को कुरआन के भाव से विश्वासी नहीं बनते, सच निषेधियों के मन में पिशाच ही रहता है। इसलिए उन लोगों से बुराई ही आती है। कहफ 103-105, फुरखान 21-23, मुहम्मद 8-9 सूक्तों में कहा है कि उनके सारे कर्म बेकार हो गये है। सारी वस्तुओं के लगाम का नियंत्रण अल्लाह के हाथ में होने से किसी भी सृष्टि से किसी प्रकार का तंग उसकी अनुमति के बिना

किसी को न होनेवाला है। अत्याचारीं शासक चोर, लुटेरा, आदि मनुष्यों से; या पागल कुत्ता, सांप, जंगली जानवर, रोगाणु आदि जीवजालों से; या बन्दूक, वम, जहर आदि अचेतन वस्तुओ से; या गाडी का हादसा, बिजली, भूकँम्प आदि प्रतिभासों से अल्लाह को जिम्मीदारी देनेवाले, कुरआन के भाव को ढाल बनाके इस्तेमल करनेवाले विश्वासी को कोई भी बुराई नही लगेगी। हूद 56, लुखमान 22, अलख 15-16 व्याख्या देखिए।

फिरऔन, हामान, खारून आदि बदमाशों के प्रतीक रूपी आज के कपट विश्वासी, अगर उनको एक भलाई मिली तो वह अपनी ताकत मानकर गर्व करके उसमें ज्यादा घमण्डी हो जाते है। मगर विश्वासी लोग ताकत और प्रताप, सारे अल्लाह के मानकर ज्यादा विनम्र हो जाते है। अन-निसाअ 78-79 व्याख्या देखिए। कपट विश्वासियां ने यातना होने पर दूसरों पर आरोप लगाते है। मगर विश्वासी लोग, वह अपने ही गिराव से अल्लाह ने ऐसा किया समझकर अल्लाह की ओर - कुरआन के भाव की ओर - ही मुड जाते है। आकाश और भूमि में और उसके बीच के मनुष्यों और सारे चराचरों में होनेवाली सारी बातें स्रष्टा से पूर्वनिश्चित है और वह एक ग्रन्थ में अंकित है - ऐसा कहा है हदीद 22 में। विश्वासी लोग त्रिकालज्ञान कुरआन के भाव का इस्तेमाल करके उनका फैसला इधर ही बदल देता है। हिजरः 99, अलहाखाः 51 व्याख्या देखिये। वही मतलब है जो नबी ने पढाया कि *'प्रार्थना के बिना फैसला बदल नही सकता'*।

यासीन 70 में कहा है कि जीनेवालों को चेतावनी देने केलिए और काफिरों पर न्याय करने केलिए ही कुरआन अवतरित किया है। नबी के काल में निषेधी को एकत्रित कुरआन नहीं मिला था। वह सिंहगर्जन सुनकर डरके भागनेवाले जंगली गर्दभों की तरह (मुद्दसिर 49-51) कुरआन के भावों से डरके भाग रहे थे। मगर जैसे गधा बोझ झेलता, वैसे कुरआन का वहन करनेवाले आज के मुसलमान लोग कुरआन के भाव से भागने के साथ जीनेवालों को चेतावनी देने के बदले मरे हुओ के लिए पारायण कर रहे है। अर-रुँ 52-53 में ऐसा कहा है कि तू मरे हुओं को, पुकार न सुनकर पीठ दिखाये जानेवाले बहरों को, और बुरी राहों पर अंधे बनके विचारणा करनेवाले अंधों को न सुनाएगा; हमारे सूक्तों पर विश्वास करके हमें सर्वस्व समर्पण करके जीनेवालों को ही सुनाऐगा। *'नमाज़ में हो, तो भी भाव न जानकर कुरआन का पारायण करने पर, जैसे धनु से तीर छोडनेवाली तेजी वैसे दीन से दूर जा गिरेंगे और वह पढे सुने कुरआन उनके खिलाफ गवाही देगा'* यह जो नबी ने सिखाया, उसे वे नही मानते। अन-निसाअ 43, अनआम 36 व्याख्या देखिए।

कौन है कुरआन समर्पित काफिर?

अन-निसाअ 150-151 में कहा है कि कुरआन के भाव प्राप्त होने के बाद उससे अल्लाह पर ठीक रूप में विश्वास न करनेवाले, कुरआन को स्वीकार करके नबी के वचनों को न स्वीकार करनेवाले, अल्लाह के दूतों में कुछ को स्वीकार करके कुछ को न स्वीकार करनेवाले, कुरआन के सूक्तों में कुछ स्वीकार करके कुछ की उपेक्षा करनेवाले, मक्का में प्रस्तुत किये गये सूक्तों को स्वीकार करके मदीना प्रस्तुत किये गये सूक्तों को न स्वीकार करनेवाले, यानी सारे कुरआन के भाव को स्वर्ग का टिकट मानके (तद्किरा) न इस्तेमाल करनेवाले लोग ही असल में सत्य निषेधी है। ऐसे काफिरों को कठोर दण्ड तैयार कर रखा है। कुरआन के सूक्तों से घृणा करके 'यह कुरआन तुम नही सुनना, तुम अपशब्द बनाओ, तो तुम जीत पाओगे' ऐसा कहके आम लोगों को कुरआन के भाव से हटानेवाला, अल्लाह और विश्वासी लोगों के शत्रु और कपट विश्वासी बने नेता ही अगर फुस्विलत 26 में कहे काफिर है तो उनका अंधानुकरण करनेवाले साधारण मुसलमान लोग है 29 में बताये काफिर। कुरआन के सूक्तों आ मिलने के बाद उसकी उपेक्षा करनेवाले और विद्वता का गर्व करनेवाले खुद के खिलाफ मरते वक्त गवाह बन जायेगे कि "हम काफिर थे"-ऐसा अअराफ 37 में कहा है और विचारणा दिवस में भी गवाही बन जायेंगे ऐसा अनआम 130 में कहा है। इन दोनों विभागों के मरते वक्त अल्लाह उनसे ऐसा कहेगा कि "नही जब तुमको मेरे सूक्त मिल गये ज़रूर, तब तुमने उसे ठुकरा दिया और घमण्डी बन गये, तू भी काफिरों में है" यों सुमर 59 में कहा है। इसमें खुद को पंडित और योग्य होने का अंहकार करनेवाले कपट विश्वासी लोग अन-निसाअ 145 के अनुसार विचारणा के बिना नरक की सबसे निचले खण्ड में धकेल दिये जायेंगे तो कुरआन का भाव ठुकरा देनेवाले काफिर लोग सुमर 71 के अनुसार विचारणा के बाद झुण्ड झण्ड होकर नरक की ओर ले जायेगे। कहफ 100 और 101 में कहा है कि कुरआन का भाव से इस लोक में आँखों पर ढककन वाले और कुरआन का भाव न सुननेवाले काफिर है। वे कल अंधे बनके फिर जन्म लेंगे ऐसा कहा है त्वाहा 124-127 में। मुल्क 6-11 जोडके पढिए। अल्लाह के संदेश रूपी कुरआन का भाव दुनियावालों तक न पहुँचाकर ढक देनेवाले जनता को अल्लाह के सनर्मांग की ओर जरूर न ले जायेंग; इस भाव के साथ ही माइदा 67 का अंत होता है। "सूरा काफिरून" के द्वारा नबी से और विश्वासी लोगों से माँग की है कि कुरआन के भाव में अल्लाह को छिपाकर शैतान की सेवा करनेवाले काफिरों से ऐसा कहकर दूर रहो कि "तुमको अपनी जीवन रीति, मुझे यतार्थ जीवन रीति"।

अत्याचारी कौन?

अल्लाह के उद्देश्य के विरुद्ध में कुरआन सूक्तों का भाव मोडनेवाले और उसे न समझने की कोशिश करनेवाले लोगों सबसे बडे अत्याचारी है यों अनआम 21 में कहा है, और इस तरह के अत्याचारी और पागल कभी न जीतेंगे ऐसा युनूस 17 में भी कहा है। अल्लाह पर झूठा आरोप लगाने वालों से अथवा सच्चे कुरान के भाव मिलने के बाद उसे ठुकरा देनेवाले से बढकर सबसे बडे अत्याचारी और कौन है ? ऐसे काफिरों को नरक कुंड में ही जगह काफी नहीं है क्या? ऐसा पूछकर ही अनकबूत 60, सुमर 32 आदि सूक्तों का अंत होता है। बखरा 254 व्याख्या देखिय। कुरआन के भाव को छिपानेवाले कपट विश्वासी लोगों को, और उसे ठुकरा देनेवाले फुज्जारों को -चाहे वे परिवार से जितना भी पास रहेनेवाले है- सही आत्ममित्र के रूप में चुननेवाले भी अत्याचारी होते है ऐसा तौबा 23 में कहा है । निश्चय, ऐसे अत्याचारी जनता को अल्लाह सन्मार्ग की ओर लेके नही जायेगा - ऐसा ही माईदा 51, अनआम 144, खसस 50, अहखाफ 10 आदि सूक्तें समाप्त होते हैं। सजदा 22 में ऐसा कहा है कि अपने नाथ के सूक्तों को दिल की भाषा में याद करके फिर उसकी उपेक्षा करके पुराना जीवन बितानेवाले से बढकर अन्यचारो और कौन है? अवश्य ऐसे पागलों से हम बदला लेंगे ही । कहफ 57 व्याख्या देखिये।

कौन है मुजरिम (पागल)

अअराफ: 40 में ऐसा कहा है कि "अवश्य, कुरआन सूक्तों को झूठ स्थापित करके उपेक्षा करनेवाले फुज्जारों को (साधारण मुस्लिम), और उससे सब सीखने का अंहकार करनेवाले और छिपानेवाले कपट विश्वासियों (मुस्लिम पंडितों को) को अल्लाह आकाश के द्वार खोल नहीं देंगे; और दर्जी की सुई की सुराख में से ऊँट प्रवेश करते तक वे स्वर्ग में नही प्रवेश कर सकेंगे; ऐसे ही हम पागलों को फल देंगे"। यहाँ योग्यता के बिना पंडित होने का अंहकार करके जीते कपट विश्वासी, उनका अनुगत करके जीते दुर्बलों को इशारा करके परलोक में: "सन्माग रूपी कुरआन का भाव मिलने पर क्या हमी ने तुमें उससे रोका था; नहीं तुम पागल लोग ही थे"- यों कहने का दृश्य सबअ 32 में; और असहाय जीते दुर्बल:"हमें पथभ्रष्ट करनेवाले पागल के अलावा और कोई नही" यों कपटविश्वासी नेताओं के बारे में बताने का दृश्य अश-शुअरा 99 में; और नरक के दण्ड में भाग लेनेवाले पागल रूपी नेता और अनुयायी, दोनों को मिलाकर उसके बारे में "अवश्य ही, पागलों से हम (अल्लाह) ऐसा ही व्यवहार करेंगे"-बताने का दृश्य स्वाफ्फात 34 में चेतावनी दी है। हे काफिरो, तुम्हें मेरे

सूक्तों का विवरण नही दिया था क्या? तो तुमने घमंड किया, तुम एक पागल जनता ही थी - यों कुरआन का भाव छिपाकर सोचने के बिना यहाँ जिये लोगों से अंतिम दिन में पूछने का दृश्य जासिया 31 में खींचकर दिखाया है।

कुरआन में पचासों स्थानों में पागलों के बारे में बताया है। बुद्धी होकर भी कुरआन का भाव प्रयुक्त न कर जीवन लक्ष्य नहीं पहचाननेवाले कपटविश्वासियों और उनका अन्धानुकरण करनेवाले प्रज्ञाहीन लोगों को ही उन सब स्थानों में लक्ष्य किया है। लेकिन जिसका "बुद्दी खोयी" वही पागल है। उन्हें कोई कर्म जरूरी नही यों कर्मशास्त्र पटुओं ने बताया है, कहकर जूतों से लिखे गये अर्थ का अनुगत करनेवाले ही अल्लाह द्वारा मारे गये कपटविश्वासी। यासीन 59-62 व्याख्या देखिये। कुरआन के भाव से फिसलकर पिशाचों की पकड में पडे लक्ष्यबोध खोये ऐसे कपट विश्वासियों और कुरआन के भाव की उपेक्षा करनेवाली प्रज्ञाहीन लोगों को अअराफ 175-176 में कुतों से ही उपमा की है कि "यदि तुम उसपर तंग करे या न करे, कोई फरक न पडे"। अअराफः 179, युनुस 7-8 व्याख्या देखिये।

कौन है कपटविश्वासी? बदमाश?

भौतिक जीवन से आकृष्ट होकर, पूरा कुरान का भाव जानकर उसको छुपाते और उसका गलत अर्थ निकालके नरक के द्वार पर खडाकर, लोगों को वहाँ के ओर बुलानेवाले मनुष्यपिशाच रूपी नेता ही है कपटविश्वासी । अल्लाह को, खुद को और जीवन लक्ष्य को पहचानने के लिए उपकरण रूपी कुरआन का भाव बदमाशों के अलावा और कोई ढकेगा नहीं - यों बखरा 99 में; और, "अल्लाह को भूलने से खुद को भूले हुए", वे लोग ही बद्माश है - यों हशार 19 में; और, अवश्य, कपटविश्वासी वे ही बदमाश है - यों तौबा 67 में बताया है। कपट विश्वासी अल्लाह और विश्वासियों के दुश्मन है - यों मुनाफिखून 4 में; और, उन्हें पैगम्बर या विश्वासी माफी दिलाने से कोई बात नहीं, अल्लाह उन्हें माफ नहीं करेंगे, अवश्य अल्लाह बदमाश जनता को सन्मार्ग की ओर ले जायेंगे ही नहीं - यों मुनफिखुन 6 में; और, कपट विश्वासियों के लिए क्षमा की प्रार्थना करना या जनाजे की नमस्कार करना विश्वासियों को उचित नहीं - यों तौबा 84 में बताया है। तौबा 80 व्याख्या देखिए। वे मलिन है, इसलिए उनकी उपेक्षा करो - यों तौबा 95 में; और, कुरआन का भाव उन्हें मलिन पर मलिन की वृद्धि के अलावा कुछ नहीं देगा, वे काफिर होके प्राण छोड गये - यों तौबा 125 में; और, वे विचारणा के बिना नरक के निचले स्तर पहुँचनेवाले है - यों अन-निसाअः 145 में बताया है। तौबा 53-55, इसराअ 82 व्याख्या देखिए। *मुँह खुले तो झूठ बोलना, विश्वास*

करने पर धोखा देना, वचन देकर पालन नहीं करना आदि कपट विश्वासियों के प्रत्यक्ष लक्षण हैं - नबी ने सिखाया है। कपट विश्वासी, अपनी प्रतिज्ञा एक ढाल के रूप में चुननेवाले है - यों मुनाफिखून 2 में बताया है।

मुँह खुले तो झूठे बोलनेवाले वे; जो करेगें, वह नही कहनेवाले और जो कहेंगे वह नहीं करनेवाले है। 'अल्लाह सबसे ऊँचे है' वे ऐसा बोलेगें तो भी प्रायोगिक जीवन में स्वीकार न करने से वह झूठ होगा। 'इस्लाम और कुरान सब अच्छे है, हमें देखकर तुम इस्लाम का मोल न करो' अथवा 'सब्जी अच्छी है, पर हमें नहीं चाहिए, तुम्ही ले लो' - जैसा है इस्लाम और कुरआन के प्रति उनका सलूक। नरक दण्ड के बारे में परामर्श करते समय लोगों को दिखाने के लिए वे आहें भरते और फूट फूट कर रो पडते, तो भी इनके प्रायोगिक जीवन क्षेत्रों में उस बोध की छाया तक नहीं पडेगी। इस्लाम के नाम पर प्रगतिशाल चिन्तन के बहाने कपट विश्वासी प्रचलित करनेवाले विभिन्न उद्यम जैसे शिक्षा संस्था, सुन्दर मकान जैसे आराधनालय, पत्र माध्यम, आस्पत्तालें अनाथालय, इस्लामिक बैंक, अनुशसित संगठन विधान आदि सब प्रत्यक्ष में गुणदायक दिखेंगें तो भी असल में वे नाश ही पैदा करेंगे - यों कुरआन के भाव को अन्तरदर्शनदायक के रूप में इस्तेमाल करनेवाले को समझ पायेंगे। भौतिक लक्ष्य को लेकर होनेवाले उनके काम, स्रष्टा को सन्तुष्ट मानव एकता को लक्ष्य करनेवाला न होने के कारण वे कलह और अलगाव, ईर्ष्या, धार्मिकता, जातीयता बढा ही देंगे। अल्लाह से निकले अटूट रस्सी कुरआन का भाव कसकर पकडकर एक संघ बनकर स्थायी रहने केलिए कुरआन आज्ञा देता है तो, आपस में लडाई के कारण विभिन्न संगठन में भिन्न हो दूसरी जनता के सामने बाहरी एकता का अभिनय करनेवाले हैं वे। रोज़ा, ईद, अरफा दिन आदि खिबला स्वीकार करके असली दिन की ओर ले आने के बदले, झूठे दिन की ओर बदल देने केलिए वे एक हो जाते दीख पडेंगे। पहले ज़माने में, इनमें जो पुरोहित है समाज का नेतृत्व करते तो आज उनमें जो प्रभुओं, धनवानों और पुरोहितों का संकलान समाज का नेतृत्व करते है। सूर्य चन्द्र का तुम अनुगत न करो, उनकी सृष्टि करनेवाले नाथ (उसकी चर्या रूपी कुरआन का भाव) का ही अनुगत करो - यों फुस्सिलत 37 में पढनेवाली जनता ही भाव न होकर चन्द्र को सजूद करनेवाली एक जनता के रूप में गिरा दिया है। सोचने का शक्ति खोये इनको, ऐसा बोध नही कि 'आज पैगमम्बर जिन्दा होते तो किस दिन इनका आचरण करेंगे' या 'संसार में कही भी, दिन बदलता नही'। माइदाः 2 में, 'तुम पुण्य और भक्ति में परस्पर सहयोग करों' सीखने के विरुद्ध, बुराई और शत्रुता में ही वे परस्पर सहयोग करते हैं। ऐसे नबी ने जो सिखाया कि "जूतों और ईसाइयों का पूरी तरह पीछा करेंगे

वे", वह उनमें दिखेगा। संक्षेप में, बाढ़ की फेन बराबर इनका कार्यकलाप अन्तरदर्शनदायक कुरआन के भाव से पहचाननेवाले ही मसीहुद्दज्जाल का फितना पहचान पायेगा, जो नबी ने सिखाया कि "आदम सन्तानो को होने वाला सबसे बडा फितना होगा मसीहुद्दज्जाल का फितना" । बखराः 189, रअदः 16-17 व्याख्या देखिए।

कौन है, जो अल्लाह के अधिकार अवकाशों में शामिल करानेवाले?

'अल्लाह' को पुकारना जानकर भी उनका ठीक से गणता नहीं करके; वह देखता नही, जानता नहीं ऐसा ख्याल रखकर जीनेवाले ही है अल्लाह के अधिकारों में शामिल करानेवाले। नींद और खाना के बिना सब छुपके देखनेवाले, हृदयों की स्थिति जाननेवाले त्रिकालज्ञानी अल्लाह के करीब खुद को लाने के लिए उसकी सृष्टियों में कुछ को सिफरिश और मद्यवर्ती बनाकर रखनेवाले है वे। कपटविश्वासी पुरुषों और स्त्रियों, और अल्लाह के अधिकारों में शमिल करा देनेवाले पुरुषों और स्त्रियों को दण्डित करने के लिए हो अमानत रूपी कुरआन का भाव प्रस्तुत किया है यों अहसाब 73 में बताया है। फतह 6, बय्यिनः 6 व्याख्या देखिए। तौबाः 68, 73 तहरीमः 9 सूक्तों में इनके बारे में कुफ़्फार बताये गये है। बखरा 39, माइदाः 10, 86, हदीदः 19 आदि सूक्तों में परामर्श किये कुरआन सूक्तों की उपेक्षा करनेवाले नरक के हकदारों में आनेवाले है ये।

तौबा 123 में और फतह 29 में बताये कुफ्फारों में कपटविश्वास और फुज्जार आते है। इनफित्वार 14, मुतफ्फाफीन 7 आदि सूक्तों में बताये फुज्जारों में कपट विश्वासी और अल्लाह के अधिकार अवकाशों में शमिल होनेवाले भी आते है (अर्थ और भाव न जानकर, सिर्फ कुरआन का शरीर पढकर दीन से बाहर जानेवाले; और नबी के कहे अनुसार लोगों में से सबसे बुरे आद्मी 'फाजिर' के बहुवचन है 'फुज्जार')। फातिहः 7 में 'क्रोधित के मार्ग पर नहीं' कहते समय, 'शप्त बदमाश कपट विश्वासियों के मार्ग पर नहीं'; और 'बुरी राहों पर चलनेवालो के मार्ग पर नहीं' कहते समय, 'उनका अंधानुकरण करनेवाले फुज्जारों के मार्ग पर भी नहीं' - ऐसा ही विश्वासी को मन में सोचना चाहिए। ऐसे लोगो से कुरआन के भाव को लेकर जिहाद करने के लिए ही तौबा 73, फुरखान 52, तहरीम 9 सूक्तों के द्वारा विश्वासी आज्ञपित है। हज्ज 78 व्याख्या देखिए।

कौन है वेदान्ती (अह्लुल किताब)

वेद के जनता (अधिकारी) होकर गर्व करके, उसका अनुगत न करके चर्या के रूप में आराधना करनेवाले जूतों और ईसाईयों को (नबी के समय के) ही 'अहलूल किताब' शब्द

से पुकारते थे। लेकिन आज सभी लोगों का वेद कुरआन होने के कारण, कुरआन के आदमी होने का अभिमान करनेवालों को ही यह विशेषण ठीक लगता है। कुरआन को गदों की तरह वहन करनेवाले, और अल्लाह के अधिकार अवकाशों में शमिल करनेवाले अधिकतर मुसल्मान लोगों से ज्यादा, उनमें से 'प्रगतिशील संस्था का वाद करनेवाले' है आज के अहलुल किताब। वेदान्तियों की आलोचना करके कुरआन मे बतायी बातें उनमे ही पालन होती दिखाई पडती है। अवश्य वेदान्तियों में से काफिर, और अल्लाह के अधिकार अवकाशों में शमिल करन्वालों नरककुण्ड की अग्नि के नित्यवासी है। वे लोग ही 'धरती के निकृष्ट जीव है' - यों बय्यिना 6 में, तथा अवश्य अल्लाह के पास सबसे बुरे जीव, चिन्तन शक्ति का इस्तेमाल न करनेवाले गूँगे और बहरे काफीर है यों अनफाल 22, 55 सूक्तों में बताया है। बखरा 111, 113 माइदा 18 व्याख्या देखिए।

कुरआन क्यों?

सभी मनुष्य शांतिपूर्ण जीवन चाहते है। उसके लिए सर्वस्रष्टा के न होकर कई नियम कायदें रूपायित और प्रचलित करते हैं। लेकिन बुद्धि और स्वतंत्रता मिले मानवों को नियंत्रित करने केलिए और शांति पूर्ण जीवन को पक्का बनाने केलिए, मानवों से बनाये ऐसे कायदे ज़रूरी फल प्रदान करनेवाले नहीं बनते। अलगाव, कलह, अत्याचार, आतंकवाद, खून खराबा आदि सब संसार में दिन ब दिन बढते आऐ दीख रहे हैं। मनुष्य के शांतिपूर्ण जीवन के लिए बाजाएँ डालनेवाली जातीयता, देशीयता, वंशीयता, लिंग भेद आदि; और मनुष्य में पशुता और पैशाचिकता बढा देनेवाली स्वार्थता, स्वजन पक्षपात, ईर्ष्या, घमण्ड, दिखावा, बडपन दिखाना, शराब, अफीम, नशीली चीज स्ववर्ग संभोग, व्यभिचार, हत्या, बलात्कार, चोरी, धोखा, डकैती, लूट, आग लगाना आदि; और मनुष्य के जीवन भार बढाने के हेतु बन जानेवाले स्मग्लिंग, छुपा रखना, काला बाजार, मिलावट, नाप तौल में झूठ, सूद, काला रुपया, गेम्बलिंग, रिश्वत लेना और देना, दहेज देना और लेना आदि शोषण और ऊहापोहों पर अधिष्ठित पैशाचिक विश्वास झाड-फूंक, मंन्ततंत्र, राशी, हस्त रेखा, शकुन, नक्षत्रफल आदि सब भौतिक प्रगति होने के साथ बढते रहे है। त्रिकाल ज्ञानी सर्वस्रष्टा की सर्वसृष्टियों केलिए जो विधि मनाही भरा है वह त्रिकाल ज्ञान - कुरआन का पूरा भाव - प्रचलित होने से ही धरती पर संपूर्ण शांति स्थापित होगी। मनुष्यों को ज्ञानी बनाके जीवन लक्ष्य की पहचान करनेवाले के रूप में बदलने को, और मानव एकता को स्थायी रखने को, तथा प्रकृति को

उसके सन्तुलन पर बनाये रखने को, और मनुष्यों और अन्य सृष्टियों को अल्लाह सुनिश्चित जीवन काल तक यहाँ शांतिपुर्ण जीवन बिताने को अन्तरदर्शनदायक कुरआन का भाव के अलावा और किसी से नहीं होगा। इसराअः 13-14 में ऐसा कहा है कि हर एक मानव अपना हिस्सा (सोफ्ट वेयर) अपनी गर्दन पर वहन करता है, और विचारणा के दिन में वह खुली और प्रकाशित पुस्तक बनकर उसे दिया जायेगा और कहेगाः तू अपना ग्रथ पढना, इस दिन तेरी विचारणा (हिसाब) करने के लिए तू ही काफी है। पिछले किसी ग्रन्थ में न परामर्शित यह बात, कुरआन के भाव में परामर्शित है। इसलिए, कुरआन के भाव से ही, इस कम्यूटर युग में भी बुराई मे डूब जीनेवाले मनुष्यों को बुराई से मुक्त कर सकते हैं। जासिया 28-32 व्याख्या देखिए।

अन-नज्म 39 में अल्लाह कहते हैः मनुष्य को, वह उद्देश्य (लक्ष्य) करके काम करने के सिवा कुछ नहीं मिलेगा। कि जो भी काम वह करता हो, अल्लाह उसके हृदय को ही देखते है। हृदय की स्थिति देखकर वह काम अल्लाह मूल्यांकित करते है। अल्लाह को हृदय की अवस्था जाननेवाले समझकर, मन में भय और विनम्रता से, जीभ से अल्लाह न कहके, हृदय से अल्लाह का स्मरण करनेवाले हैं विश्वासी। अल्लाह को हृदय की अवस्था जाननेवाला नहीं समझकर, जीभ से अल्लाह की प्रशंसा करनेवाले प्रज्ञाहीन होते हैं और विश्वासी उनमें न पडजाये यों अअराफ 205 में बताया है। कुरआन मिलने के पहले, पैगम्वर खुद प्रज्ञाहीनों और असहायों में पडे थे - यों यूसुफ़ : 3 में और अल्लुहा 7 में बताया है।

संक्षेप में, बुराईयों को मिटाने को और पूरा जीवन अल्लाह के लिए रखकर अनका प्रतिनिधित्व करने को कुरआन का पूरा भाव के अलावा और किसी से मुमकिन नहीं। खियामा 22-24 में कहे अनुसार कुरआन के भाव में दिखे अल्लाह को मृत्यु के समय पर आत्मा से देखकर खुशी के साथ स्वर्ग को ही लौटने को; और रअदः 28 के अनुसार कुरआन के भाव से शांति और मनोबल मिले 'नफसमुत्वमइन्न' (शांती प्राप्त आत्मा) बन जाने को; और फजर 27-30 के अनुसार, ऐ! शांति और मनोबल मिले आत्मा, लौट अपनी मालिक की ओर, इस तरह की, तू उसे और वह तुझे (आपस में) तृप्त होकर। तू मेरे लिए जीना। मेरे स्वर्ग में प्रवेश करना - यों कहलाकर जीवन लक्ष्य की पूर्ति पानेवालों में शमिल होने को, कुरआन भाव जरूरी है।

जीवन लक्ष्य

धरती पर कब, कहाँ, किस देश में, किस गोत्र मे, किस वंश में, किन माँ-बाप में जन्म

लेना है; कोई भी मनुष्य खुद इसका फैसला नही कर सकता। विभिन्न समय में, विभिन्न देशों में, विभिन्न गोत्रों में, मनुष्यों को धरती पर लाना, उन्हें एक निश्चित अवधि तक जीने का सभी प्रकार की परिस्थितियाँ तैयार करना, अवधि समाप्त होते समय बारी बारी से उन्हे वापस ले जाना सब स्रष्टा ही करते है। अन्तरदर्शन दायक वेद का भाव इस्तेमाल करके स्रष्टा को ढूँढ लेना, खुद को पहचानता, प्रपंच को उसके सन्तुलन पर स्थायी रखना, यहाँ स्वर्ग बनाना, मृत्यु के बाद निर्मित किये स्वर्ग को ही लौट जाना, यही चौथी अवस्था में मनुष्य का जीवन लक्ष्य है। मुल्क 2 में ऐसा कहा है कि 'मृत्यु और जन्म की सृष्टि उसने की है, तुम में से कौन सबसे सुन्दर रूप में काम करनेवाला है, यह ढूँढ लेने के लिए'। हूद 7, कहफ 7 सूक्तों में यह बात बतायी गयी है कि परमदयावान निष्पक्षवान अल्लाह किसी को भी स्वर्ग या नरक में नही डालते, हर एक मानव, उनका स्वर्ग और नरक वह खुद इधर ही बनाता है। आलि-इमरान 185 में अल्लाह कहते है कि 'हर एक आत्मा मृत्यु को चखेगी, तुम्हारा वेतन विधि दिवस में दिया भी जायेगा। तब कौन खुद को नरक जाने से रोकता है और स्वर्ग में प्रवेश करवाता है, वह विजयी हुआ। इह संसार का जीवन एक वंचना युक्त व्यंजन के सिवा कुछ भी नहीं'। बखरा 281 में ऐसा कहा है कि 'तुम अल्लाह की ओर लौटा जाने के उस एक दिन से डर रहो। फिर हर एक आत्मा को उसका कमाया संपूर्ण वेतन दिया जायेगा। उन्हें कोई अन्याय भुगतना नहीं पडेगा'। अलि इमरान 30, अनआम 164-165 व्याख्या देखिए।

मनुष्यों में से, हजारों में एक ही स्वर्ग में जायेंगे और बाकी 999 नरक में जायेंगे; यह फैसला अपरिवर्तित है, जो मानवों की सृष्टि से पहले ही ग्रंथ में अंकित किया गया है। नैमिषिक भैतिक जीवन में एक नौकरी केलिए दस रिक्तता होने पर भी हजारों की होड और प्रयत्न सर्व साधारण है। तब 'वह एक' बन जाने की कोशिश करके फायदा नहीं होगा समझकर कोई निराश न हो जाये, क्योंकि स्वर्ग केलिए चुना गया वह हजारों में एक कौन है यह अल्लाह ने नहीं बताया है। अल्लाह की करुणा - कुरआन के भाव - से जीकर उस एक के गुणों का आवाहन करके किसी भी धर्म या जाति का व्यक्ति उसमें शामिल हो सकता है। कुरआन के भाव से अल्लाह को निष्पक्षवान समझकर, उनका प्रमाण पत्र उसको तराजू के रूप में इस्तेमाल करके अपना निर्णय स्वर्ग की तरफ बदल देना, सन्मार्ग और दुर्मार्ग को चुनने का अधिकार दिये गये मनुष्य का दायित्व है। सुमर 41 में ऐसा बताया है कि 'सारे मानवों के लिए लक्ष्य (हख) के साथ ग्रन्द अवतरित की है; जो ग्रंथ का इस्तेमाल करके

सन्मार्ग पर आता है, वह उसके लिए ही सन्मार्ग पर आया है; जो उसे पथभ्रष्ट होकर दुर्मार्गी बन जाता है, तब उसका दोष उस आत्मा को ही है'।

स्वर्ग और नरक

1400 वर्ष से पहले, अरबों को सुपरिचित शब्दों और भावों में ही कुरआन का परिचय कराया जाता है।

मानव की आत्मा चाहनेवाली सारी बातें मिलनेवाली और कोई अनचाहा न दीख पडनेवाला, महसूस होनेवाला नित्य जीवन प्राप्त स्थान है स्वर्ग। वेदों के परामर्शों से स्वर्ग को समझकर निर्मित है आज धरती पर दिखाई पडनेवाली सारी सुख सुविधाएँ। प्रमोदवन, बगीचे, फौवारे, महल, कालीन, गद्दा, सोफे, स्वादिष्ट भोजन-पानीय, बढिया कपडे, वातानुकूल उपकरण, वार्ता विनिमय उपकरण, बुढापा या बीमारी के अभाव की अवस्था आदि मानव से बनवाये गये और बनवाये जानेवाले ही नहीं, मनुष्य मन में धरती पर कल्पना तक न कर सकने वाले सारे अनुग्रह और भलाई से भरा है स्वर्ग। स्वर्ग में धूप, गर्मी, धुँआ, धूल, तुषार, जाडा, प्यास, भूख, थकान, स्वेद, मैथुन, इन्द्रिय स्खलन, मल-मूत्र विसर्जन कुछ नही होगा। त्वाहा 118-119, स्वाफ्फात 58-61, मुहम्मद 6 व्याख्या देखिए।

कुरआन के भाव से स्वर्ग देखते हुए यहाँ अल्लाह के प्रतिनिधि होकर जीने, और स्वर्ग बनवाने या खरीदने के बदलें के रूप में ही किसी को स्वर्ग पूर्वी संपत्ति होकर परलोक में मिलेगा। अल्लाह का प्रमाण पत्र कुरआन के भाव से विश्वासी होकर लक्ष्यबोध से जीवन बिताकर, प्रपंच के सन्तुलन को दोष लगे बिना स्थायी रखने के लिए मनुष्य और जीव राशियों को संशुद्ध खाद्य पदार्थ का उत्पादन केलिए खेती कर, पेड लगाकर और दुसरो को उसके लिए प्रेरित कर, वायु जल, इर्दगिद आदि दूषित बनानेवाले उध्योगों और विकास कार्यें को निरूत्साह कर के ही स्वर्ग बनवाया जा सकता है। सारे क्षेत्रों में मिले अनुग्रहों का सही ढंग से इस्तमाल करके जीवन बिताकर, प्रपंच उसके सन्तुलन पर स्थायी रखने का तराजू और अमानत कुरआन का भाव सारे संसारवालों को पहुँचा देने को प्रमुखता देते हुए समय, सपंति, स्थान मान सब का इस्तेमाल करके दूसरों को उसके लिए प्रेरित करके ही स्वर्ग खरीद कर सकते है। फुस्सिलत 46, अश-शूरा 20, अल-वाखिआः 27-40 व्याख्या देखिए।

धरती पर हम भुगतनेवाली सारी बुराईयों, दुखों, दुष्टताओं की चरम सीमा; और गर्मी और सर्दी का अवर्णनीय अधिकता; और सबसे घृणास्पद लोगों का सहवास; तथा सुई लगाने तक की जगह न हाने वाला अतिसंकुल दण्ड केन्द्र है नरक। स्वर्गवासी मन में जो चाहते वही

मिल जाता, तो नरकवासी जिसकी संभावना का मज़ाक उडाते थे, वही मिलेगा। हिजर 44, सुमर 47-48, अल-वाखिआ 41-56 व्याख्या देखिए।

कपट विश्वासियों का वाद यह है कि 'अल्लाह का स्वर्ग और अल्लाह का नरक, दोनों बडा ही विशाल है; अल्लाह उनके इच्छे के अनुसार, लोगों को उसके लिए रख छोडते है'। लेकिन यह वाद कुरआन के ठीक उल्टे है। सजदा 19 में ऐसा कहा है कि 'विश्वास करके सत्कर्म करनेवालों के लिए स्वर्ग, उनके काम के वेतन के रूप में - दावत के रूप में - दिया जायेगा'। आलि-इमरान 136, अनकबूत 58, सुमर 74 आदि सूक्तों इस भाव से समाप्त होता है कि 'काम करनेवालों को मिलनेवाला फल कितना अनुग्रहपूर्ण है'। स्वर्ग यहाँ जिन्होंने बनवाया, उनसे 'तुम काम करते रहने केलिए वेतन के रूप में, पूर्वी संपन्ति के रूप में स्वर्ग ले लो' ऐसा कहा जायेगा-यों अअराफ 43 में भी बताया है। सजदा 14 में तुम जो काम करते थे उसके अनुकूल शाश्वत दण्ड चख लो कहा है। आलि इमरान 181-182, अनफाल 50-51, हज्ज 9-10 आदि सूक्तों में तुम भस्मीकरण का दण्ड चखलो, वह तुम्हारे हाथों ने तैयार किया है। अल्लाह अपने दासों से ज़रा भी अन्याय दिखानेवाले नहीं, ऐसा कहा है। हशर 18 में अल्लाह विश्वासियों को बुलाकर कहते हैः तुम अल्लाह को जैसे ध्यान देने है, वैसे ध्यान देना; हर एक कल केलिए (परलोक केलिए) क्या कमा के रखा है, देख लेना। कुरआन ढक देनेवाले हर एक निषेधी, अपने इह लोक का कमायी देखते दिन ऐसा बतायेगाः 'हो! मैं मिट्टी हो जाती तो कितना अच्छा था' - यों नबअ 40 में चेतावनी दी है।अन-निसाअ 42, जुमुआ 7 व्याख्या देखिए।

उम्मत (समुदाय)और खौम (जनता)

मुहम्मद नबी पैगम्बर के रूप में नियुक्त होते दिन से अंतिम दिन तक के सारे मानव ही नबी का समुदाय हो, तो उस जमाने के नबी के अभिसंबोधक और नबी का जीवन अनुगत न करनेवाला अंतिम दिन तक के मुस्लिम नामवाले ही नबी की जनता में शामिल होगी। सभी पैगम्बरों की प्रकार, मुहम्मद नबी भी 'जनता' के खिलाफ बोलते थे - यो कुरआन में सर्वत्र देख सकते है। अमुस्लिम सोग भी शामिल 'समुदाय' के विषय में, मरते वक्त भी उस्ताह दिखाये नबी, पर लोक में भी 'मेरा समुदाय, मेरा समुदाय' कहकर परेशान होगा। लेकिन फुरखान- 30 में ऐसा कहा है कि, विधि दिवस में, कुरआन लाकर नबी ने जनता के खिलाफ अपील देंगे कि "मेरे नाथ, मेरी यह जनता इस कुरआन से पलायन कर गयी थी और वही इनकी दुर्गति है"। फुरखान 18, फतह 12 आदि सूक्तों में, कुरआन का भाव ढकनेवाली

इस जनता को 'बुरी जनता' का विशेषण दिया है। नबी के समय के मक्का मुशरिकों को एकत्रित वेद न मिलने के कारण, नबी पर विश्वास करने के लिए वे ऐसा एक ग्रंथ मांग रहे थे। इसराअ 90-93 व्याख्या देखिए। लेकिन कुरआन का भाव उपलब्ध इस समय, उसका इस्तेमाल न करके विनाशकारी कामों में लग जानेवाले मुसल्मान लोगों को कोई धोखा नहीं मिलेगा। ग्रंथ प्राप्त हुऐ जनता, पूरे कुरआन के भाव के अनुसार जीवन ठीक न करके, ग्रंथ के कुछ लेकर और कुछ छुपाकर जो लेती तो उन्हे इस संसार में निन्दा और पर लोक में अति भयंकर दण्ड ही बखरा 85 में अल्लाह ने वादा किया है। आज संसार में मुस्लिम भुगती सारी पीडाओं और उपद्रवों का कारण अमानत रूपि कुरआन के भाव से उनका अलग होता है। अर-रअदः 18 में ऐसा कहा है कि 'एक जनता जब तक स्वयं नही बदलती, तब तक उसे अल्लाह न बदल देंगे'। इसलिए कुरआन के भाव में लौटे बिना सामुदायिक एकता और आयुध शक्ति से वे उसे जीत नहीं पायेंगी।

कुरआन न मिले, न देखे, न छुए किसी को काफिर (ढका व्यक्ति) कहने के लिए कुरआन में सबूत नही। आज के मुसल्मान लोग, खुद निश्चित किया है कि वे सब विश्वासी और अमुस्लिम सब काफिर है। आज के मुसल्मान लोगों का जीवन देखकर, कोई कुरआन को गलत समझे और वह सर्मपित जीवन में आने को हिचके उसके खिलाफ आवाज उठाये तो, वह अमुस्लिम को कुरआन से रोकने का दण्ड न्यायाधीश (नीतिमान) अल्लाह की अदालत में आज के मुसल्मान लोगों और उनके आगे चलनेवाले पण्डितों को भोगना होगा। वे कुरआन इस्तेमाल करेंगे या अन्य धर्मवालों के सामने उसका जीवन साक्ष्य बनायेंगे - ऐसी कोई प्रतीक्षा नहीं। तब अमुस्लिम भाईयों ने प्रपंच को उसके सन्तुलन पर स्थिर रख देने का तराजू और अमानत रूपी कुरआन का भाव स्वयं पढकर और समझकर उसका इस्तेमाल करने और संसार वालों तक पहूँचा देने को ध्यान देना चाहिए।

दीन और शरीअत

पूरे वेद ग्रंथ के आधार पर बने जीवन संहिता है दीन। आलि-इमरान 19 में बताये प्रकृति धर्म - इस्लाम - ही है वह। आत्मा के मालिक के सामने, आत्मा को समर्पित करना प्रस्तुत जीवन रीति को, आदम से अंतिम दिन तक कोई परिवर्तन नहीं है। लेकिन समय समय पर दीन के शारीरिक प्रायोगीकरण को 'शरीअत' कहते हैं। समय समय पर विश्वसियों के समाज को पालन करने के जो आचार अनुष्ठान ही शरीअत में मिलते है। नूह, इब्राहीम, मूसा, मुहम्मद आदि पैगम्बरों के समय पर मिलते शरीअतों में अन्तर था। विश्वासियों के

संध बनने पर ही शरीअत नियम प्रचार में ला सकते है। आज के लिए अनुयोग्य असली जीवन रीति 'मुहम्मदीय शरीअत' प्रायोगिक जीवन में जीकर दिखानेवाले विश्वासियों के संध न होने के कारण शरीअत का पालन के लिए धर्म परिवर्तन ज़रूरी नही। आज नबी के सिखाये की अनुसार, *'जिन्हें पढना लिखना आता है, उन्हें कुरआन का भाव दाँत से काटकर डटकर रहना चाहिए; और जो पढना लिखना नहीं जानता है, वह जंगल जाकर किसी पेड का निचला भाग काट कर मृत्यु तक रहना आज आवश्यक है'।* दीन आत्मा है, और शरीअत उसका शरीर होने के कारण दीन के बिना शरीअत को स्थायी रखने की कोशिश करने वाले आज के मुसल्मान लोग खोये हुए है - यही संक्षेप है।

वायु, जल, प्रकाश, मिट्टी आदि सर्वस्रष्टा के अनुग्रहों को समान रूप से हकदार है सारे मनुष्य। लेकिन उसका सबसे बडा अनुग्रह है उससे मिले मार्ग दर्शक सत्य और असत्य विवेचन की कसौटी, तथा वेद ग्रंथ का पूर्ण रूप वाला कुरआन। वह किसी एक जाति या धर्म के लिए नहीं प्रस्तुत किया है। उसका अनुगत करके जीने का दायित्व, सृष्टि होने की दृष्टि से सारे मनुष्यों को है। उसके लिए नाम, वेश, धर्म आदि कुछ भी बदलने की ज़रूरत नही - यों बखरा 62 में और माइदा 69 में अल्लाह ने कहा है। पैगम्बर का जीवन साक्ष्य करके जीने का संध न होने के कारण, आज के अमुस्लिम वेद ग्रंथ के आधार पर विश्वास को रूपायित करके गलती न करके जीने मात्र से स्वर्ग जा सकते है। धर्म परिवर्तन करके मुस्लिम संघों में शामिल होने की ज़रूरत नही। अर-रूम 31-32 सूक्तों में अल्लाह ने विश्वासियों को बुलाकर ताकीद की है कि दीन से अलग होकर विभिन्न संघों में परिवर्तन होकर तुम मुशरिकों में न पड जाओ। मुअमिनून 51-53 व्याख्या देखिए। अल्लाह से, वेद प्राप्त न होनेवाले लोगों काफिर न होंगे, बल्कि वेद प्राप्त होकर उसका उपयोग न करनेवाले ही काफिर है - यह निस्सन्देह समझ सकते है। जिन्हें वेद न प्राप्त हो, उन्हे हिसाब के बाद स्वर्ग या नरक न होकर एक तीसरी दुनिया में ही सर्वलोकों के मालिक नाथ भेंजेंगे। उन लोगों का पाप भार का वहन उन्हें करना है जो, विचारणा के बिना नरक के निचले स्तर पर पड जाने और ग्रंथ का भाव जानकर भी उसको ढक देनेवाले कपट विश्वासी है।

अन्य सृष्टियों में से भिन्न, बुद्धि देकर मनुष्यों को इसलिए धरती पर नियुक्त किया है कि वह स्रष्टा का प्रतिनिधि बनकर प्रपंच को उसको सन्तुलन पर स्थिर रखे। उसके लिए जो तराजू है, वही कुरआन का भाव है। लेकिन भाव के बिना गदों की तरह (जुमुअ 5 देखिए) उसे वहन करनेवाले मुसल्मान लोग, उसका उपयोग करते भी नहीं और दूसरे विभाग के

लोगों को उपयोग करने के लिए देते भी नहीं। आज संसार में, सारी बुराईयों में आगे रहनेवाले उनकी जीवन रीति देखकर, दूसरे जन विभाग 'कुरआन क्या है?'- इसका अन्वेषण करने के लिए भी तैयार नहीं होते। आज संसार में होनेवाली सारी बुराईयों का पाप भार कुरआन वाहक कपट विश्वासियों को वहन करना है - यों अनआम 26, त्वाहा 99-100 सूक्तों में बताया है।

हशर 23 में बताये, विश्वासी -अल्लाह- का चरित्र ही, उसके प्रातिनित्न करनेवाला विश्वासियों का भी होगा। जानते हुए, जानबूझकर जुल्म करनेवाले कपट विश्वासियों को अल्लाह कभी भी माफ न करेंगे। अंजाने में गलती करनेवालों को अल्लाह माफ कर देंगे। *एक बुराई देखे तो हाथ से रोकना, उससे न बने तो ज़बान से रोकना और उससे भी न बने तो मन से उनसे धृणा करना; वह भी न करता तो उसे राई बराबर विश्वास नही है* - यों नबी ने सिखाया है। सही और गलत समझने में सहायक बस्वाइर, फुरखान और तराजू कुरआन का भाव प्राप्त होकर उसका उपयोग न करने वालों को ही अल्लाह माफ न करेंगे। उनसे वे बदला भी लेंगे। सजदाः 22 व्याख्या देखिए।

जीवन लक्ष्य खोकर, मनुष्य आज भौतिक शोभा-सामग्रियों और सुख-सुविधाओं में मग्न होकर प्रपंच को नष्ट करने देनेवाले कामों में ही ज्यादा लगे हुए दीख पडते है। प्रपंच का मुख्य हिस्सा भूमि का विनाशकारी कार्यों की चरमसीमा पर पिशाच अपना मूर्त रूप में मनुष्य रूप लेकर मसीहुद्दज्जाल बनकर आके, प्रकृति जीवन रूपी इस्लाम को पूरी तरह से गायब कर देगा। फिर ईसा दुबारा आकर उसका वध करके दुनिया भर में अल्लाह को प्रिय जीवन व्यवस्था रूपी इस्लाम प्रचलित कर देंगे। भूमि पर बसनेवाले मनुष्यों में कोई भी प्रपंच को अपने सन्तुलन पर स्थिर रखने का तराजू और अमानत रूपी कुरआन का भाव को इस्तेमाल करके, निष्पक्षवान अल्लाह का प्रतिनिधित्व नही करता; और भलाई को सलाह करना छोडकर, बुराई का विरेध तक नही हो तब ही दस निशानियों में से एक मसीहुद्दज्जाल निकलेगा।

कुरआन की आत्मा

सारी बातें की व्याख्या की गयी कुरआन में कोई भी बात क्रमानुसार नहीं बतायी गयी है। पर कुरआन सूक्त परस्पर विरुद्ध भी नहीं होते। इसलिए कुरआन के शब्दों को जोडकर पढना और समझना चाहिए। कुरआन में हर बातें एक से अधिक जगहों पर दुहराने के कारण

उसे 'मसानी' कहते है। किसी भी मामले में फैसला लेना उससे अनुबंधित निकले सूक्तों को जोड, पढकर होना चाहिए। उदाहरण के लिए (1) इसराअ 23 में, माँ-बाप से भली माँति पेश आने की बात है। उनमें से एक तेरे पास बूढे हो पहूँचे तो उनसें 'छी' भी नहीं बोलना चाहिए- यों आदेश है; तो अनकबूत-6, लुखमान 15 सूक्तों में वे माँ वाप तुम्हें अज्ञात विषय अल्लाह के अधिकारों में शामिल होने को मज़बूर करें तो उनको मानना नही चाहिए। उनसे इह में कुरआन की छाया में जो रिश्ता है, केवल वह निभाना, तू अल्लाह की ओर रुजू लोगों का मार्ग अनुगत करना - ऐसा आदेश दिया है। तौबा 23 में ऐसा बताया है कि विश्वासियों को बुलाकर अल्लाह कहते हैः तुम अपने बाप, भाई जो विश्वास का निषेध ही चाहते तो उन्हें मित्र या रक्षक के रूप में न चुन लो। तुम में से कोई ऐसा करेगा तो वे ही अत्याचारी है; और मुजादिला 22 में, अल्लाह और अंतिम दिवस पर भरोसा रखनेवाली एक जनता को अल्लाह और उसके दूत से विरोध रखनेवालों से वह उनके माँ-बाप, बेटे, भाई, रिश्तेदार, नेता कोई भी हो, ममता से पेश आती हुई न देख पायेगा भी कहा है। माँ-बाप का विश्वास रूपीकृत करने केलिए कुरआन का सारा भाव बता देने पर भी वे विश्वासी न होकर मर जाते तो उनके लिए पैगम्बर और विश्वासियों ने माफी नही माँगनी चाहिए - यों तौबा 113-114 में कहा है।

विश्वासी माँ बाप सेः 'क्या आप मुझसे वादा कर रहे है कि, मैं मर जाता तो फिर पुनः जीवित किया जायेग' यों पूछकर मृत्यु के बाद के जीवन का निषेध करनेवाली सन्तानों के विषय में; 'पहले गुजरे जिन्न और मनुष्य समुदायों के साथ नरक में प्रवेश करो'-यह वचन पक्का हो गया है - ऐसा अहखाफ 17-18 में बताया है। विश्वासी माँ बाप को अपनी सन्तान को स्वर्ग में पाने के लिए पन्द्रह साल की उम्र से पहले वापस बुला देंगें, यह 'मूसा-खिलर' घटना में खिलर एक बालक को मारने की बात से समझ लेना चाहिए। कहफ 80-82 व्याख्या देखिए।

तौबा 73, तहरीम 9 आदि सूक्तों में नबी को बुलाकरः कुरआन का भाव ढक देनेवाले कपट विश्ववासियों और कुफ्फारों से जिहाद करने को, और उनसे सख्त व्यवहार करने को; तथा आन्निसाआः 91, तौबाः 123, अहसाबः 61 आदि सूक्तों में विश्वासियों के संध को बुलाकरः कपट विश्वासियों को खोज निकालकर मार डालनो को आदेश दिया गया है। तो विश्वासियों के संध का अभाववाले इस काल में, कुरआन का भाव छुपा देनेवाले कपटविश्वासी काफिरों से कुरआन का भाव अधारित हो जिहाद करके फुरखानः 52 की

आज्ञा का पालन करना ही एकांत विश्वासी को चाहिए। कपट विश्वासियों को 'जहाँ मिले वहाँ वध करने' की आज्ञा, ईसा दुबारा आने पर ही प्रचार में होगा।

नबी के समय में प्रचार में आये कई सूक्तों की आज्ञा का पालन आज संभव नहीं। व्याभिचारिणियों और व्यभिचारियों को सौ बार मारना विश्वासियों का एक संध उसका साक्षी बने - यों अन-नूर 2 में आदेश है। जिसने पाप न किया हो, वह पत्थर मारे ईसा नबी की इस सीख से यह समझ सकते है विवाहित नारी और पुरुष व्यभि चार करे तो पत्थर फेंक कर मारने का दण्ड ही ईसा नबी के समय में इस्लाम में था वह मुहम्मद नबी के समय में भी प्रचार में लाया गया। लेकिन विश्वासियों के संध का अभाव और दण्ड देने के लिए बेगुनाहों की ज़रूरत है इसलिए आज वह प्रचार में ला नहीं सकता। व्यभिचार से भी भयंकर, प्रकृति विरुद्ध काम (स्ववर्ग संभोग) *करने और करानेवालों को मार डालने* के लिए मुहम्मद नबी ने सिखाया है। पर आज वह सर्वत्र पाया जाता है।

मदिरा निर्माजन विभिन्न दशा में ही हुआ है। पहले बखरा 219 में अल्लाह ने कहा उसमें भलाई और बुराई दोनों है। उसमें जो बुराईयाँ है, वह भलाई से अधिक है। फिर अन-निसाअ 43 में, नशे में तुम नमाज के करीब तक न जाओ - इस आज्ञा द्वारा मदिरा कम किया। आखिर माइदा 90-91 में, 'अवश्य, मदिरा मलिन है, तुम उस की उपेक्षा करो', इस आज्ञा से मदिरा को पूरी तरह से निरोधित किया। लेकिन, आखिरी दो आज्ञाएँ नमाज करनेवालों या न करनेवालों ने मानते नहीं तो, उनसे पहली आज्ञा में बताये अनुसार कुरआन के भाव की व्याख्या करके मदिरापान रोकने का उपदेश करना ही संभव है। क्योंकि, *नमाज के वक्त में, 'जमाअत' के रूप में (एक साथ) नमाज करने केलिए मस्ज़िद में न आनेवालों के बारे में: उनको मिलाकर उनके धरों को आग क्यो न लगाये? ऐसा मैं ने सोचा* - यों मदीना जीवन की पहली दशा में नबी ने बताया। मगर आखिरी दशा में, चालीस से ज्यादा कपटविश्वासियों को मदीना मस्जिद से निकालने के बाद ही नबी ने जुमुअः नमाज किया है। तौबा 101, 107, 108 व्याख्या देखिए। आज मस्जिद का पालन करनेवाले लोगों ने कपट विश्वासी होने से; और, अल्लाह के एक सध में शामिल न होकर विभिन्न संगठनों में पडकर पिशाच के संध में शामिल मुशरिक बनने के कारण, विश्वासी को उनके मस्जिदों में प्रवेश करने या उनके पीछे नमाज़ पडने, उनको इमाम होकर नमाज़ पडना भी मना है। कुरआन का भाव न होने के कारण, उनका नमाज, नीच और निदंनीय काम से रोकने के बदले पेसा करने की आड बन गयी है वे। अनकबूतः 45 व्याख्या देखिए। तौबा 17-18 में, सत्य विरोध का स्वय साक्षी

बनकर अल्लाह के मस्जिदों में पालक बनकर रहने का कोई हक मुशरिकों को नहीं। उनके सारे कर्म बेकार हो चुके है। वे नरक के नित्यवासी हो जायेंगे। अवश्य अल्लाह के मस्जिदों का पालन की योग्यता उनको नही। अल्लाह और अंतिम दिन पर विश्वास करके, सही ढंग से स्थायी रखनेवालों, सकात देनवालों, अल्लाह को छोड और किसी से न डरनेवालों को है। वे लोग सन्मार्ग कुरआन का भाव इस्तेमाल करनेवाले बनेगें। संक्षेप में, हर व्यक्ति ने विभिन्न प्रसंगों में पालन करने का नियम-निरोध, विभिन्न सूक्तों के द्वारा अल्लाह ने सिखाया है।

मिथ्या रहित अजेय ग्रन्थ

वेद की आत्मा को 'अद्दिकर' कहते है। जगाना, अनुस्मरण, उत्बोधन आदि उसके कई अर्थ होने पर भी उद्देश्य, 'हृदय की भाषा के कुरआन की आत्मा' ही है। वेद का आत्मा रूपी भाव के बिना जीवन रूपी अर्थ और व्याख्यावाले कई ग्रंथ है। पर वे व्यक्ति की राय, और धर्म और संगठन का चाहनवाले होने के कारण से स्रष्टा के नहीं। लेकिन कुरआन की आत्मा नामक ग्रन्थ - अद्दिकर - फुस्सिलत 41 सूक्त में बताये मिथ्या रहित, अजेय और अतुल्य एक है। अजेय अल्लाह की तरह अजेय ग्रंथ है वह। फुरखान 33 में बताये सबसे अच्छा व्याख्या ग्रंथ भी यही है। 'अवश्य, हमी ने कुरआन का भाव अवतरित किया है, और हम स्वयं उसके रखवाले है' - यों हिजर 9 में जो बताया है; और, 'एकत्र करने से पहले या बाद मे, उसमें सृष्टियों में से किसी का हाथ डालना संभव नहीं' - जो बताया है, वह कुरआन के बारे में नहीं, बल्कि 'अद्दिकर' -कुरआन के भाव- के बारे में है। यह खास ध्यान दीजिए। फुस्सिलत 44 के अनुसार, उस दिन के निषेधियों ने गैर अरबी भाषा में एक ग्रंथ लाने को माँगते थे। वह भी आज 'अद्दिकर' से पूर्ण हुई है। इस नाम में कोई कुरआन व्याख्यावाला ग्रंथ इसके पहले नहीं निकला है; यह ध्यान देने की बात है। इसलिए कुरआन की आत्मा नामक ग्रंथ मे किसी प्रकार की जोड तोड (परिवर्तन) सृष्टियों में से किसी से भी संभव नही। उसकी 'रचना-स्वस्त (Copy Right) किसी की नहीं' - यों लिखा जाने के कारण भी, वह स्रष्टा के होने के नाते ही है। अगर कपटविश्वासियों को ऐसा कोई तर्क है कि 'यह सृष्टियों में से किसी की रचना है' तो यह ललकार है कि वे अद्दिकर जैसा ऐक ग्रंथ लाये। अरबी भाषा के पंडित माननेवालों, समझनेवालों, कर्मशास्त्र पटुओं, किराये पर भाषण देनेवालों और आत्मीयाचार्यों को यह ललकार स्वीकार करके कोशिश कर सकते है।

लुखमान 27 में अल्लाह कहते हैः यदि धरती के सारे वृक्ष कलम हो जाए और समुद्र

उसकी स्याही हो जाए, उसके बाद सात और समुद्र हो, तब भी अल्लाह के वचन (कलिमात) लिखी नहीं जा सकती। कुरआन का शरीर और अर्थ लिखकर पूरा कर सकते है पर व्याख्या लिखने-कहने पर समाप्त नही होगा यही अल्लाह का कथन है। त्रिकालज्ञान कुरआन के भाव में सारी बातों की व्याख्या की गयी है। लेकिन वह संसार में समय समय पर ही प्रत्यक्ष होता है। पिछले वर्षों में जो नहीं प्रत्यक्ष हुए, इस वर्ष कई प्रत्यक्ष हुए है। कुछ आनेवाले वर्षों में प्रत्यक्ष होने को भी है। फुस्सिलत 53 में एसा बताया है कि दिगन्तों में और उनमें भी, हमारे सूक्त हम उन्हें दिखाऐंगे, तब तक जब उन्हें व्यक्त हो कि अवश्य वह सत्य ही है।

पहले ज़माने में नासमझ अस्पष्ट और आज के ज़माने में स्पष्ट हुई कुछ बातें

1) हर एक मनुष्य अपनी गर्दन पर अपने सोफट वेयर का वहन करता है। इसराअ 13-14 में बताया यह बात, कम्यूटर सर्वत्र प्रचार में आये इस ज़माने में आसानी से समझ सकते है। 2) मनुष्य की सृष्टी, माँओं के पेटों में तीन अंधेरे कमरों में हुई है; जो सुमर 6 में सूचित किया है, वह वैद्य शास्त्र ने आज खोज निकाल है। 3) सागर में निर्मल पानी और खारा पानी एक दुसरे से अलगे से मौजूद है। यह जो आधुनिक काल का आविष्कार फुरखान 53 में सूचित किया है। 4) महाविस्फोट द्वारा ही प्रपंच का रूप बनाया और जीवन को बनाये रखने के लिए पानी आनिवार्य है। यह सच्चाई अम्बियाअ-30 में बतायी है। 5) दृष्टि से हृदय का संबंध है; यह आविष्कार हज्ज 46 में जो सूचित किया है। 6) अब मिश्र के म्यूजियम में पायी जानेवाली तीन हजार साल पहले की 'फिरौन की लाश', यूनुस 92 में बताये अनुसार मानवों केलिए एक दृष्टान्त के रूप में अल्लाह ने सुरक्षित रख रहे है। 7) हवाई जहाज़ के आविष्कार के बाद ही 'वर्फ के पहाडों जैसे बादलों का पहाड है' जो अन्नूर 43 में बताया, वह सच निकला है। 8) उसकी उँगलियाँ को विभिन्न ढंग से क्रमीकरण किया हम ने उसकी हड्डियों को जोडकर पुनः निर्माण करने की सामर्थ्य रखने वाले है- यों खियामा 3,4 में कहा है। यह बात उँगलियों की निशानी, व्यक्ति को पहचानने का मापदण्ड के रूप में स्वीकृत किये गये इस समय ही ज्यादा समझ सकेंगे। 9) हर एक वस्तु में -भूमि से उगकर ऊपर उठनेवालों में, और उन्ही में, और उनको अज्ञात वस्तुओं में- जोडी बनायी है - यों यासीन 36 में जो बताया है, वह आट्टम को भी अलग कर सकनेवाले इस काल में ज्यादा समझ सकेंगे। 10) पहले जमाने का वैज्ञानिक अध्ययन यह था कि 'अटल खडे सूर्य की परिक्रमा, भूमि और अन्य ग्रह कर रहे है'। इस अध्ययन बदलकर, 'सूर्य संचरण करता है' यों यासीन

38 में जो बताया है, वह आधुनिक विज्ञान ने स्वीकार किया है। 11) धरती अपने रिक्कार्ड समर्पित करेगा - यों सिलसालः 4 में जो बताया है वह ओडियो वीडियो रेक्कोडिंग प्रचुर प्रचलित इस समय में ज्यादा समझ लेना चाहिए।

अनपढ अरबियों को ही नहीं, अंतिम दिन तक दुनिया में जन्म लेनेवाले अनपढ लोगों में से अन्य कुछ को भी है मुहम्मद नबी और ग्रंथ - यों जुमुआः 2-3 में कहा है। इस से यह समझ सकते है कि अरबी भाषा में बडी जानकारी होनेवालों से बढकर, अन्य धर्मवालों (जो अरबी लिख या पढ नहीं सकते) को कुरआन का भाव ज्यादा ग्रहण कर पायेंगे। कोई भी हो जो आत्मा द्वारा 'मेरे नाथ, मुझे ज्ञान में अभिवृद्दि प्रदान कर दीजिए' यों प्रार्थना करके, हृदय से आसानी से समझ में आनेवाला कुरआन भाव पढ लेंगे, तो उन्हें वह जल्दी समझ होगा। आज अमुस्लिम लोगों ने ग्रन्थ के आधार पर विश्वास को रूपायित करके और उसके भाव के विरुद्ध जीनेवाले मुसल्मान लोगों को उसके द्वारा जगा देना चाहिए। ग्रंथ प्राप्त होने पर भी, उसका इस्तमाल न करके उसे छुपा देते और दूसरों को इस्तमाल करने को नहीं देते तो, उन्हें भी मुसल्मान लोगों के साथ नरक में जाना पडेगा। कोई भी जो स्वर्ग को लौटना हो तो उसे कुरआन का भाव टिकट के रूप में इस्तमाल करना ही चाहिए।

खिराअत और तिलावत

जैसे 'आत्मा' को ही 'व्यक्ति' कहते है, ठीक वैसे ही 'कुरआन का भाव' को ही 'कुरआन' कहते हैं। खिराअत (वाचन), कुरआन का भाव होने पर ही करना चाहिए। नबी ने ऐसा सिखाया कि *तुम कुरआन का वाचन करो, जब तुम्हारा हृदय उससे (कुरआन के भाव से) मिलता हो। वे दोनों (कुरआन का भाव और हृदय) अलग हुए तो तुम उसे छोडकर उठ जाओ। अन्यथा वाचन किया गया कुरआन तुम्हारे खिलाफ साक्ष्य बनेगा और वाद करेगा।*

भाव अपनाकार, धीरे से, रुक रुककर, संवेदन करके वाचन करना ही है 'तिलावत'। अथवा दण्ड और नरक के बारे में परामर्श होते समय अल्लाह की शरण में जाना; और अनुग्रह, उदारता, स्वर्ग आदि के परामर्श के वक्त उसके लिए प्रार्थना करना; और, अल्लाह का परामर्श होते समय उनका सत्व, प्रताप और प्रभाव मन में जगाना, उन्हें परिशुद्ध मानना, स्तुति करना; और, पिशाच का परामर्श होते समय उसके बुरे कामों से अल्लाह की शरण में जाना; इस प्रकार का जो कुरआन का वाचन है वह। स्वर्ग के अधिकारी विभाग विश्वासी, सज्जन, पुण्यात्माएँ आदि के बारे में कहते समय उनमें समा जाने को; और, नरक के लायक विभाग कपट विश्वासी, निषेधी, अत्याचारी, पागल, लक्ष्यबोध खोये लोग,

प्रज्ञाहीन, निराश, शंकालू, विनाशकारी, धोखेबाज़, सीमा का उल्लंघन करनेवाले आदि का परामर्श करते वक्त उनमें न जुड जानो को प्रार्थना करके कुरआन का वाचन करना है वह। कुरआन पढना और उसका भाव लोगों तक पहुँचा देना ही तिलावत है। तू कुरआन के अनुसार जीवन को जैसे ठीक करना है वैसे ठीक करना - यों मुसम्मिल 4 में; और, नबी का जीवन कुरआन के आधार पर खुद अल्लाह ठीक कर देंगे - यों फुरखान 32 में बताया है। तब विश्वासीयों को बखरा-143, हज्ज-78 आदि सूक्तों की आज्ञा का पालन करके कुरआन के भाव के अनुसार जीवन ठीक करके पैगम्बर का जीवन लोगों में साक्ष्य करना चाहिए।

कुरआन का भाव कायम रखने केलिए है नमाज़। इसलिए नमाज़ से अधिक प्रमुखता कुरआन का भाव पढने पढाने को ही देना चाहिए - यों अअराफ -170, अनकबूत -45, फात्विर -29 आदि सूक्तों से समझ सकते है। नमाज़ में हो तो भी, *भाव के बिना कुरआन का वाचन करे तो, धनुष से बाण निकल जाने की शीघ्रता से दीन से दूर जा गिरेगा* - यों नबी ने सिखाया है। नबी ने जो सिखाया कि *रुक रुक के वाचन करने से दो पुण्य होंगे*, वह भाव समझकर अरबी का कुरआन सीखनेवालों को ही है। अरबी में वाचन करने को जाननेवालों को, रुक रुक के भाव पढते वक्त ही वह पुण्य मिलेगा। *अलीफ-लाम-मीम, यों तुम नहीं कहते जिसके अक्षर अलीफ, लाम और मीम को दसों भलाईयाँ अंकित किये बिना* - यों नबी ने जो सिखाया, वह भी विश्वासियों पर ही लागू है।

नबी ने सिखाया है कि कुरआन वाचन करनेवाले मुसल्मान लोगों को तीन भेद है 1) **फाजिर**: वह कुरआन खायेगा, या कुरआन से खायेगा ('कुरआन खाने' का मतलब यह है कि पुण्य प्राप्ति के लिए कुरआन का अर्थ और भाव हीन अरबी शरीर शुरु से आखिर तक वाचन करके खतम करना। 'कुरआन से खाने' का मतलब यह हा कि कुरआन प्रस्तुत करने के उद्देश्य के खिलाफ, मरे हुओं को सुनाकर धन लेकर खाना; बच्चों को कुरआन का शरीर पढाकर या इमाम से बेतन लेकर खाना; थालियों, कागज़ों और शीटों में तावीज़, मंत्र, कुरआन सूक्त यों लिख देकर धन लेकर खाना आदि। 2) **काफिर**: कुरआन का भाव समझकर उसको छुपा देनेवाला कपट विश्वासी। 3) **मुअमिन (विश्वासी):** भाव समझकर उसका अनुगत करनेवाला। कुरआन वाचन करने वाले इन तीनों विभागों में से, विश्वासी को ही वाचन का फायदा मिलेगा। कपट विश्वासियों को, कुरआन का पूरा भाव समझने से भी कोई फायदा नहीं मिलेगा। मुनाफिख और फाजिर, आग खाकर उनके पेट भर रहे है - यों बखरा 174 में; और, उन्हें कुरआन का वाचन करने से मलिनता और दूरी ही बढेगी - यों तौबा 125 में बताया है। विश्वासियों को कुरआन करुणा और रोग शांति प्रदान करेगा तो

अत्याचारियों को वह नुक्सान के अलावा कुछ भी नही बढायेगा - यों इसराअ 82 में भी बताया है। नबी ने सिखाया है कि *कुरआन शुरू से अन्त तक पढने पर भी उससे कुछ भी न मिलनेवाला फाजिर ही लोगों में सबसे बडा दुष्ट है।* हिसाब के बिना नरक में जानेवाले कपट विश्वासियों को अल्लाह ने मार दिया है; इसके कारण ही सबसे बडा दुष्ट 'कपट विश्वासी' कहने के बदले 'फाजिर' कहा है।

चेतावनी

कुरआन का भाव, मानवों के हृदय की भाषा में पहुँचाकर उन्हें स्रष्टा के ओर बुलाने को, तथा स्रष्टा के सामने उत्तर देने लायक बनाने को ही कुरआन की आत्मा नामक कुरआन भाव की व्याख्यावाला ग्रंथ की शुरुआत की है। कुरआन सूक्तों को, कुरआन सूक्तों से तथा उसकी व्याख्यावाले नबी वचनों के द्वारा व्याख्या ही इसमें की गयी है। हर एक सूक्त की, आज के समय केलिए 'मौइलत' (समान मिसाल, उदाहारण) उसी सूक्त में इशारा करके दिखाने की कोशिश की है। अपनी राय या भाव कहीं भी न आने का; और कुरआन का व्याख्या ने स्रष्टा के उद्देशानुसार करने का उद्देश्य और प्रार्थना से ही यह रचयित किया है।

कुरआन की आत्मा घर में बेकार रखने केलिए नही। यह आपके हाथों में पहुँचने का मौका सर्व-स्रष्टा ने ही तैयार किया है। यह पढकर समझने के लिए समय न निकालते, या पढने के बाद अनुगत करके जीवन न बिताते तो, इसको छुए आपके हाथ और इसको देखे आपकी आँखें और जिस्म सब अल्लाह की अदालत में आपके खिलाफ साक्षी बनकर वाद करेंगे। नबी ने सिखाया है कि *सबसे अच्छी बात अल्लाह का ग्रंथ है*; तो फिर स्रष्टा का मुखपत्र रूपी कुरआन का भाव पढे बिना किसी ओर पत्र, ग्रंथ, प्रकाशन पढना विश्वसियों को उचित नही। केवल ज्ञानवृद्धि, आत्मानुभूति या पुण्य प्राप्ति के लिए कुरआन का भाव पढना नहीं चाहिए। क्यों कि सर्वस्रष्टा के सारी स्रृष्टियों के लिए जो आज्ञाएँ है, वही उसमें मिलती है। इसलिए उसके उनुसार जीवन को ढंग से ठीक करना और दूसरों को प्रदान भी करना चाहिए। उनके सामने ही उसके भाव का दरवाज़े खोले जायेंगे। उसके लिए जो कहता हो वही करना, और जो करता हो वही कहना ज़रूरी है। परिशुद्धात्मा वाले व्यक्तियों के सिवा और किसी को कुरआन का भाव स्वीकार नही कर सकेगा - यों अल वाखिआ 79 में कहने से यह समझ सकता है कि अनर्ह और अशुद्ध संपत्ति, और खाद्य पदार्थ इस्तेमाल करनेवाले व्यक्तियों को कुरआन का भाव समझ नहीं पायेंगे। अजेय और अतुल्य कुरआन का भाव की परवाह न करके, मदहब ग्रंथों (दीन से अलग हुए व्यक्तियों के ग्रंथों) को आधार ग्रंथ

माननेवालों को भी यह समझ नहीं सकेंगे।

याद रहेः

कुरआन के भाव से ही पिशाच रोकेगा, इसलिए कुरआन की आत्मा पढना शुरु करने पर पिशाच तुझे रोकने की कोशिश करेगा। ऊबा कर नीद लाकर, समय का अभाव और अन्य कई समस्या खींच लाकर तुझे रोकने की शक्ति अल्लाह ने उसे दी है। सत्य को असत्य की प्रतीति जताने की शक्ति भी उसको है। भाव के बिना कुरआन पढेगा तो वह प्रोत्साहित ही करेगा। इसलिए मुअमिनून 97-98 में बताये अनुसारः पिशाच के प्रलोभन, धमकी, नीच कामों, झाड-फूँक से बचने केलिए, उसके और तेरे मालिक के शरण में जाना चाहिए। उसी प्रकार, जब तू कुरआन का अनुगत करना शुरु करेगा तो, मनुष्य-पिशाचों ने तेरा मजाक उठाने और अकेला करने की कोशिश करेगा। तौबा- 34 में बताये, लोगों का धन अविहित खानेवाले पण्डितों, पुरोहितो, प्रभुवर्गों और विभिन्न संगठनवालों की एक सेना-जो पिशाच की सेना है-तुझे धमकाने, अकेला करने में बडी तत्परता और सावधानी से आगे आयेगी। बहुमत का मार्ग छोड जाता तो तुझे देश निकाला दण्ड देगी। तुझे अकेला छोडेगा, तेरे मरने पर मस्जिद के कब्रस्थान में दफनाने नहीं देंगी, जनाज़े नमाज़ नहीं करेगी, सन्तानों की शादी होने नहीं देंगी आदि धमकियाँ वे हथियार के रूप में इस्तेमाल करना शुरु करेंगी। अल्लाह का मार्ग रूपी कुरान के भाव का अनुगत करने से पारिवारिक जीवन और सामाजिक जीवन में आफ़तें आयेंगी यों डरके उससे मुडना नही। कुरआन के भाव को ऐश्वर्य, सारी दुर्घटानाओं और आफतों से बचानें वाली ढाल तथा मुहैमिन के रूप में इस्तेमाल करनेवाला विश्वासी - जो हजारों में एक है - ऐसी धमकियों से डरेगा नहीं। सत्य पहचानकर स्वीकार करोगे या उसे छुपाकर भौतिक लाभ को चूनोगे? इसे जांचने के लिए ही अल्लाह ऐसी परिस्थियाँ बनाते है। यह समझ के सब अपने अधीन में करनेवाले सबकी शिरोरेखा का नियत्रंण करनेवाले अल्लाह पर, खुद को सौंप कर सत्य पर वह अटल रहेगा। अल्लाह का अनुमति पत्र - कुरआन के भाव - इस्तेमाल करके, विश्वास को रूपायित करके, जीवन लक्ष्य पहचानकर त्रिकाल ज्ञानी अल्लाह ने सारा काम पहले से ही निश्चित किया है समझनेवाले ऐसे लोगों को उत्तम विश्वास होगा कि, धरती पर उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा। बुराई केलिए षडयंत्र रचनेवालों का तंत्र, उनके खिलाफ ही मुड जायेगा - यों फात्विर 10 में बताया है।

मेरे नाथ। मेरे ज्ञान की अभिवृद्धि कर दीजिए। हृदय से यों प्रार्थना करके, और सन्देहों की याद करके, कुरआन का भाव पढते जाओ। गुलाम और मालिक से संवाद करने से

सन्देहों के जवाब ऐसे ही प्राप्त होंगे। पहले दिन पढने पर सन्देह का जवाब न मिले तो पढते ही जाओ, समाप्त होने से पहले जवाब जरूर मिलेंगे। सूक्तों को जोडकर पढने, और व्याख्या देखने को जो बताया गया है, वहां कुरआन की आत्मा को देख कर पक्का कर दीजिए। अथवा सूक्त जोडकर पढने को बताये तीन सूक्त हो तो, वे तीनों मिल जाने पर, उनमें जो भाव है उससे और भी नये भाव पाठकों को मिल जायेंगे। "कुरआन की व्याख्या लिखने-पढने से समाप्त नही होगीं" कहने से यही तात्पर्य है। कुरआन की व्याख्या पढने को सबसे अच्छा समय चुनना और पूर्व धारणाओं से मुक्त नवजात शिशु की निष्कपटता से उसके करीब जाना चाहिए। पूरे कुरआन की व्याख्या पढने पर भी सन्देह बाकी रहे तो, कुरआन का भाव जाननेवालों से (केवल) पूछकर पढने को संकाच न करना चाहिए। स्रष्टा के सारी सृष्टियों के लिए अवतरित किया गया यह सन्देश, जाति, धर्म, राष्ट्र, लिंग भेद के बिना सबको पहुँचा देने की जिम्मेदारी सबको है - यह याद रहे। उसकेलिए इसकी प्रतियाँ निकालकर और विभिन्न भाषाओं में अनुवाद कर के इस प्रयास में हर कोई भागीदार हो सकता है।

हमारे मलिक नाथ, तेरे उद्देश्य के अनुसार कुरआन का भाव समझने और उसका अनगत करने का आदेश प्रदान कर। कुरआन हमारे अनुकूल साक्षी होकर खडें रहने, तथा वाद करने के रूप में (हमारे खिलाफ नहीं) इस्तेमाल करने केलिए हम पर अनुग्रह बरसा दे। हे, दया करनेवालों में सबसे अच्छी तरह दया करनेवाले। हे पुण्यवान । दयावान।

❍❍❍

अनुबंधः

मसीहुद्दज्जाल और ईसा का पुनरागमन

कुरआन का भाव टिकट के रूप में इस्तेमाल करके, स्वर्ग को ही लौट जाने केलिए न तैयार होनेवाले निषेधियों से अनआम-158 द्वारा अल्लाह पूछते हैः वह क्या देखकर रहे है कि उनके ओर देवदूत आ जाए, या तेरे रब्ब ही आ जाए, या तेरे रब्ब की कुछ निशानी आ जाए। तेरे रब्ब की निशानी आते दिन, किसी ऐसे आत्मा को अपने विश्वास से कोई भलाई प्राप्त न होगी जो पहले विश्वासी नहीं था या अपने विश्वास से पहले कोई भलाई न कमाई। उनसे कहो-तुम इतज़ार करो, अवश्य हम भी इंतज़ार करनेवाले है। इस सूक्त की व्याख्या, नबी ने यों सिखायीः *सूरज का पश्चिम में उगना, सारी धरती पर धुँआ फैलना, दाब्बत्तुल अर्ल (धरती का प्राणी) निकलना, यअ्जूज मअ्जूज निकलना, मसीहुद्दज्जाल का निकलना, ईसा का पुनरागमन, तीन स्थानों पर धरती धँस जाना (पुर्व, पश्चिम, और अरब के उपद्वीप), जनता को महश्रा की ओर ले जानेवाली यमन से निकलनेवाली अग्नि आदि दस निशानियाँ होने तक आखिरी घंटा नहीं आयेगा।*

नबी ने सिखाया है कि *आदम की सन्तानों को आनेवाला सबसे बडा फितना (नाश) मसीहुद्दज्जाल है, उनकी बुराई से पाँच समय के नमाज में अत्तहिय्यात के बाद तुम्हें प्रार्थना करना है, आदम की सन्तानों को मसीहुद्दज्जाल जैसा नाश और कोई न होगा, सारे नबियों ने उसके बनाते नाश के बारे में लोगों को सूचना दी है। मैं आखिरी नबी हूँ, तुम में ही मसीहुद्दज्जाल आयेगा, इसलिए तुम्हारी सन्तानों को मसीहुद्दज्जाल के बारे में सिखाना।*

'अलमसीह' का मतलब 'घूमता फिरता चलनेवाला', 'गायब कर देनेवाला' आदि है। आलि-इमरान 45 में मसीह ईसा के बारे में मरियम को खुशखबरी पहुँचाने की बात कही है। अल्लाह के आदेश पर ईसा नबी ने कोढियों और पाण्डु रोग से पीडितों को हाथ फेरकर ठीक करने से; और, आखिर वक्त मे हिजास (मक्का और मदीना प्रदेश) को छोडकर, धरती पर सब कहीं धूमते फिरते इस्लाम को गायब कर देनेवाले मसीहुद्दज्जाल को मारकर, कुफर गायब करके दुनिया भर में इस्लाम का प्रचरित करने के लिए ईसा नबी को अल्लाह दुनिया में दुबारा ले आने के कारण ही 'ईसा' को 'मसीह' नाम ठीक लगता है। दुनिया भर में धूमते फिरते, असली इस्लाम (प्रकृति जीवन रीति) को गायब करने के कारण ही 'मसीह' नाम 'दज्जाल' को भी ठीक होता है। तब तो 'अलमसीह' सर्वनाम में 'मसीहुद्दज्जाल' और 'ईसा

मसीह' दोनों आ जाते है।

सारे नबियों के समय में मसीहुद्दज्जाल के बारे में चेतावनी दी थी। कलियुग के अन्त में नाशवान और अधार्मिक मूर्ति 'कलि' के प्रत्यक्ष होने की बात 'कल्की पुराण' में बताते है। उस समय धरती में भयंकर अकाल होगा, जिसको ताकत है वह अधिकारी बनेगा, उम्र से पहले कुमार-कुमारिया नीच संगम शुरु करेगा, लोक-नीति को चकनाचूर करके मानव अधार्मिक मूर्ति के अनुचर बनेंगे, आखिर वे उस अधर्म मूर्ति की आराधना करेंगे आदि कल्की पुराण में आगे कहते है। बाईबिल में मसीहुद्दज्जाल को 'अंतिम क्राइस्ट' (क्राइस्ट का अन्त करनेवाला) बताया है। उसका मतलब है, क्राइस्ट का जीवन बितानेवाले विश्वासी का अन्त करनेवाला।

जीवन का लक्ष्य खोये इंसान, आज सांसारिक जीवन के अलकारों और सुख सुविधाओं में डूबकर धरती और प्रपंच को नष्ट करनेवाले कामों में ही ज्यादा लगे हुए है। वायु, पानी, मिट्टी आदि मलिन करनेवाले उध्योगों को प्रमुखता देनेवाले ये, जीव-वायु का उत्पादन करने में सहायक कृषि और पेड लगाने के काम से पीछे जा चुके हैं। सच्चे किसान को उसकी मेहनत का योग्य मूल्य न मिलने की तरह व्यापार उसका शोषण करने के द्वारा कृषि को निरुत्साह कर रहा है। भूमि की कीलें माने जानेवाले पहाडों को उठाकर, खेतों तथा निचले प्रदेशों को ढ़क्कर यहाँ वहाँ ठोस कौनक्रीट मकान बनवाकर भूमि का सन्तुलन नष्ट कर रहा है। भूमि से धातु और इन्धनों को बडी मात्रा में खनन करने से और उन से वायु को दूषित करने से, दो प्रकार से भूमि और वायुमण्डल के बनावट में परिवर्तन होता है। उपभोग सभ्पता मिट्टी को; और पासवाले धरों का शौचालय पीने के पानी को भी दूषित कर देने से वायु, मिट्टी, पानी आदि सब मानवों के हाथों से ही मलिन होते जा रहे है। प्रपंच की मुख्य भाग भूमि में ऐसा नाशकारी कामों की चरमसीमा पर प्रपंच पूरा नष्ट हो जायेगा। तब भूमि में रहनेवाले मानवों में, एक भी प्रपंच को अपने सन्तुलन बनाये रखनेवाले तराजू और अमानत रूपी कुरआन का भाव प्रयुक्त करके, निष्पक्षवान अल्लाह का प्रतिनिधित्व नही करता, और भलाई की सलाह देना छोडकर बुराई का विरोध करना तक नही होता, तभी वह संभव होगा। अंतिम दिन की मुख्य दस निशानियों में एक-मसीहुद्दज्जाल का आगमन-उसके पहले ही होगा।

'मोशे दयाल' नाम से कहलानेवाले इसराईल संग्राम सेनानी बनकर ही वह निकलेगा। उसके अधीन में सारी दुनिया इसराईल के नेतृत्व में ऐक देश के रूप में एकत्रित हो जायेगा।

मुहम्मद नबी के काल में ही आये *'मुसैलीमतुल कद्दाब' से लेकर तीस झूठेवादवाले आयेंगे, उनमें आखिरी झूठेवादवाला ही मसीहुद्दज्जाल है* - यों नबी ने सिखाया है। वह दुनिया भर में धूमता फिरता मक्का और मदीना (हिजास) को छोडकर सभी जगह अपने अधीन में लायेगा। उनके निकलने के तीन साल पहले के प्रथम वर्ष में बरसात और कृषि, तीन में एक भाग कम होगी; और, दूसरे वर्ष में तीन मे दो भाग कम होगी; और, तीसरे वर्ष में बरसात और कृषि बिलकुल नहीं होगी; तभी वह निकलेगा - यों नबी ने सिखाया है। मानव रूप लेकर आनेवाला पिशाच है दज्जाल। सबसे बडी सृष्टि उसीसे ही पिशाच का सबसे बडी मज़ाल प्रगट होगी। पहले, वह खुद को नबी बोलेगा; बरसात लाकर पानी उतार देगा, कृषि उगवाकर लोगों को खाना भी बना कर देगा। फिर, बह खुद को खुदा कहेगा। एक गंवार से वह यों पूछेगाः तेरे मरे हुए माँ-बाप को फिर से सृजन करके दूँगा तो क्या तू मुझे खुदा मानेगा। क्लोनिंग (Cloning) से या किसी ओर तरीके से वह उसके माँ-बाप की पुनः सृष्टि कर देगा। पिशाच माँ-बाप के रूप में आकर, वे बेटे को पुकारकर यह तेरा खुदा है, इसलिए तू इसका अंगीकार कर यो बोलेगा - नबी ने सिखाया है। मुअमिन 14 में, 'तब अनुग्रह संपन्न अल्लाह सृष्टिकर्ताओं में सबसे उत्तम सृष्टि कर्ता है' यों कहने से, अल्लाह के अलावा और सृष्टिकर्ता है, यह अर्थ निकलता है (पिशाच और मसीहुद्दज्जाल, दोनों को सृष्टि करने की शक्ति है। कुरआन इसके खिलाफ नहीं)। 'अल्लाह सृष्टिकर्ताओं में सबसे उत्तम है' यह कहने का मतलब यह है कि, अभाव से सृष्टि करना अल्लाह से ही हो पायेगा और अन्य स्रष्टाओं को सिर्फ शरीर की सृष्टि करने की क्षमता ही है - वह भी जो पहले से ही मौजूद हुए चीज से (जीवकोश या किसी से) केवल विकसित करने के लिए। किसी भी तरह हो, रूह देनेवाले अल्लाह ही है।

हमने पैगम्बर से पूछाः *कितने समय तक दज्जाल धरती पर ठहरेगा; नबी ने कहाःचालीस दिन। पहला दिन एक साल के, और दूसरा दिन एक महीने के, और तीसरा दिन एक हफ्ते के बराबर लम्बे होंगे। बाकी सारे दिन साधारण दिवस के समान होंगे। हमने पूछाः दूत जी, एक साल बराबर दिन में, हमें साधारणतया की तरह पाँच बार नमाज़ पडना काफी है। नबी ने कहाः नहीं, तुम ही हिसाब लगा दो (5x354 बार नमाज़)। हमने पूछाः पैगम्बर जी, वह कैसे धरती पर सभी जगह जल्दी पहुँच जाता है? नबी ने जवाब दियाः हवा से चलनेवाले काले बादल के समान वह जहाँ लोग रहते हैं, वहाँ पहूँचेगा।*

वक्त, बडी जल्दी बीत जाने की भाँति, भूमि के धूमने की गति बढती जायेगी। उसकी चरमसीमा पर, वह विपरीत दिशा पर होगा। सूरज पश्चिम मे उगनेवाले एक साल लम्बा उस दिन में ही वह निकलेगा। उसीसे तौबा (पछतावा) का दरवाज़ा बन्द भी होगा। दज्जाल के निकलने के बारे में सुन कर, सच्चाई जानने केलिए मदीना से उसके पास जानेवाला एक सत्य विश्वासी उससे बोलेगाः अल्लाह के दूत द्वारा हमें मिली पूर्व सूचना के अनुसार, अवश्य तू ही दज्जाल है। तब वह बोलेगाः मैं इस मनुष्य को मारकर जिन्दा कर दिखाऊँगा, तब क्या तुम मुझे खुदा मानोगे? तब सत्य विश्वासी बोलेगाः 'नहीं'। तब दज्जाल वह सत्य विश्वासी को, दो बराबरवाले टुकडे करके, एक भाल से अलग करके फिर उन्हे जोडकर उसकी पुन सृष्टि करेगा। तब भी सत्य विश्वासी बोलेगाः आज की तरह अन्तर्नयन से, गहराई से, मैं तुझे पहले समझ नहीं पाया। यह सुनकर दज्जाल उसे फिर मारने की कोशिश करेगा। लेकिन वह उन्हें परास्त नहीं कर पायेगा।

ओ, अल्लाह के गुलामो। तुम्हारे रब्ब अंधा नहीं। तुम मृत्यु के बाद ही उसे देख पाओगे। लेकिन मसीहुद्दज्जाल को एक ही आँख होती है। उसकी दायी आँख सूखे अंगूर की भाँति पिसी हुइ सी होगी - नबी ने सिखाया है। कुरआन का भाव को 'बस्वाइर' के रूप में इस्तमाल करनेवाले अनपढ विश्वासियों को भी, निषेधी रूपी दज्जाल को पहचान कर सकोगा। लेकिन कुरआन का भाव जानकर छुपा देनेवाले कपट विश्वासी और उनके अनुयायी दज्जाल के जाल में फैस जायेंगे - वे पाँचों बार के नमाज़ में भाव के बिना उसका नाश से शरण ढूँढने वाले हो तो भी। क्योंकि कपट विश्वासियों की इच्छाएँ ही वह प्रचलित करेगा। मुसल्मान लोगों के सामुदायिक-राष्ट्रीय-आर्थिक ज़रूरतें, सब वह अंगीकार करेगा। यौन अराजकत्व को इज्जत मिलेगी और वह सर्वव्यापी हो जायेगा। हिजास के कपट विश्वासी पुरुष और स्त्रियाँ उसका शासन चलनेवाले स्थानों पर ठहर जायेंगे। अधिकतर स्त्रियाँ ही उसके जाल में फँसेगी - यों नबी ने सिखाया है।

उसके पास स्वर्ग और नरक होंगे। उसका नरक, विश्वासियों के लिए स्वर्ग; और उसका स्वर्ग, कपट विश्वासियों के लिए स्वर्ग और विश्वासियों के लिए नरक होगा। विश्वासियों को मृत्यु के बाद ही स्वर्ग मिलेगा, और इह लोक उनको नरक तुल्य है; लेकिन कपट विश्वासियों कों इह लोक स्वर्ग, तथा मृत्यु के बाद नरक ही मिलेगा - यह भी नबी ने सिखाया है। दज्जाल के नरक में विश्वासियों को पकड डाले तो, इब्राहिम को अग्निकुण्ड शांति और

अमन बने जैसे (अम्बियाअ 69) वह अमन और शांति हो जाने केलिए *'सूरत कहफ' का पहला भाग सदा तिलावत करने के लिए* नबी ने सिखाया है। उसके द्वारा विश्वासियों को, गुफावासियों की तरह पक्का विश्वास प्राप्त कर सकेंगे। अकाल के कारण अपने बच्चों को भी खा जाने के उस समय में, *विश्वासी ने तहलील (अल्लाह की एकता का घोषणा), तकबीर (उसका महत्व की घोषणा), तसबीह (उसका शुद्धीकरण) और तहमीद (उसकी स्तुति) से ही जियेंगे* - नबी ने यों सिखाया है। सव दबाकर शासन करनेवाले अल्लाह का आश्रय लेकर जीनेवाले विश्वासियों को; गुप्त गुफावासियों को सुला देने की तरह, भूख नष्ट करके, दज्जाल का आश्रय न लेकर टिके रहने की सहन शक्ति देकर, अल्लाह उनकी मदद करेंगे।

हिजास देश, कपट विश्वासियों के शासन से मुक्त होकर, 'मह्दी इमाम' के नेतृत्व के अधीन में आयेगा। मह्दी इमाम के नेतृत्व में, विश्वासियों ने मसीहुदज्जाल के फितना के विरुद्ध आखिरी संग्राम के लिए 'सिरिया' के 'सफेद मीनारवाले मस्जिद' में एकत्रित होंगे। नमाज के लिए 'इखामत' देते वक्त (पुकारते वक्त), आस्मान से एक गर्जन सुनकर विश्वासी लोग देखते वक्त, ईसा ने गेरूए कपडे पहनकर इहराम करने के हाल में आराम से कुर्सी में जैसे, देवद्तों के पंखों पर बैठे उतरते हुए देख पायेंगे। नमाज केलिए नेतृत्व करने केलिए उनसे माँगते वक्त 'विश्वासी लोग आपस में नेता है और इसलिए किसके नेतृत्व में नमाज़ पडने के लिए पुकारा हो (इखामत दिया हो), उनके नेतृत्व में ही नमाज़ पडें' कहकर ईसा अनुयायी (मअ्मूम) होकर नमाज़ पडेंगे। नमाज़ के बाद दरवाजे खोलाने पर, मसीहुद्दज्जाल और सत्तर हज़ार जूतों ने विश्वासियों को मार डालने केलिए पहूँच जायेंगे। ईसा को देखने पर, पानी में नमक पिघलने की तरह दज्जाल पिघलने लगेगा। फिर भी ईसा और विश्वासियों ने उनका पीछा करेंगे। 'बाबुलुद्द' (इसराईल के लिडा एयर पोर्ट) में, भाल से मारकर ईसा दज्जाल का वध कर लेंगे और खून लोगों को दिखा देंगे। तदनंतर अहसाब 60 में बताये 'देशों में नाश बोनेवाले सत्तर हजार जूत नेताओं' को मह्दी के नेतृत्व में विश्वासियों ने मार डालेंगे। ऐसे, सारी दुनिया को कंपा देनेवाले मसीहुद्दज्जाल का शासन, ईसा के अधीन में होगा और वे देशों का केन्द्र - मक्का - केन्द्रीकृत करके संसार का शासन करेंगे। तब सारी दुनिया एक देश, एक दीन, एक इलाही, एक खिबला हो जायेगी। हिन्दुंओं, ईसाइयों और सभी लोगों ने ईसा का अंगीकार करेंगे। जैसे वे इस्लाम को भी अंगीकार करेंगे। ईसाइयों

ने असली विश्वास को समझ लेंगे तो 'सूली (Cross)' को तोडकर फेंक देंगे और सुअरों को मार डालेंगे; तथा हिन्दुंओं ने अपने मंदिरों से मूर्तियों को अलग कर देंगे। पेड, पत्थर सब 'मेरे पीछे एक काफिर है - कपट विश्वासी है- ऐ विश्वासी, इसको पकडकर मार डालो' - यों पुकारकर उठेंगे। तब इस्लाम को अंगीकार करनेवाले हिन्दुओ और ईसाईयों से मिले विभाग ने अहसाब 60 में बताये कपट विश्वासियों और उनके अनचर काफिरों को पकडकर मार डालेंगे। ऐसे, उस समय तक न प्रचलित अन-निसाअ - 91, तौबा - 123, अहसाब - 61 आदि सूक्तों की आज्ञाएँ प्रचलित होंगी। तब, कोई भी एक दूसरे से डरके बिना - स्त्रियों को भी अकेले ही - कहीं भी चलने की तरह धरती पर अमन और आजादी प्रचलित होगी। फिर तो धरती के सारे मानव, देवदूतों की भाँति शांति और अमन से जीवन बितायेंगे।

सुगुरुफ 60 में अल्लाह कहते हैः अगर हम चाहते तो धरती पर तुम्हारा पीछा करनेवाले देवदूतों को तुम्हारे बीच में से ही बनाते। 'देवदूतों को तुम्हारे बीच में से बनायेंगे' कहने का मतलब, मनुष्यों को देवदूतों की मिज़ाज में बदल डालेंगें - यों समझ लेना चाहिए। पिशाच का मूर्त्त रूप में आनेवाले दज्जाल के मारे जाने के साथ, संसार में पिशाच का कार्यकलाप या उसका प्रभाव नहीं रह जायेगा। उसी के साथ, मानवों को भला और बुरा चुनने की आज़ादी नष्ट हो जायेगी। परीक्षाएँ समाप्त होकर वे शांति, अमन और एकता के साथ देवदूतों की मिज़ाज में जी लेंगे। लेकिन अनुगत करने या विरोध करने की स्वतंत्रता न मिलने का, मज़बूर हालतवाला यह इस्लाम स्वीकारने से, किसी भी आत्मा को पर-लोक में कोई फायदा नहीं मिलेगा। इसके द्वारा, दुनिया भर में स्वर्गीय स्थिति सूचित करनेवाली इस्लामिक नियम, अल्लाह ने खुद ज्वलितकर दिखा रहे है । आकाश, भूमि हर एक अपनी मर्जी से या ना मर्जी से केवल अल्लाह का गुलाम बने। उसी में ही वे सब लौटा जायेगें तो फिर वे अल्लाह के दीन के अलावा और किस चीज़ को ढूँढते है - यों आलि-इमरान 83 मे जो पूछा है, वह यहाँ जोडकर पढ़ना चाहिए।

अवश्य, वेदान्तियों में से कोई भी उसकी (ईसा) मौत से पहले उसपर विश्वास किये बिना नही रहेगा। हिसाब के दिन, वह उनके खिलाफ साक्षी बनेगा - यों अन-निसाअ 159 में बताया है। ईसा दुबारा आने के बाद, मृत्यु से पहले सारे मनुष्य उनपर विश्वास करेंगे – यही है सूक्त में बताने का मतलब। वेदान्तियों में कोई भी अपनी मृत्यु से पहले ईसा पर विश्वास किये बिना नहीं रहेगा - यह भी मतलब है। सुगरूफ 61-62 सूक्तों में ऐसा है कि अवश्य, वह (ईसा) अंतिम घंटे का ज्ञान ही है। तो फिर तुम उसके बारे में सन्देह न करो। तुम मेरा अनुगत करो,

वही है सीदा-साधा मार्ग। उस विषय में पिशाच तुम्हें रोक न दे। अवश्य, वह तुम्हारा स्पष्ट शत्रु है।

आलि-इमारन 49 में कहा है कि ईसा नबी को, सिर्फ इसराइल की सन्तानों के लिए रसूल नियुक्त किया है। अन-निसाअ 159 में, 'कयामत के दिन वे उनके खिलाफ साक्षी बनेगे' यों कहने की मतलब यह है कि इसराईल की सन्तान जूतों के खिलाफ; और आलि-इमरान 51 में सिखायी बात के विरुद्ध ईसा नबी और माँ को अल्लाह के अलावा 'इलाह' (पूज्य प्रभु) के रूप में चुनकर निषेधी बने ईसाईयों के खिलाफ भी साक्षी बनेंगे। ईसा नबी का पुनरागमन 'रसूल' के रूप में नहीं; बल्कि मुसल्मान लोगों से जनता के बीच में झूठा बनाये गये मुहम्मद नबी को, पूरे दुनियावालों को करुणामय परिचित करने को और तद्वारा अम्बियाअ 107 प्रायोगिक तल पर दिखाने के लिए है। इसीलिए ही ईसा इमाम न होकर, विश्वासी का पीछा करके नमाज करते है। आज कुरआन ही वेद होने के कारण, उसके वाहक मुसल्मान लोगों के खिलाफ, उस कुरआन के आधार पर जीवन बितानेवाले विश्वासी लोग ही साक्ष्य करेंगे। सुमरः 69 देखिए।

मनुष्यों की सृष्टि करके अल्लाह की रूह उसमें आवाहन करने पर मनुष्य के सामने साष्टांग प्रणाम करने केलिए इनकार करनेवाले इबलीस को स्वर्ग से निकाल देने की बात बतायी है। स्वाद 78-81 में, दीन प्रचलित होने के दिन तक तेरे ऊपर मेरा शाप रहेगा ही यों अल्लाह बताने के प्रसंग में उसने पूछाः मेरे नाथ, उन्हें पुनःजीवित करने के दिन तक तू मुझे समय दे। अल्लाह ने कहाः 'तब तो, तुझे अवश्य ही तब तक समय दिया गया है - जब तक समय मालूम पडने का दिन हो'- बताया है। सूक्त में बताये 'दीन प्रचलित होते दिन' का मतलब सब को इकट्ठा करके विचारणा करनेवाला विधि दिवस नही; बल्कि, ईसा दुबारा आकर, पिशाच का मूर्त्तरूप मसीहुद्दज्जाल का वध करके दुनिया भर में अल्लाह को प्रिय जीवन रीति-इस्लाम-प्रचलित होनेवाला, इस संसार में ही दीन प्रचलित होनेवाले दिन है। अश-शूरा 7 में, 'इस कुरआन से देशों का केन्द्र मक्का और उसके चारों तरफ के सारे लोगों को चेतावनी देने' केलिए जो बताया है वह, मक्का को केन्द्र बनाकर ईसा ने संसार का शासन आरंभ होनेवाले उसी दिन से ही पूर्ण रूप से प्रचलित हागा । ईसा नबी और मुहम्मद नबी ने एक ही स्रोत से और एक ही मार्ग के होने के कारण, ईसा आये तो मुहम्मद नबी का मार्ग कुरआन का भाव का ही अनुगत करेंगे। सात साल तक शासन करने के बाद ईसा 40 की उम्र में मर जायेंगे और मुहम्मद नबी की कब्र के पास खाली जगह पर उन्हे दफनायेंगे।

विशेष शब्दार्थः

कुरआनः	दुहरा-दुहराकर पढ़े जानेवाले ग्रंथ।
रब्बः	मालिक, नाथ।
नफ़्ज़ः	आत्मा।
जिन्नः	असुर।
सुजूदः	साष्टांग प्रणाम।
ईसाः	जीसस (क्रैस्ट)
इबलीसः	पिशाच।
अमानतः	विश्वासंपूर्वक सौंपा गया, उत्तरदायीत्व।
नुत्व्फाः	इन्द्रिय/अण्ड/भ्रूण।
अलखाः	रक्त पिंड।
मुल्गा :	मांसपिंड।
हज्जः	मक्का की और तीर्थाटन।
कअबाः	भूमि का प्रथम देवालय।
दीनः	जीवन-रीति।
उलुल अस्मः	दूतों में श्रेष्ठ।
हारूनः	मूसा का मेमरा भाई।
सुरा अलख :	कुरआन से पहले प्रस्तुत हिस्सेवाला सुरा।
अल किताबः	वेद ग्रंथ।
कलिमातः	वचन।
शिर्कः	स्रष्टा के अधिकारों में शामिल करा देना।
फातिहाः	कुरआन का पहला अध्याय।
जाहिलिय्यतः	अंधकार जीवन रीति।
बखराः	कुरआन का दूसरा अध्याय।
अन्नासः	कुरआन का आखिरी अध्याय।
सूरतः	अध्याप।
आयतः	सूक्त/दृष्टान्त।
काफिरः	सत्य जानकर ढक देने वाले, नमकहराम।
अम्म जुस्अः	कुरआन का आखिरी (तीसवाँ) भाग।
मुत्तखीः	अल्लाह को दिल में रखेनेवाले।
कयामत दिवसः	लोकावसान दिवस, तफसीरः कुरआन की व्याख्या
मुनाफिखः	कपट विश्वासी, कुरआन का भाव समझकर छुपा देनेवाले पंडित।
जिबरीलः	दिव्य सन्देश पहुचा देने केलिए नियुक्त देवदूत, देवदूतों का नेता, देवेंन्द्र।
मुसल्मानः	अपना सर्वस्वों ने स्रष्टा को समर्पित मानव।
कुफ्फारः	अक्सर सच्चाई को छुपा देनेवाले।

मुअमिनः	विश्वासी (सुरक्षित)।
माउइलत्तुल हसनतः	तत्वों पर आधारित सूक्तों के समानवाले उपमा-उदाहरण।
मुजाइदः	तर्क करनेवाले।
रब्बानीयः	प्रतापी, अभिमानी।
जिहादः	लक्ष्य प्राति केलिए त्याग भरायत्न।
हुदैफतुल यमानीः	पैगम्बर का एक अनपढ़ शिष्य।
रसूलः	संदेशवाहक, पैगम्बर।
नबीः	दिव्य संन्देश सौंपा गया पुरुष।
फिरऔनः	मूसा नबी के काल का एक क्रूर एकाधिप।
हामानः	फिरऔन के मंत्री का नाम।
खारूनः	मूसा नबी के काल का सबसे बडा धनवान।
इलाहः	अनदेखे किसे बुलाया जा सकता है किससे मदद मांग सकता है, किसे डर सकता है, किस पर बोझ सौपा सकता है, वह।
सूरत्तुल काफिरूनः	कुरआन का एक अध्याय का नाम।
लालिमः	अत्याचारी।
जनाजे की नमाज :	मरे हुए व्यक्ति केलिए विशेष प्रार्थना।
मुनाफिखः	कपट विश्वासी, बदमारा।
मक्का मुशरिकः	मक्का के बहुदेव पूजक।
नफसमुतमइन्नः	शांति प्राप्त आत्मा।
इस्लामः	प्रकृति जीवन रीति, समर्पण, शांति।
खौमः	प्रत्येक पैगम्बर की अभिसबांधक जनता।
मुहम्मदीय शरीअतः	मुहम्मद नबी के काल से लेकर आखिरी दिन तक के इस्लामिक जीवन के आचार अनुष्ठान।
महीहुद्दज्जालः	अंतिम क्राईस्ट (क्राईस्ट का अंत करनेवाला), अधर्म मूर्ति।
खिलरः	एक देवदूत।
मसानीः	सूक्तें दुहरा के आनेवाला ग्रंथ।
फाजिरः	भाव सीखने की कोशिश किये बिना कुरान का शरीर खानेवाला।
यअजूज-मअजूजः	लोकावसान के लक्षण के रूप में निकलनेवाले और धरती पर सर्वनाश बोनेवाले लोगों के दो भेद।
दाब्बत्तुल अरलः	आखिरी दिन के लक्षण के रूप में निकलनेवाला जानवर।
मह्श्राः	परलोक में विचारणा (हिसाब) के लिए एकत्रित सभा।
ईसा मसीहः	जीसस क्राइस्ट।
मह्दी इमामः	आखिरी समय हिजास में आनेवाला नीतिमान नेता।
इह्रामः	विशेष वस्त्र धारण करके हज्ज या उम्रा करने के लिए तैयार होना।
खिब्ल्लाः	विश्वासियों का ध्यान केन्द्र (आकर्षण केन्द्र)।

आतंकवाद के खिलाफ एक आयुध

बदकिस्मती से, दुनिया भर के सारे विभाग वेद की आत्मा की बिलकुल परवाह न करके सिर्फ उसके शरीर की परवाह करनेवाले बन गये है। वे जीवन को, विभिन्न आचार अनुष्ठानों में बाँधकर अपने अपने अनुष्ठानों में गर्व करते है और दुसरों पर वे लाद देने की कोशिश करते है, जो आज संसार में होनेवाले सारे संघर्षों और आतंकवादों के कारण के रूप में देख सकते है। दुनिया भर में आज के सबसे बडा समस्या आतंगवाद है कि आणविक आयुध से भी वह उन्मूलन नहीं कर सकते। रक्तपात रोकने के लिए, विनाशकारी कामों को बन्द करने के लीए और मानव एकता बनने के लीए एक उपकरण है कुरआन का भाव। उसको आतंगवाद के खिलाफ सबसे शक्तिशालि आयुध के रूप में हम परिचय कराना चाहते है।

कैसे?

हर एक व्यक्ति को नीचे कही हुई बातें पहचानने को मदद करके

1. हर इन्सान प्रकृति धर्म - इस्लाम - में जनम होता है। उसका माता पीता है जो उसको विविध धर्म और संस्कृति ले चलता है। (अर-रूम 30 व्याख्या देखिए)।

2. धर्ती पर जनम होने या मरने का देश और वक्त, मां-बाप, लिंग आदि चुनने का अधिकार किसी मनुष्य को भी नहीं। (अन-निसाअ 1, अअराफ 173 व्याख्या देखिए)।

3.मुसल्मान लोगों के सांप्रदायिक धर्म को मिलाकर आज प्रचलीत कोई भी धर्म, अल्लाह को पसंद जीवन संहिता नहीं। आज दुनिया में मुसल्मान लोगों में से ज़्यादा प्रकृति धर्म (इस्लाम) हिन्दुओं, ईसाइयों और नास्तिकों में प्रतिबत है। (अन-नंल 42-44 व्याख्या देखिए)।

4. जो मुसल्मान है, या यहूदि, या हिन्दु, या ईसाई - चाहे जो भी हो; वह कुरआन का भाव को अनुगत करता है और दुनिया के आयु बडाने के लिए वह प्रचलित करता है; तो उसको भय हाने या उन के बारे में दुखी हाने का मौका नहीं आयेगा। (बखरा 62, माइदा 69 व्याख्या देखिए)।

5. स्वर्ग से समय समय पर मानवों का जरूरी नियम निर्देशनवाला एक ही वेद प्रस्तुत किया गया है। जो कुरआन (बार बार पारयण करने का) ही है ऐसा हिजर 90-91 में बताया है। उसका शरीर विभिन्न भाषाएँ मैं हो तो आत्मा (भाव) एक ही है। यानी कि भगवत् गीता का

शरीर संस्कृत, और तौरात का शरीर हीब्रू, और इंजील का शरीर अरमाइ, और दावीद के संकीर्तन सबूर का शरीर ग्रीक, और कुरआन का शरीर अरबी में हो तो, सबका आत्मा एक ही है। उसका परिसमाप्त रूप है, अरबी भाषा में मुहम्मद नबी (कल्कि) को प्रस्तुत किया गया कुरआन; और वह लोकावसान तक जीनेवाला सभी मानवों के लिए है। (अअराफ 157-158, अम्बिया 107 व्याख्या देखिए)।

6. पूरे बेद ग्रंथ के आधार पर बने जीवन संहिता है दीन। आलि-इमरान 19, 85 सूक्तों में बाताये प्रकृति धर्म इस्लाम ही है वह। आदम से लेकर अंतिम दिन तक उसमें कोई परिवर्तन नहीं है। लेकिन समय समय पर दीन के शारीरिक प्रायोगीकरण को शरीअत कहते हैं। समय समय पर विश्वसियों के समाज को पालन करने के जो आचार अनुष्ठान ही शरीअत में मिलते है। दीन आत्मा है और शरीअत उसका शरीर है। आज के लिए अनुयोग्य असली जीवन रीति 'मुहम्मदीय शरीअत' प्रायोगिक जीवन में जीकर दिखानेवाले विश्वासियों के संध न होने के कारण, कुरआन का भाव दाँत से काटकर जीना चाहिए। दीन के बिना शरीअत को स्थायी रखने की कोशिश करने वाले आज के मुसल्मान लोग खोये हुए है। (बखरा 186, सुमर 63 व्याख्या देखिए)।

7. जैसे सब मानवों का आत्मा एक है, वैसे ग्रन्थों का आत्मा भी एक है। आत्मा की भोजन, कपडा और दृष्टी है वह। (बखरा 2, अअराफ 26, नहल 44 व्याख्या देखिए)।

8. आज जिहाद कुरआन का भाव से वह छिपानेवाला कपटविश्वासी और उसे अंध अनुगत करनेवाला काफिरों से है। (तौबा 73, फुरखान 52 व्याख्या देखिए)।

9. किसी ने किसी व्यक्ति को मार डाला तो उसने सारे इनसानों की हत्या की। किसी ने किसी व्यक्ति को जीवन प्रदान किया तो उसने सारे इनसानों की जीवन जान किया। (माइदा 32 व्याख्या देखिए)।

10. हर एक मानव अपने अपने 'खुशकिस्मत - बदकिस्मत' (कर्म रेखा) अपनी गर्दन पर वहन करता है। कियामत के दिन, उसे एक खुला और प्रकाशपूर्ण ग्रन्थ पिरोकर देंगे, और कहेगाः तू अपना कर्मग्रंथ पढ लेना, इस दिन तेरी हिसाब करने केलिए तू ही काफी है। (इसराअः 13-15 व्याख्या देखिए)।

11. निष्पक्षवान अल्लाह ने किसी को भी स्वर्ग या नरक की ओर नहीं बिजायेगा। (आलि-इमरानः 136, 182 व्याख्या देखिए)।

❍❍❍